ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़ का दीनी व समाजी तर्जुमान

तिमाही पयामे बरकात

जुलाई ता सितम्बर 2016 जि० 1 शुमारा 2

सरपरस्ते आला

अमीने मिल्लत हज़रत **सय्यद मुहम्मद अमीन मियाँ** क़ादरी
सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे बरकातिया, मारहरा शरीफ़, एटा, (यूपी)

मजलिसे मुशावरत

शरफ़े मिल्लत हज़रत **सय्यद मुहम्मद अशरफ़** मारहरवी
चीफ़ इन्कमटैक्स कमिश्नर कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

फ़ख़्रे मिल्लत हज़रत **सय्यद मुहम्मद अफ़ज़ल** क़ादरी
ए.डी.जी (लोकायुक्त) भोपाल, (मध्य प्रदेश)

रफ़ीक़े मिल्लत हज़रत **सय्यद नजीब हैदर** नूरी
सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे बरकातिया, मारहरा शरीफ़, एटा, (यूपी)

मजलिसे इदारत

डॉ० अहमद मुजतबा सिद्दीक़ी — **सय्यद मुहम्मद अमान क़ादरी**
सय्यद मुहम्मद उस्मान क़ादरी — **सय्यद हसन हैदर क़ादरी**

मुदीर

तौहीद अहमद बरकाती

कम्पोज़र व डिज़ाइनर मुहम्मद हाशिम ख़ान बरकाती

क़ीमत फी शुमारा : 30/— ₹
सालाना : 100/— ₹

ख़त व किताबत का पताः तिमाही पयामे बरकात
Payam-e-Barkaat (Quarterly)
Al-Barkaat Islamic Research & Training Institute, Jamalpur, Aligarh (U.P) 202122
E-mail: payamebarkaat@gmail.com

पब्लिशर और प्रोपराइटर सय्यद मुहम्मद अमान क़ादरी ने Linkers Printers 1258 कलाँ महल, दरियागंज नई दिल्ली 110002 से छपवाकर दफ़्तर तिमाही पयामे बरकात (ABIRTI) अलबरकात अलीगढ़ से शाए किया। एडीटर तौहीद अहमद बरकाती

नोटः रिसाले से मुताल्लिक़ कोई भी मुक़द्दमा सिर्फ़ अलीगढ़ की अदालत में क़ाबिले समाअ़त होगा।

मज़ामीन	मज़मून निगार	पेज न0
पैग़ाम	हुज़ूर साहिबुल बरकात अलैहिर्रह़मा	3
सिपास नामा	अल्लामा अ़ब्दुल ह़फ़ीज़ साह़ब	4
आह! ह़ज़रत शफ़ीक़े मिल्लत अलैहिर्रह़मा	एडीटर	7
सूरह बक़रा की तफ़सीर	मौ0 नोमान अह़मद अज़हरी	10
मरीज़ की अ़यादत	मौ0 अ़ब्दुल मुत्तलिब मिस्बाही	12
ज़रूरियाते दीन की वज़ाहत	मौ0 साजिद अ़ली मिस्बाही	15
ह़ज, उमरा और हरमैन शरीफ़ैन...	आलिमा सालेहा मुजद्दिया	18
कुर्बानी के फ़ज़ाइल व मसाइल	मौ0 कमाल अह़मद अ़लीमी	21
नफ़्ली सदक़ात के फ़ज़ाइल व बरकात	मौ0 मुह़म्मद अकबर अ़ली बरकाती	23
रास्तों के हुक़ूक़	मुफ़्ती मुह़म्मद असलम रज़ा	25
तर्बियते औलाद के इस्लामी उसूल	मौ0 सलमान रज़ा बरकाती	28
इस्लाम और वतन की मुह़ब्बत	मौ0 रज़ाउलह़क़ बरकाती	33
ख़ानक़ाहे बरकातियाः एक तआ़रूफ़	डॉ0 अह़मद मुजतबा सिद्दीक़ी	35
ह़ज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु	सय्यद मुह़म्मद अमान क़ादरी	39
बरकाते ख़ानदाने बरकात	ह़ज़रत सय्यद नजीब ह़ैदर नूरी	41
ह़ज़रत शाह मुह़म्मद सादिक़ अलैहिर्रह़मा	सय्यद नबील अशरफ़	42
मन्क़बत दर शाने मारहरा	ह़ज़रत सय्यद मुह़म्मद अशरफ़ मारहरवी	44
अतीक अह़मद बरकाती से एक मुलाक़ात	इदारा	45
मन्क़बत दर शाने ह़ज़रत शफ़ीक़े मिल्लत	मौ0 मुह़म्मद अकबर अ़ली बरकाती	47
डायबिटीज़ (शुगर)	डॉ0 मुह़म्मद अफ़ज़ाल बरकाती	48
गोट फ़ार्मिंग	मुह़म्मद एजाजुर्रह़मान बरकाती	51
सबक़ आमोज़ कहानियाँ	मौ0 अफ़रोज़ रज़ा क़ादरी	52
मुर्शिदाने किराम के तब्लीग़ी दौरे	डॉ0 मुशाहिद रज़वी/ क़ारी कौसर बरकाती	54
बरकाती ख़बरें	इदारा	58
मुश्किल अलफ़ाज़ की तशरीह़	इदारा	64

पैग़ाम

हुज़ूर साहिबुल बरकात सय्यद शाह बरकतुल्लाह इश्क़ी मारहरवी अलैहिर्रहमा

हुज़ूर साहिबुल बरकात सय्यद शाह बरकतुल्लाह इश्क़ी मारहरवी अलैहिर्रहमा (विलादतः 1070 हि०, वफ़ातः 1142 हि०) का शुमार हिन्दुस्तान के क़ादरी सिलसिले के बड़े सूफ़ियों में होता है। आप एक अज़ीम सूफ़ी और साहबे तरीक़त बुज़ुर्ग होने के साथ-साथ अपने ज़माने के ज़बरदस्त आ़लिम व फ़ाज़िल और अदीब भी थे। आपको अ़रबी, फ़ारसी, और हिन्दी नज़्म व नसर में मुकम्मल महारत थी और तीनों ज़बानों में उम्दा शायरी करते थे। आपने उलूमे ज़ाहिर व बातिन से मुताल्लिक़ अपने तर्जुबात व मुशाहदात पर कई किताबें लिखीं जो अवाम व ख़वास में बहुत मक़बूल हुईं। 1711 ई० में आपने तसव्वुफ़ के मौज़ूअ़ पर निहायत मुख़्तसर और जामेअ़ किताब ''चहार अनवा'' लिखी। किताब के आख़िर में उन्होंने अपने शहज़ादगान हज़रत सय्यद शाह आले मुहम्मद और सय्यद शाह नजातुल्लाह अलैहिर्रहमा के लिए कुछ नसीहतें लिखी हैं, जिसके कुछ इक़्तिबासात क़ारईन की ख़िदमत में पेश हैं। (इदारा)

''ख़ुदा के बन्दे आले मुहम्मद और नजातुल्लाह (अल्लाह इन्हें सालिम व दाईम रखे) के लिए चन्द नसीहतें तहरीर करता हूँ।

''इनको चाहिए कि इस रिसाले (चहार अनवा) को हमेशा अपने साथ रखें। ख़ुदा की याद में मशग़ूल रहें और सुलूक व फ़िक़्ह की किताबों का मुतालआ़ करते रहें। बुज़ुर्गों के मक़ाम पर क़ायम रहें और दुनियादारों के घरों की तरफ़ रूख़ भी न करें। ज़ियारते क़ुबूर के लिए ज़रूर ज़रूर जायें। साहिबे दिल उलमा और वो उलमा जिनका ज़ाहिर दीन और दयानतदारी से आरास्ता हो उनकी ख़िदमत में ज़रूर-ज़रूर हाज़िर हों। ऐसे उलमा और क़ुबूर की ज़ियारत को दोनों जहान की सआ़दत समझें। अपने किसी काम या मतलब से किसी हाकिम या किसी भी शख़्स के पास न जाना, इसलिए कि कामों का बनाने वाला रब तबारक व तआ़ला है और वही काफ़ी है। मख़लूक़ के काम के लिये हर शख़्स की मन्नत, समाजत और खुशामद करें। इसलिए कि यह सवाब है।...

हर हाल में अल्लाह को याद करते रहो और हर लम्हा فَفِرُّوْ اِلَى اللّٰه، لاَ تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ، التوکل علی اللّٰہ दिल, जान और जबान पर जारी रखो। शरीअ़ते मुतह्हरा पर सख़्ती से अ़मल करो! दीन के किसी भी मामले में चाहे कितनी भी परेशानियाँ और मुसीबतें उठानी पड़ें बर्दाश्त करो।

अल्लाह की राह में जिहाद करो। जिहादे अकबर अपने नफ़्स से जिहाद करना है यानी ख़ुद को कभी आराम न दे ताकि आराम पाऐ। अपने नफ़्स से हमेशा लड़ते रहो यानी नफ़्से अम्मारा जो कुछ कहे उसकी मुख़ालफ़त करो।... दुनियादारों पर हरगिज़ हरगिज़ भरोसा न करो और न उनके मुहताज बनकर रहो। (चहार अनवाः पे० 73,74) ★★★

सिपास नामा

हुज़ूर अमीने मिल्लत प्रोफ़ेसर सय्यद शाह मुहम्मद अमीन मियाँ क़ादरी बरकाती दामत बरकातहुम को इस साल 11 मार्च 2016 ई० को उर्से अ़ज़ीज़ी के मुबारक मौक़े पर उनकी ख़िदमात के एतराफ़ में तन्ज़ीम ''अबनाए अशफ़िया'' की तरफ़ से ह़ाफ़िज़े मिल्लत अवार्ड से सरफ़राज़ किया गया। सिपास नामा मौलाना **मुबारक ह़ुसैन मियाँ मिस्बाही** चीफ़ एडीटर माहनामा **अशफ़िया मुबारकपुर** ने पढ़कर सुनाया जबकि अ़ज़ीज़े मिल्लत अल्लामा अ़ब्दुल ह़फ़ीज़ साह़ब क़िब्ला ने आपकी बारगाह में रौज़ा-ए-ह़ाफ़िज़े मिल्लत की शबीह़ ''ह़ाफ़िज़े मिल्लत अवार्ड'' पेश की। (इदारा)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ○

हमारे लिये यह इन्तिहाई मुसर्रत अंगेज़ ज़र्रीं (सुनहरी) घड़ी है कि हम तन्ज़ीम अबनाए अशरफ़िया मुबारकपुर की जानिब से शहज़ादा-ए-अह़सनुल उलमा ह़ज़रत अमीने मिल्लत दामत बरकातहुमुल क़ुदसिया की आ़ली जाह में ''ह़ाफ़िज़े मिल्लत अवार्ड'' पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहे हैं। जलालतुल इल्म ह़ाफ़िज़े मिल्लत ह़ज़रत अल्लामा शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस मुरादाबादी बानी जामिया अशरफ़िया अलैहिर्रह़मा के 41 वें उर्स की आख़िरी नश्शित (बैठक) है। ख़ुदा करे कि ख़ानक़ाहे आ़लिया क़ादरिया बरकातिया से जामिया अशरफ़िया मुबारकपुर का यह रिश्ता-ए-ग़ुलामी इसी तरह़ जारी रहे। (आमीन)

कैसे आक़ाओं का बन्दा हूँ रज़ा
बोल बाले मेरी सरकारों के

आप मशाइख़े अहले सुन्नत की मरकज़े अक़ीदत ख़ानक़ाहे बरकातिया के चश्मो चिराग़ हैं। मुर्शिदे आ़ज़म-ए-हिन्द अह़सनुल उलमा ह़ज़रत सय्यद शाह मुस्तफ़ा ह़ैदर ह़सन मियाँ क़ादरी बरकाती सज्जादा नशीं ख़ानक़ाहे बरकातिया अलैहिर्रह़मा के लख़्ते जिगर (साह़बज़ादे) और जानशीन हैं। दीन व रूह़ानियत में अपने असलाफ़ के सच्चे वारिस हैं। इल्म व अदब के पैकरे जमील हैं। आपकी शोहरत व मक़बूलियत में जहाँ अपने क़दीम ख़ानक़ाही फ़ुयूज़ो बरकात हैं, वहीं आपके ज़ाती औसाफ़ व मह़ासिन के इक्तेसाबात भी हैं।

आपकी विलादत 1953 ई० में मारहरा शरीफ़ में हुई, वालिदे गिरामी ने बड़े एहतिमाम से तस्मिया ख़्वानी का प्रोग्राम किया। ख़ानक़ाही मदरसा क़ासिमुल बरकात में आपने तालीम का आग़ाज़ फ़रमाया, असातिज़ा में ताया जान ह़ज़रत सय्यदुल उलमा, ह़ज़रत अह़सनुल उलमा, वालिदा माजिदा, फूफियाँ और ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुर्रह़मान (उर्फ़ कल्लू) वग़ैरह हैं। तालीमी मराह़िल से गुज़र कर अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी, अलीगढ़ से M.A किया और 1981 ई० में डॉक्टरेट की डिग्री ह़ासिल की। M.A का रिज़ल्ट निकलने से पहले ही आपका तक़र्रुर (मुलाज़मत) लैक्चर्र की

हैसियत से अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी में हो गया था। 1983 ई० में सेन्ट जॉन्स कॉलेज आगरा में ब हैसियत उस्ताज़ शोबा-ए-उर्दू तशरीफ़ ले गए, क़रीब आठ साल आपने ख़िदमत अन्जाम दी, उसके बाद आप अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी में रीडर और प्रोफ़ेसर हुए दो एक बरस पहले सदर शोबा-ए-उर्दू होने की हैसियत से चन्द माह ख़िदमत भी अन्जाम दी मगर मसरूफ़ियात की वजह से मुस्तअ़फ़ी हो गए और अब प्रोफ़ेसर की हैसियत से उसी में ख़िदमात अन्जाम दे रहे हैं।

ख़ानक़ाहे बरकातिया के अज़ीम शेख़े तरीक़त ताजुल उलमा हज़रत सय्यद औलाद रसूल मुहम्मद मियाँ क़ादरी बरकाती अलैहिर्रहमा ने आपको मुरीद फ़रमाकर ख़िलाफ़त व इजाज़त की दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाया। हज़रत अह़सनुल उलमा अलैहिर्रहमा और हज़रत मुफ़्ती-ए-आ़ज़मे हिन्द बरैलवी अलैहिर्रहमा ने भी बड़ी मुहब्बत से आपको ख़िलाफ़तें अ़ता फ़रमाईं। आप ख़ानक़ाही फ़िक्र व मिज़ाज के मेहर-ए-ताबाँ (रौशन सूरज) हैं, मुख़्तलिफ़ ममालिक में आपके मुरीदीन व मुतवस्सेलीन कसीर तादाद में हैं और यह रूहानी सिलसिला मुसलसल आगे बढ़ रहा है। आपके ख़ुलफ़ा और ख़ुसूसी फ़ैज़ याफ़्तगान (पाने वालों) की तादाद भी अहम और क़ाबिले ज़िक्र है।

आपकी औलाद व अमजाद तीन हैं, दो फ़र्ज़न्दे अर्जमन्द हैं और एक दुख़्तरे नेक अखतर, ब फ़ज़लिही तआ़ला सब दीनी, रूहानी और असरी तालीम याफ़्ता हैं और मज़ीद फ़ज़्ल व कमाल के हुसूल में कोशाँ (कोशिश कर रहे) हैं। बड़े लख़्ते जिगर हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद अमान मियाँ क़ादरी बरकाती दामा ज़िल्लहुल आ़ली आपके वली-ए-अहद और नामवर फ़रज़न्दे अशरफ़िया हैं।

जामिया अशरफ़िया मुबारकपुर को अपने वजूद के साथ ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा की सरपरस्ती ह़ासिल है। हज़रत अमीने मिल्लत मजलिसे शूरा जामिया अशरफ़िया के सरपरस्त और रूक्ने आला हैं। आपकी क़यादत और सरपरस्ती में ''मजलिसे बरकात'' क़ायम हुई, इससे एदादिया से दौरा-ए-ह़दीस तक कसीर किताबें शाए हो चुकी हैं। माह नामा अशरफ़िया मुबारकपुर ने हज़रत सय्यदुल उलमा और हज़रत अह़सनुल उलमा के ताल्लुक़ से ज़ख़ीम ''सय्यदैन नम्बर'' शाए किया।

हज़रत अमीने मिल्लत हर दिल अज़ीज़ ख़तीब व वाइज़ हैं। आप युनिवर्सिटीज़ में तौसीई ख़ुतबात के लिये बड़े एह़तराम के साथ मदउ किये (बुलाए) जाते हैं। आ़म तौर पर सेमिनारों और कॉन्फ्रेंसों की सदारत फ़रमाते हैं, हिन्द व बैरूने हिन्द के सैकड़ों मदारिस की सरपरस्ती फ़रमाते हैं, मारहरा शरीफ़ में आरास (उर्सों) के मौक़ों पर आपका सूफ़ियाना क़ादरी और बरकाती रंग दीदनी (देखने लायक़) होता है। आप एक अ़ज़ीम मुह़क़्क़िक़, बुलन्द पाया मुसन्निफ़ व मुअ़ल्लिफ़ हैं, तर्जुमा निगारी और शेर व अदब में भी अनोखा मक़ाम रखते हैं। आपने मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर हैरत अंगेज़ क़लमी ख़िदमात अन्जाम दी हैं। एक दर्जन से ज़्यादा किताबें शाए हो चुकी हैं। मशहूर रसाइल व जराइद में आपके मक़ालात व मज़ामीन की इशाअ़त बरसों से मुसलसल हो रही है। माशा'अल्लाह इस वक़्त भी अपने इल्मी और रूह़ानी समुद्र से हीरे

और जवाहर लुटा रहे हैं।

आपने अलीगढ़ की सरज़मीन पर ''अलबरकात एजुकेशनल इंस्टीट्यूट'' के नाम से एक वसीअ़ ख़ित्ता-ए-ज़मीन पर तालीमी इदारा क़ायम फ़रमाया, इस इदारे में जदीद व क़दीम का हसीन इम्तिज़ाज (मिलावट) है और हज़ारों तलबा अ़सरी मैदानों में कामयाबियों की मन्ज़िलों से गुज़र चुके हैं और यह सिलसिला आज भी ब आँ (उसी) फ़ज़्ल व कमाल आगे बढ़ रहा है। मारहरा शरीफ़ में दीनी, रूहानी, तालीम व तरबियत का सिलसिला तो ख़ुद बरकाती मशाइख़ की आमद के बाद से जारी है। इस वक़्त मारहरा में ''जामिया अहसनुल बरकात'' और अलीगढ़ में ''अलबरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट'' चल रहा है। इन दोनों इदारों का नज़्म व नस्क़ (इन्तज़ाम) भी आप ही फ़रमाते हैं।

मक़ामे मसर्रत है कि जार्ज टाऊन यूनिवर्सिटी अमेरिका के रायल इस्लामिक स्ट्राटेजिक स्टडीज़ ने पूरी दुनिया में सबसे बा असर 500 हज़रात में आपको रूहानी ख़िदमत और मक़बूलियत में 44 वे मक़ाम पर शुमार किया है।

अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ़ है कि वह अपने हबीब ﷺ के तुफ़ैल आपका साया आ़लमे इस्लाम पर दराज़ फ़रमाए और आपकी सरपरस्ती में ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़ के रूहानी बादल जामिया अशरफ़िया मुबारकपुर के किश्ते ज़ार पर इसी तरह बरसते रहें। ★★★

आमीन बिजाही सय्यिदिल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व अ़ला आलिही व बारिक वसल्लिम

ब-मौक़ा उर्से हाफ़िज़े मिल्लत अलैहिर्रहमा
यकुम जुमादल ऊला 1437 हि०
11 मार्च 2016 ई० बरोज़ जुमा मुबारका

अजः अ़ब्दुल हफ़ीज़ उफ़िया अन्हु
सदर तन्ज़ीम अबनाए अशरफ़िया
व सरबराहे आला जामिया अशरफ़िया, मुबारकपुर
आज़मगढ़। (यूपी)

गुज़ारिश

हज़रात! ''पयामे बरकात'' सिर्फ एक रिसाला ही नहीं बल्कि ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा मुक़द्दसा की एक दीनी व समाजी तहरीक है। **''पयामे बरकात टीम''** ने रात दिन मेहनत करके यह रिसाला तैयार किया है ताकि हर घर में दीन का चिराग़ रौशन हो सके और हम सब दीन की बातों को जानें और अपने घरों को इस्लामी माहौल में ढाल सकें। यह रिसाला कोई दुनियावी फ़ायदे की नीयत से नहीं बल्कि दीन की ख़िदमत की नीयत से शुरू किया गया है। ताकि बराबर मुस्लिम अवाम की तर्बियत होती रहे। आप से गुज़ारिश है कि आप भी हमारी टीम का हिस्सा बनें, रिसाले को ख़ुद भी पढें और अपने घर वालों को भी इसके पढ़ने का आदी बनायें।

''पयामे बरकात'' को पढ़कर अपने सुझाव हमें ज़रूर भेजें। अगर कोई ख़ामी नज़र आए तो ज़रूर इत्तिला करें। अपने दोस्तों, रिश्तेदारों और दूसरे मुसलमानों को भी इसका मेम्बर बनवायें।

इस तहरीक की कामयाबी के लिये हमें हमेशा आप की दुआओं की ज़रूरत है।

payamebarkaat@gmail.com
''पयामे बरकात'' का Mob. और WhatsApp No: 07607207280

तालिबे दुआ़
सय्यद मुहम्मद अमान क़ादरी

आह! हज़रत शफ़ीके़ मिल्लत अलैहिर्रह़मा

27 रजब 1437 हि० बरोज़ जुमेरात 3:30 बजे रात में बिरादरम नजमुल ह़सन बरकाती ने यह ग़मनाक ख़बर सुनाई कि हु़ज़ूर शफ़ीके़ मिल्लत का मारहरा शरीफ़ में विसाल हो गया। पहले मुझे उनकी बात पर बिल्कुल यक़ीन नहीं आया, मगर जब उनके चेहरे पर नज़र डाली तो उनका उतरा हुआ चेहरा देखते ही दिल धड़कने लगा, मैंने काँपते होठों से ब-मुश्किल "اِنَّالِلّٰهِ وَاِنَّآاِلَیْهِ رٰاجِعُوْنَ" पढ़ा और आ़लमे तसव्वुर में उस मुक़द्दस घर के दर पर पहुँच गया जिसके मकीनों के बारे में इमामे इश्क़ व मुह़ब्बत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान क़ादरी बरकाती अलैहिर्रह़मा ने फ़रमाया थाः

कैसे आक़ाओं का बन्दा हूँ रज़ा
बोल बाले मेरी सरकारों के

मेरे ज़ेहन व ख़्याल में हु़ज़ूर शफ़ीके़ मिल्लत अलैहिर्रह़मा की वह शख़्सियत उभरने लगी जिसका चन्द रोज़ पहले मुशाहदा किया था, दरमियाना क़द, गोरा बदन, चाँद सा मुखड़ा, सफ़ेद रेशमी दाढ़ी, सफ़ेद कुर्ता पजामा और टोपी पहने हुए मस्जिदे बरकाती में इमाम के दाहिनी जानिब कुर्सी पर तशरीफ़ फ़रमाँ हैं और हाथ में तस्बीह़ लेकर सर झुकाए हुए औराद व वज़ाइफ़ में मशगूल हैं। मैं नज़रें जमाए हज़रत को देख रहा था, दिल मुसाफ़ा करने को चाह रहा था, मगर इस ख़्याल से रूका रहा कि कहीं हज़रत के वज़ीफ़े में ख़लल न पड़ जाए। ख़ैर थोड़ी देर बाद जमाअ़त का वक़्त हुआ, नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद हज़रत से मुसाफह़ा किया, दस्त बोसी की और दुआ़ऐं लीं।

हज़रत शफ़ीके़ मिल्लत अलैहिर्रह़मा से जब आख़िरी बार मेरी मुलाक़ात हुई थी, तब वह काफ़ी सेह़त मन्द लग रहे थे। चेहरे पर किसी बीमारी या तकलीफ़ का असर बिल्कुल नज़र नहीं आ रहा था। इसी लिए हज़रत के विसाल की ख़बर सुनकर फ़ौरन यक़ीन नहीं हुआ कि आप इस जहाने फ़ानी से कूच कर गए।

सन् 2013 में हज़रत अमाने अहले सुन्नत सय्यद मुह़म्मद अमान मियाँ साह़ब क़िब्ला के साथ पहली बार मारहरा मुक़द्दसा ह़ाज़िरी का शरफ़ ह़ासिल हुआ था, उसी वक़्त हु़ज़ूर शफ़ीके मिल्लत अलैहिर्रह़मा से मेरी पहली मुलाक़ात हुई थी, फिर कई बार मारहरा शरीफ़ जाना हुआ और तक़रीबन हर बार उनसे मुलाक़ात हुई। मैं ज़ाती तौर पर उनसे बहुत मुतासिर था। आप ज़ाहिर व बातिन में अपने असलाफ़ का नमूना थे। इबादत व रियाज़त, तवाज़ो व इन्किसारी, सख़ावत व फय्याज़ी, अपनों से मुह़ब्बत, ग़ैरों पर शफ़क़त ऐसी न जाने कितनी ख़ूबियाँ आपकी ज़ात में मौजूद थीं।

मुख़्तसर ह़ालाते ज़िन्दगीः

विलादतः शफ़ीके़ मिल्लत हज़रत सय्यद शाह मुर्तज़ा हु़सैन ज़ैदी अलैहिर्रह़मा की विलादत 17 रबीउल अव्वल 1352 हि० मुताबिक़ 10 जुलाई 1933 ई० को पीर के दिन हुई। आपके नाना जान साह़िबे उर्से क़ासमी हज़रत सय्यद शाह इस्माईल ह़सन अलैहिर्रह़मा ने अपने विसाल से कुछ दिनों पहले आपकी पैदाइश की बशारत दे दी थी और आपका नाम "हुसैन मियाँ" रख दिया था। चुनाँचे जब आप पैदा हुए तो आपके वालिदे माजिद हज़रत सय्यद शाह आले अ़बा ज़ैदी क़ादरी अलैहिर्रह़मा ने बे-पनाह ख़ुशी का इज़्हार फ़रमाया और उनका वही नाम रखा जो उनके नाना ने रखा था। आप इतने ख़ूबसूरत थे कि देखने वाला पहली नज़र में पहचान लेता कि आप आले रसूल हैं।

तालीम व तर्बियतः आपने बचपन का ज़माना वालिदे मुह़तरम और ख़ानदान के दूसरे बुज़ुर्गों बिल-खुसूस अपने मामू जान हु़ज़ूर ताजुल उलमा

अलैहिर्रहमा की सोहबत और तर्बियत में गुज़ारा। हुज़ूर ताजुल उलमा अलैहिर्रहमा आपसे बड़ी मुहब्बत फ़रमाते थे, यही वजह है कि उन्होंने बचपन ही में आपको मुरीद कर लिया था। आपने ख़ानदानी रिवायत के मुताबिक़ सबसे पहले दीनी तालीम हासिल की। इब्तिदाई तालीम हासिल करने के बाद कुरआने मजीद हिफ़्ज़ करना शुरू किया, अभी 10 पारे और 1 रूकूअ ही हिफ़्ज़ हुए थे कि वालिदा माजिदा का इन्तक़ाल हो गया, उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ 10 या 11 साल थी, आप कम उम्री की वजह से वालिदा के इन्तक़ाल का सदमा बर्दाश्त न कर सके और बीमार हो गए। आप वालिदा साहिबा की सूरत भुला नहीं पा रहे थे लिहाज़ा आपके मुर्शिद हुज़ूर ताजुल उलमा अलैहिर्रहमा ने एक ख़ानदानी अमल पढ़कर उनके ज़ेहन से वालिदा की याद ख़त्म कर दी। जैसे ही वालिदा की याद ज़ेहन से ग़ायब हुई, धीरे-धीरे सेहत बहाल होने लगी। जब आप मुकम्मल तौर पर शिफ़ायाब हो गये तो पीर व मुर्शिद ने दोबारा अमल पढ़कर माँ की सूरत याद दिलाई। इस दर्मियान तीन साल का अरसा गुज़र चुका था इसलिये तालीम का सिलसिला रुक गया और आप मुकम्मल हाफ़िज़े कुरआन न हो सके।दुनियावी तालीम हाई स्कूल तक थी।

बैअ़त व ख़िलाफ़तः आपको बैअ़त अपने मामू जान हुज़ूर ताजुल उलमा सय्यद शाह औलादे रसूल मुहम्मद मियाँ अलैहिर्रहमा से और ख़िलाफ़त वालिदे मुहतरम हज़रत सय्यद शाह आले अबा ज़ैदी क़ादरी अलैहिर्रहमा से थी।

इबादत व रियाज़तः आप बड़े आ़बिद व ज़ाहिद और परहेज़गार इन्सान थे, नमाज़ों के बचपन से ही पाबन्द थे और उम्र के आख़िरी हिस्से तक यूँही पाबन्दी फ़रमाई। नमाज़ की पाबन्दी और उससे मुहब्बत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि 84 साल की उम्र में बीमारी और कमज़ोरी के बा-वजूद मस्जिद में बा-जमाअ़त नमाज़ अदा फ़रमाते थे, बल्कि अक्सर अज़ान से 20, 25 मिनट पहले ही मस्जिद में तशरीफ़ लाते थे।

अख़्लाक़ व किरदारः हज़रत शफ़ीक़े मिल्लत अलैहिर्रहमा किरदार के बड़े धनी थे। जो भी उनसे मुलाक़ात करता मुतास्सिर हुए बग़ैर नहीं रहता, ज़बान में इतनी मिठास और नर्मी थी कि सुनने वाले का दिल चाहता कि हज़रत बोलते रहें और हम सुनते रहें, लेकिन आप बहुत कम बातें करते थे। लोगों से मुलाक़ात करना और सलाम में पहल करना आपकी आ़दत में शामिल था।

घरेलू ज़िम्मेदारियाँः ख़ानक़ाहे बरकातिया और ख़ानदान की तमाम जायदादों, ज़मीनों और बाग़ात की देख-रेख और उनका हिसाब व किताब आपके ज़िम्मे था और इस ज़िम्मेदारी को बख़ूबी अन्जाम देते थे, उर्स के इन्तज़मात भी आप फ़रमाते थे। ख़ानकाह में जब कोई नहीं होता तो सारी ज़िम्मेदारियाँ आप ही के काँधों पर होतीं, ख़ानदान की तमाम नई व पुरानी रिश्तेदारियों का आपको इल्म था, ख़ानदान का पूरा नसब-नामा ज़बानी याद था, अपने बुज़ुर्गों के बहुत से वाक़ियात जो किताबों में नहीं लिखे हैं वो आपको याद थे जिन्हें ख़ाली वक़्त में लोगों को सुनाया करते थे। आपको कबूतर पालने का बहुत शौक़ था, कई नस्ल के कबूतर आपने पाल रखे थे और उन्हें ख़ुद ही दाना-पानी देते थे। आख़िरी उम्र में कबूतरों की देखभाल और दाना-पानी डालने के लिये आपने एक आदमी को मुक़र्रर फ़रमा दिया था ताकि कबूतर भूखे न सोयें। कबूतर पालने का शौक़ आपको अपने नाना जान हज़रत सैय्यद शाह इस्माईल हसन अलैहिर्रहमा से विरासत में मिला था।

ख़िदमते ख़ल्क़ः अल्लाह के बन्दों की मदद और उनकी हाजत रवाई आपको बहुत पसन्द थी। जितने नज़राने आपको मिलते सब तलबा, ख़ुद्दाम और फ़ुक़रा में बाँट दिया करते थे। मुहम्मद अदनान फ़ारूक़ी (मुतअ़ल्लिम जामिया अहसनुल बरकात) ने मुझे बताया कि ख़ानक़ाह शरीफ़ के मदरसे से अगर कोई तालिबे इल्म कुरआने मजीद हिफ़्ज़ कर लेता तो आप उसे घर बुलाते और कपड़ा, पैसा वग़ैरह देकर हौसला अफ़ज़ाई करते थे। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान अलैहिर्रहमा से आपको बड़ी अक़ीदत थी, उनका लिखा हुआ ''क़सीदा मेअ़राजिया'' पूरा याद था और उसे तलबा व असातिज़ा

के सामने पढ़ा करते थे। आपको ख़ानदानी तावीज़ात और वज़ीफ़ों की इजाज़त हासिल थी, तावीज़ लिखने का तरीक़ा खुद मामू जान हुज़ूर ताजुल उलमा अलैहिर्रहमा ने सिखाया था। आपके हाथों लिखी हुई तावीज़ात बड़ी मुजर्रब होती थीं, उसे ह़ासिल करने के लिए दूर-दूर से लोग आते थे। आप सिर्फ़ इतवार के दिन तावीज़ देते थे, इसलिए उस दिन ख़ानक़ाह शरीफ़ में सुबह ही से लोगों की भीड़ लगी रहती थी। आस पास के मुहल्लों में अगर किसी के यहाँ मय्यत हो जाती तो आप वहाँ तशरीफ़ ले जाते और अपने हाथों से मय्यत को गुस्ल देते थे। आपने ह़ादसात में मरने वाले कुछ ऐसे लोगों को गुस्ल दिया है जिनके घर वाले यहाँ तक कि माँ-बाप भी लाश के पास जाने से घबराते थे।

विसालः कुछ दिनों से आपकी तबीअ़त ख़राब चल रही थी, मगर इतनी भी नहीं थी जिससे अन्दाज़ा होता कि आपका विसाल हो जायेगा। विसाल से 16 घण्टे पहले आपने हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत दामा ज़िल्लुहू को बुलाकर फ़रमायाः **"तुम गवाह रहना मेरा दीन व मज़हब वही है जो मेरे ख़ाले मुह़तरम (मामू) हुज़ूर ताजुल उलमा सय्यद मुह़म्मद मियाँ अलैहिर्रह़मा का था, मैं उसी मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअ़त का पाबन्द हूँ जिस पर हमारे अकाबिर थे और जिसे आज कल "मसलके आला हज़रत" कहा जाता है।"** यह सुनते ही हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत ने समझ लिया था कि आप जल्द ही इस दुनिया से तशरीफ़ ले जाने वाले हैं।

27 रजब 1437 हि० की रात सब लोग इबादत में मसरूफ़ थे और इरादा था कि सह़री खाकर रोज़ा रखेंगे। अचानक 1:30 मिनट पर हज़रत शफ़ीक़े मिल्लत ने हज़रत रफ़ीक़े मिल्लत को बुलाया और फ़रमाया कि "मुझे कुछ तकलीफ़ महसूस हो रही है" उन्होंने फ़ौरन फ़ैमली डॉक्टर जनाब निहाल अह़मद साह़ब को बुलाया, उन्होंने मुआ़ईना करके बताया कि तबीअत बिल्कुल ठीक है, घबराने की कोई बात नहीं है। जिसके बाद सब मुतमईन हो गए, मगर रात के 2:25 बजे पर फ़रमायाः मुझे बैठाओ! आपको बैठाया गया, अपने हाथों से दवाई खाई, पानी पिया। पूछा गया कोई तकलीफ़ तो नहीं है? फ़रमाया नहीं। लेकिन आधे मिनट के अन्दर एक हिचकी आई और रूह़ निकल कर जन्नत की तरफ़ परवाज़ कर गई। "اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ" रातों रात इन्तक़ाल की ख़बर हर जगह फैल गई। जहाँ-जहाँ आपके इन्तेक़ाल की ख़बर पहुँची सब ग़म में डूब गए। सुबह़ ही ज़ियारत करने वालों की भीड़ लग गई, दोपहर तक घर के सभी लोग आ गए। 27 रजब को नमाज़े अ़सर के बाद हुज़ूर अमीने मिल्लत दामा ज़िल्लुहू ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। फिर आपका जनाज़ा दरगाह़ शरीफ़ में लाया गया और वसीयत के मुताबिक़ बड़ी बहन की कब्र के पास दफन कर दिया गया।

अल्लाह पाक उनकी क़ब्र पर रह़मतों की बारिश बरसाए। (आमीन)

हुज़ूर शफ़ीक़े मिल्लत अलैहिर्रहमा को जब ख़ानक़ाह शरीफ़ से रिसाला **"पयामे बरकात"** जारी होने का इल्म हुआ तो उन्होंने बेपनाह ख़ुशी का इज़्हार किया और फ़रमाया : "हमारे बुज़ुर्गों की रिवायत फिर ज़िन्दा हो रही है।"

हुज़ूर शफ़ीक़े मिल्लत अलैहिर्रहमा के जनाज़े की तफ़सील ख़बरों के कॉलम में मुलाहज़ा फ़रमायें।

कुछ इस शुमारे के बारे मेंः क़ारेईने किराम के लिये अच्छी ख़बर है कि अलह़म्दुल्लिाह पयामे बरकात का मुक़म्मल रजिश्ट्रेशन हो गया है, इंशाअल्लाह अब पाबन्दी के साथ वक़्त पर रिसाला शाए हुआ करेगा। इस शुमारे में किसी कॉलम का इज़ाफ़ा नहीं किया गया है। अलबत्ता ख़ुतूत के कॉलम की जगह "करियर गाइडेंस" के नाम से एक नया कॉलम शुरू किया गया है। इस शुमारे में ईदुल अज़्ह़ा की मुनासिबत से दो मज़ामीन शामिल किए गए हैं। क़ारेईने किराम से गुज़ारिश है कि मैगज़ीन पढ़ने के बाद हमें अपने तास्सुरात ज़रूर भेजें।

★★★

मौ० नोमान अह़मद अज़हरी

सूरह बक़रा की तफ़सीर
(पहली क़िस्त)

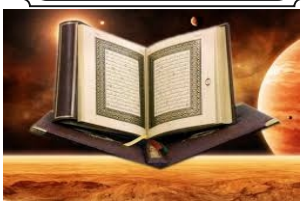

क़ुरआ़न शरीफ़ की सूरतों की तरतीब और उसकी आयतों की तरतीब दोनों ही जम्हूर उलमा के मुताबिक़ ''तौक़ीफ़ी'' है। यानी अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हज़रत मुह़म्मद ﷺ के ज़माना-ए-मुबारका में ही मुकम्मल क़ुरआ़न आयतों और सूरतों की तरतीब के साथ मह़फ़ूज़ हो गया था, उसको एक जगह जमा करने का काम, उस पर ऐराब (ज़बर, ज़ेर और पेश वग़ैरह) लगाने का काम और उसको एक लह़जे (क़िरत) पर जमा करने का काम अलबत्ता मुख़्तलिफ़ ज़मानों में मुख़्तलिफ़ शख़्सियतों के ज़रिया हुआ।

पूरे क़ुरआ़ने मजीद के नुज़ूल का ज़माना 22 साल कुछ महीनों पर मुश्तमिल हे। जिसमें थोड़ा-थोड़ा करके कभी एक आयत, कभी ज़्यादा आयतें ह़ालात व ज़माना की रिआ़यत से जैसी ज़रूरत हुई उसके मुताबिक़ अल्लाह तआ़ला ने अपना हुक्म नाज़िल फ़रमाया, लेकिन तकमीले क़ुरआ़न के आख़िरी ज़माने में हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम अल्लाह के हुक्म से सूरतों और आयतों की तरतीब लेकर नाज़िल हुए, और अल्लाह के रसूल ﷺ ने कातिबीने वह़ी (व़ही लिखने वालों) से यह तरतीब अपने सामने मुकम्मल करवाई। इस तरह़ सूरह बक़रा सूरतों की तरतीब में दूसरे नम्बर पर है। पूरे क़ुरआ़ने मजीद में सबसे लम्बी सूरह यही है, जो तक़रीबन ढाई पारा में मुह़ीत है और क़ुरआ़ने मजीद की सबसे लम्बी आयत भी इसी का ह़िस्सा है। जो 18 लाईन है, वह आयत नम्बर 282 है जिसमें अल्लाह तआ़ल ने अहले ईमान को लेन-देन या तिजारत में दस्तावेज़ बनाने का हुक्म दिया है।

इस सूरह में कुल 40 रूकूअ़, 286 आयतें, 6221 कलमे और 25500 हुरूफ़ हैं।

बक़रा का मतलब **''गाय''** होता है, चूँकि इस सूरह में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का क़िस्सा मज़कूर है कि अल्लाह तआ़ला ने बनी इसराईल से गाय ज़बह़ करने का मुतालबा किया, उसका क़िस्सा इस तरह़ है कि बनी इसराईल में एक मालदार आदमी था, जिसका नाम आ़मील था। उसके चचाज़ाद भाई ने विरासत की दौलत की लालच में उसका क़त्ल कर दिया और अपने सर से ख़ून का इल्ज़ाम हटाने के लिये लाश को दूसरी बस्ती के दरवाज़े पर डाल दिया और ख़ुद सुबह़ को शोर मचाकर अपने चचाज़ाद भाई के ख़ून का बदला लेने का मुद्दई (दावेदार) बन बैठा। बस्ती वालों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से दरख़्वास्त की कि अल्लाह से दुआ़ करें कि अल्लाह राज़ की ह़क़ीक़त ज़ाहिर कर दे, क्योंकि हमारी बस्ती में से किसी ने उसको नहीं मारा है। इस पर यह हुक्म नाज़िल हुआ कि गाय ज़बह करके उसका कोई ह़िस्सा मक़तूल के ह़िस्से पर मारें तो वह ज़िन्दा होकर ह़क़ीक़ते ह़ाल बता देगा, या क़ातिल को बता देगा, (जैसा कि आयत 73 में अल्लाह ने फ़रमाया है)

बहुत सादगी के साथ गाय ज़बह करने का

हुक्म था, जो भी गाय ज़बह करते मक़बूल हो जाती, मगर उन्होंने सवाल पर सवाल किये और जितने सवालात किये उतनी ज़्यादा मशक़्क़त में पड़े, इस तरह इस वाक़ये की हिकायत में 5 मर्तबा ज़ाहिरी लफ़्ज़ के साथ और 9 मर्तबा इशारे के साथ गाय का ज़िक्र है, इसी मुनासबत से इस सूरत का नाम **"बक़रा"** है।

तमाम मुफ़स्सिरीने किराम के नज़दीक यह सूरह मदनी है। जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने जमरह (शैतान) को कंकरी मारी उस वादी को निचले ह़िस्से में और अपने बाँए जानिब का'बा शरीफ़ को रखा और दाँए तरफ मिना का मैदान था, फिर फ़रमाया यह वह जगह है जिसमें हुज़ूर ﷺ पर सूरह बक़रा नाज़िल हुई।

शाने नुज़ूलः वाज़ेह़ है कि छोटी सूरतों का शाने नुज़ूल एक बारगी बयान हो सकता है, मगर सूरह बक़रा के सबसे लम्बी सूरह होने के नाते आगे आने वाली आयतों का शाने नुज़ूल भी अलग-अलग है। अलबत्ता इब्तिदाई आयतों का शाने नुज़ूल इस तरह है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीबे करीम ﷺ से ऐसी किताब नाज़िल करने का वादा फ़रमाया था, जो न पानी से धोकर मिटाई जा सके, न पुरानी हो। जब क़ुरआ़न पाक नाज़िल हुआ तो फ़रमायाः "ذالک الکتاب" यही वह किताब है जिसका आपसे वादा किया गया था जिसमें शक की गुंजाइश नहीं।

एक दूसरा क़ौल यह है कि अल्लाह तआ़ला ने बनी इसराईल से एक किताब नाज़िल फ़रमाने और बनी इस्माईल में एक रसूल भेजने का वादा किया था। जब हुज़ूर ﷺ मदीना हिजरत करके तशरीफ़ लाए, जहाँ यहूद ज़्यादा तादाद में थे तो इस वादे को पूरा होने की ख़बर इस तरह दी कि "यही वह किताब है।"

सूरह बक़रा के फ़ज़ाइलः हज़रत मुह़ियुद्दीन बिन अ़रबी रह़मतुल्लाह अलैहि का क़ौल है कि सूरह बक़रा में एक हज़ार अवामिर (अच्छे काम करने का हुक्म), एक हज़ार नवाही (बुरे काम से बचने का हुक्म), एक हज़ार अह़काम और एक हज़ार अख़बार हैं।

मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है कि शैतान उस घर से दूर भागता है जिसमें सूरह बक़रा पढ़ी जाती है।

इमाम तबरानी और इमाम बैहक़ी ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत की, कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः मय्यत को दफ़्न करके क़ब्र के सिरहाने (सर की तरफ़) सूरह बक़रा के शुरू की आयतें और पाँव की तरफ़ आख़िर की आयतें पढ़ो।

सूरत का ख़ुलासाः इस सूरह में मुख़्तलिफ़ मज़ामीन हैं जिनका ख़ुलासा नीचे पेश किया जाता है ताकि अगले मज़मून में आप इसकी तफ़सीर देख सकें।

★ ऐजाज़े क़ुरआ़न (चैलेंज के ह़वाले से)। ★ इन्सान की क़िस्में (आ़दात व अफ़कार के एतबार से)।★ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश का क़िस्सा। ★ शैतान के अकड़ने, जन्नत से निकलने का क़िस्सा। ★ बनी इसराईल के वाक़यात। ★ क़िस्साऐ हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम। ★ अल्लाह तआ़ला का मोमिनों से पहला ख़िताब (मज़मून ईमान अफ़रोज़)। ★ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और तामीर का'बा। ★ क़िब्ला की तबदीली। ★ आयतल कुर्सी। ★ हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम का क़िस्सा। वग़ैरह। (जारी...)

★ ABIRTI, अलबरकात अलीगढ़।

मौ० अ़ब्दुल मुत्तलिब मिस्बाही

मरीज़ की अ़यादत

عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله ﷺ ان الله عز و جل یقول یوم القیامة:"یا ابن آدم مرضت فلم تعدنی! قال : یارب کیف اعودک و انت رب العٰلمین!،قال: اما علمت ان عبدی فلانا مرض فلم تعده؟اما علمت انکَ لو عدته لوجدتنی عنده ؟...الحدیث (رواه مسلم)

तर्जुमाः हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है, वह फ़रमाते हैं कि नबी-ए-अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्लु क़यामत के दिन फ़रमायेगा ''ऐ इन्सान! मैं बीमार हुआ तूने मेरी अयादत नहीं की?'' बन्दा अर्ज़ करेगाः ऐ मेरे रब! तेरी अ़यादत कैसे करता तू तो रब्बुल आ़लमीन है? अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ''तुझे ख़बर हुई कि मेरा फ़लाँ बन्दा बीमार है, उसकी अ़यादत नहीं की। तुझे मालूम नहीं कि अगर तू उसकी अ़यादत करता तो मुझे उसके पास पाता।... (इस ह़दीस की रिवायत इमामे मुस्लिम ने की है।)

ह़दीस की शरह़ः अ़यादत का माना है बीमार पुर्सी, बीमार का ह़ाल पूछना। यह लफ़्ज़े **عُوْدُ** से बना है। जिसका माना है लौटना और रूजूअ़ करना। चूँकि बीमार पुर्सी करने वाला मरीज़ के अह़वाल गाहे बगाहे दरियाफ़्त करता रहता है और कभी-कभी उसके पास आता जाता रहता है, इसलिए इस माना के लिये **عیادت** लफ़्ज़ लाया गया।

ह़दीसे पाक का मफ़हूमः अल्लाह तआ़ला की ज़ात हर तरह़ की बीमारी और तकलीफ़ से पाक है बल्कि वह तो ख़ुद बीमारों को शिफ़ा देता है, मगर इसके बा वजूद उसने बन्दे की बीमारी को अपनी बीमारी क़रार दिया और फ़रमायाः ''मैं बीमार हुआ तूने मेरी अ़यादत नहीं की।'' बीमार मोमिन बन्दे से अपने लगाव और ह़द दर्जा रह़मत व हमदर्दी ज़ाहिर करने के लिये अल्लाह तआ़ला के इस फ़रमान। ''तू मुझे उसके पास पाता'' इसकी उलमा ने दो तौजीहें कीं हैं। एक यह कि इस ह़दीस का वही मतलब है जो आयते करीमा ''**ان الله مع الصابرین**'' (बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।) का है। इसलिए कि बन्दा-ए-मोमिन बीमारी व परेशानी पर सब्र करता है और अल्लाह की रह़मत सब्र करने वालों के साथ रहती है। दूसरा यह है कि इसका मतलब है ''तू अ़यादत का सवाब मेरे पास पाता।''

अ़यादत का ह़ुक्मः मरीज़ की अ़यादत और ख़बर गीरी करना ह़ुज़ूर ﷺ की पसन्दीदा सुन्नत है। आपने ख़ुद भी इसका बड़ा एह़तमाम फ़रमाया है और अपने मानने वालों को भी ह़ुक्म दिया है। ह़दीस की कई किताबों में मौजूद है कि ह़ुज़ूर ﷺ ने अपने बीमार सह़ाबा की अ़यादत फ़रमाई और उनके लिए शिफ़ा की दुआ़ की। एक ह़दीसे पाक में है हज़रत ज़ैद बिन

अ़रक़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है वह फ़रमाते हैं कि नबी-ए-पाकﷺ ने मेरी अ़यादत फ़रमाई जबकि मेरी दोनों आँखों में तकलीफ़ थी। यूँही हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से एक रिवायत मन्क़ूल है कि जब हज़रत सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ग़ज़वा-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर ज़ख़्मी हुए जिनके हाथ में किसी ने तीर मार दिया था। हुज़ूरे अरकमﷺ ने उनका ख़ेमा मस्जिद में लगवा दिया था ताकि क़रीब होने की वजह से बार-बार उनकी देख रेख कर सकें।

मरीज़ की अ़यादत को हुज़ूरे अकरमﷺ ने हुक़ूक़े इस्लाम से क़रार दिया है। चुनाँचे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाहﷺ को फ़रमाते हुए सुना ''एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर 5 हुक़ूक़ हैं। 1. सलाम का जवाब देना, 2. मरीज़ की अ़यादत करना, 3. जनाज़े में शरीक होना, 4. दावत क़ुबूल करना और 5. छींकने वाले का जवाब देना। (बुख़ारी शरीफ़)

इसके अलावा और भी बहुत सी रिवायतें हैं, जिनसे वाज़ेह़ होता है कि मरीज़ की अ़यादत करना मुसलमान का ह़क़ है।

अ़यादत करने का सवाबः (1) हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम ﷺ ने फ़रमायाः बेशक मुसलमान जब अपने मुसलमान भाई की अ़यादत करता है तो वापस आने तक जन्नत के ताज़ा फलों को जमा करने में मसरूफ़ रहता है। (बुख़ारी शरीफ़)

(2) हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर ﷺ को फ़रमाते हुए सुना ''जो मुसलमान किसी मुसलमान की सुबह के वक़्त मिज़ाज पुर्सी करता है तो शाम तक 70 हज़ार फ़रिश्ते उसके लिये दुआ़ये ख़ैर करते रहते हैं और अगर शाम के वक़्त बीमार पुर्सी करता है तो सुबह़ तक 70 हज़ार फ़रिश्ते उसके ह़क़ में दुआ़ करते रहते हैं और जन्नत में उसके लिये चुने हुए फलों का ह़िस्सा है। (मिश्कात शरीफ़)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया जो शख़्स अच्छी तरह़ से वज़ू करे और सवाब की नीयत से अपने मुसलमान भाई की अ़यादत करे तो वह जहन्नम से 70 साल के फ़ासले तक दूर कर दिया जायेगा। (अबू दाऊद शरीफ़)

इन दोनों ह़दीसों से मालूम हुआ कि मरीज़ की अ़यादत करना बड़े अजर व सवाब का काम है। अ़यादत करने से न सिर्फ़ बन्दे की ग़मख़्वारी होती है, बल्कि अ़यादत करने वाले के गुनाह भी मिटा दिये जाते हैं।

अ़यादत के आदाबः अ़यादत के यह आदाब हैंः

(1) मरीज़ की ख़ैरियत मालूम करेः मरीज़ की अ़यादत का मसनून तरीक़ा यह है कि अ़यादत करने वाला पहले सलाम करे फिर मरीज़ के सिरहाने बैठे और उसकी ख़ैरियत मालूम करे। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि एक यहूदी लड़का नबी-ए-अकरम ﷺ की ख़िदमत किया करता था। जब वह बीमार हो गया तो ह़बीबे पाकﷺ उसकी अ़यादत को तशरीफ़ ले गए और उसके सिरहाने बैठेः... (बुख़ारी शरीफ़)

(2) मरीज़ को दुआ़ देः अ़यादत करने वाला

ख़ैरियत मालूम करने के बाद मरीज़ के हक़ में शिफ़ा की दुआ़ करे। ह़दीसे पाक में है कि जो शख़्स ऐसे मरीज़ की अ़यादत करे, जिसकी मौत का समय न आया हो (अभी उसकी रूह़ न निकली हो) तो उसके पास सात मर्तबा यह कहे ''أسأ ل الله العظيم رَبَّ العرشِ العظيم اَن يَشْفِيک'' तो अल्लाह तआ़ला मरीज़ को उस बीमारी से शिफ़ा अ़ता फ़रमा देगा। एक ह़दीसे पाक में है कि नबी-ए-करीम ﷺ एक देहाती की अ़यादत को तशरीफ़ ले गए और आप जिसकी अ़यादत को भी तशरीफ़ ले जाते तो फ़रमाते لا بَأسَ طُهورٌ اِنْ شاء الله।

(3) मरीज़ को तसल्ली दे: अ़यादत करने वाला मरीज़ को तसल्ली दे और उसे जल्द शिफ़ायाब होने की उम्मीद दिलाये। ह़दीसे पाक में है कि हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमायाः जब तुम किसी बीमार के पास जाओ तो उसके लिये उसकी उम्र की ज़्यादती की दुआ़ करो कि उससे वापस तो कोई चीज़ न होगी, लेकिन मरीज़ का दिल ख़ुश हो जायेगा।

(4) मरीज़ के पास ज़्यादा देर न बैठे: तीमारदार मरीज़ के पास ज़्यादा देर तक न बैठे कि इसकी वजह से कभी-कभी मरीज़ को उलझन और दिक़्क़त होती है, बल्कि सिर्फ़ इतनी देर वहाँ ठहरे कि मरीज़ की ख़ैरियत मालूम हो जाए, उसके बाद वहाँ से चला जाए। चुनाँचे हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि अ़यादत का बेहतर समय इतना है जितना कि ऊँटनी का दूध दूहने का समय होता है और हज़रत सईद बिन मुसय्यब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की रिवायत में है कि बेहतरीन अ़यादत जल्द उठ आना है। (मिश्कात शरीफ़)

हाँ अगर मरीज़ का कोई दिली दोस्त या क़रीबी साथी हो, जिसके रहने से मरीज़ को सुकून व राह़त मिलती हो तो ऐसे आदमी का मरीज़ के पास ज़्यादा वक़्त देना बेहतर है, ब शर्ते कि उसका अपना भी कोई नुक़सान न हो।

किसी से मरीज़ का ह़ाल पूछ लेना भी अ़यादत है: हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु उस दर्द व बीमारी में हुज़ूर ﷺ के पास से तशरीफ़ लाए कि जिसमें हुज़ूर ने वफ़ात पाई। लोगों ने कहाः ऐ अबुल ह़सन! रसूलुल्लाह ﷺ ने किस ह़ाल में सुबह़ की? हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमायाः अलह़म्दुल्लिलाह आपने तन्दुरूस्ती की ह़ालत में सुबह़ की। (बुख़ारी शरीफ़)

फ़ायदा: इस रिवायत से दो मसले मालूम हुए। एक यह कि बीमार पुर्सी का एक तरीक़ा यह भी है कि बीमार का ह़ाल आने वाले से पूछ लिया जाए। दूसरा यह कि अगर बीमार की ह़ालत ख़राब हो तब भी अच्छे लफ़्ज़ बोले जायें कि इसमें नेक फ़ाली भी है और अल्लाह की रह़मत से उम्मीद भी।

मरीज़ से दुआ़ करवाना: जब मरीज़ के पास जाये तो उससे अपने लिये दुआ़ कराये। चुनाँचे हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले पाक ﷺ ने फ़रमायाः जब तुम किसी मरीज़ के पास जाओ तो उससे अपने वास्ते दुआ़ के लिये कहो कि उसकी दुआ़ फ़रिश्तों की दुआ़ की तरह़ है। (सुनने इब्ने माजा) ★★★

★ उस्तादः सिराजुल उलूम बरगदही, महराजगंज। (यूपी)

मौ० साजिद अ़ली मिस्बाही

ज़रूरियाते दीन और ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत की वज़ाहत

आख़िरी क़िस्त

● **ज़रूरियाते दीन जिनका इन्कार करने वाला काफ़िर हो जाता है:**

अल्लाह तआ़ला का इन्सानों की तरह़ हाथ और आँख से पाक होना। फ़तावा रज़विया में है:

''यद, हाथ को कहते हैं और ऐन, आँख को। अब जो यह कहे कि जैसे हमारे हाथ, आँख हैं, ऐसे ही जिस्म के टुकड़े अल्लाह तआ़ला के लिये हैं, वह यक़ीनन काफ़िर है। अल्लाह तआ़ला का ऐसे यद व ऐन (हाथ और आँख) से पाक होना ज़रूरियाते दीन से है''।

● इस पर ईमान रखना कि अल्लाह का इल्म ज़ाती है। ● उसने हुज़ूरे अक़दस ﷺ और दूसरे अम्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को कुछ गुयूब (छुपी बातों) का इल्म अता फ़रमाया है।

नोटः अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर ﷺ को ग़ैब का कुछ इल्म अ़ता फ़रमाया, यह अ़क़ीदा रखना ज़रूरियाते दीन से है, इसका इन्कार करने वाला काफ़िर है और अल्लाह तआ़ला ने आपको □□□□□□ □ □□□ □□ यानी दुनिया की पैदाइश से लेकर क़यामत तक का इल्म अ़ता फ़रमाया यह अक़ीदा रखना ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत से है, इसका इन्कार करने वाला गुमराह और अहले सुन्नत से ख़ारिज है।

● सरवरे कौनैन ﷺ का इल्म दूसरों से ज़्यादा है। ● इबलीस का इल्म मआ़ज़ल्लाह हुज़ूर ﷺ से हरगिज़ ज़्यादा नहीं। ● जो इल्म अल्लाह तआ़ला की ख़ास सिफ़त है, वह हरगिज़ इबलीस के लिये नहीं हो सकती। हुज़ूर ﷺ के इल्म को बच्चे, पागल के इल्म से तश्बीह़ देना सरकार की तौहीन है।

● फ़तावा रज़विया में है: ''अल्लाह तआ़ला ही आ़लिम बिज़्ज़ात है, उसके बे बताए एक ह़र्फ़ कोई नहीं जान सकता। हुज़ूर ﷺ और दीगर अम्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को अल्लाह तआ़ला ने अपने कुछ ग़ुयूब का इल्म दिया। रसूलुल्लाह ﷺ का इल्म दूसरों से ज़्यादा है। इबलीस का इल्म मआ़ज़ल्लाह इल्मे अक़दस ﷺ से हरगिज़ ज़्यादा नहीं है। जो इल्म अल्लाह तआ़ला की ख़ास सिफ़त है जिसमें उसके ह़बीब मुह़म्मद रसूलुल्लाह ﷺ को शरीक करना भी शिर्क हो, वह हरगिज़ इबलीस के लिये नहीं हो सकता। जो ऐसा माने बिल्कुल मुश्रिक, काफ़िर मलऊन, बन्दा-ए-इबलीस है। ज़ैद व उमर, हर बच्चे, पागल, चौपाए को इल्मे ग़ैब में मुह़म्मद रसूलुल्लाह ﷺ के मुमासिल (बराबर) कहना हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की सरीह़ तौहीन और खुला कुफ़्र है। यह सब मसाइल ज़रूरियाते दीन से हैं और इनका मुन्किर, इनमें अदना शक लाने वाला बिल्कुल काफ़िर है।''

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन (आख़िरी नबी) जानना। ● कुरआ़ने करीम को कलामे इलाही जानना,● कुरआ़ने करीम को कामिल मानना, यानी जिस तरह़ नाज़िल हुआ था उसी तरह़ मह़फ़ूज़ है, इसमें कोई कमी बेशी नहीं हुई है।● अम्बियाऐ किराम अलैहिमुस्सलाम को दूसरे तमाम इंसानों से अफ़ज़ल मानना। फ़तावा रज़विया में है:

''रवाफ़िज़ (शियों) में जो ज़रूरियाते दीन से किसी अम्र का मुन्किर हो मसलन क़ुरआने अज़ीम को बयाज़े उस्मानी कहे (हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का लिखा हुआ), उसके एक लफ़्ज़, एक ह़र्फ़ एक नुक़्ते की निस्बत गुमान करे कि मआ़ज़ल्लाह सह़ाबा-ए-किराम या हम अहले सुन्नत ख़्वाह किसी शख़्स ने घटा दिया, बढ़ा दिया, बदल दिया, या हज़रत अमीरूल मोमिनीन मौला अ़ली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम ख़्वाह दीगर अइम्मा-ए-अतहार रिज़्वानुल्लाहि तआ़ला अलैहिम अजमईन से किसी को अम्बिया-ए-साबिक़ीन अलैहिम्मुस्सलातु व अत्तसलीम कुल या कुछ से अफ़ज़ल बताए, क़तअ़न काफ़िर है और उसका हुक्म मिसले मुरतद्दीन के है। (फ़तावा रज़विया: जि० 11, पे० 210)

● नबी को वली से अफ़ज़ल जानना। फ़तावा रज़विया में ''इरशादुस्सारी'' के ह़वाले से है:

यानी नबी, वली से अफ़ज़ल है और यह अम्र (अक़ीदा) यक़ीनी है और इसके ख़िलाफ़ कहने वाला काफ़िर है, कि यह ज़रूरियाते दीन से है। (जि० 14, पे० 46)

● मुसलमान को मुसलमान जानना, ● काफ़िर को काफ़िर जानना। बहारे शरीअ़त में है:

''मुसलमान को मुसलमान, काफ़िर को काफ़िर जानना ज़रूरियाते दीन से है, अगरचे किसी ख़ास शख़्स की निस्बत यह यक़ीन नहीं किया जा सकता कि उसका ख़ातमा ईमान पर या मआ़ज़ल्लाह कुफ़्र पर हुआ, ता वक़्ते कि (जब तक) उसके ख़ातमा का ह़ाल दलीले शरई से साबित न हो, मगर इससे यह न होगा कि जिस शख़्स ने क़तअ़न कुफ़्र किया हो उसके कुफ़्र में शक किया जाए, कि क़तई काफ़िर के कुफ़्र में शक भी आदमी को काफ़िर बना देता है।'' (बहारे शरीअ़त: हि० 1, पे० 185)

● अजनबी औरत को छूने और चूमने को गुनाह जानना। मलफ़ूज़ाते आला हज़रत में है:

''बहुत से सग़ाइर (छोटे गुनाह) ऐसे हैं जिनका मासियत (गुनाह) होना ज़रूरियाते दीन से है, मसलन अजनबिय्या से मस (छूना) व तक़बील (चूमना) सग़ीरा है।... अगर ह़लाल जाने काफ़िर है। (पे० 472)

● ग़सब (किसी का ह़क़ छीनने) को ह़राम जानना, ● झूट को ह़राम जानना और ● चोरी को ह़राम जानना। फ़तावा रज़विया में है:

''इसी तरह़ ग़सब, किज़्ब (झूट) और सरक़ा (चोरी) की हुरमतें ज़रूरियाते दीन से हैं, ऐसे शख़्स के पीछे नमाज़ सख़्त मकरूह है, मकरूहे तह़रीमी, क़रीब ब ह़राम (ह़राम के क़रीब) और वाजिबुल एआ़दा (लौटाना वाजिब) है। कि ना दानिस्ता (अन्जाने में) पढ़ ली हो तो फेरना वाजिब है।'' (जि० 24, पे० 82)

ख़म्र (शराब) को ह़राम मानना। फ़तावा रज़विया में है:

''ख़म्र की हुरमत, क़तईया, बल्कि ज़रूरियाते दीन से है, इसके एक क़तरे (बूंद) की हुरमत का मुन्किर क़तअन काफ़िर है।'' (जि० 25, पे० 31)

● बीवी की विरासत का हुक्म। फ़तावा रज़विया में है:

''विरासते जौज़ा (बीवी) बिला शुब्हा ज़रूरियाते दीन से है जिस पर तमाम फ़िर्क़े-ए-इस्लाम (इस्लामी फ़िर्क़ों) का इजमा और हर ख़ास व आम को इसकी इत्तिला, तो मुतलक़न इसका इंकार यानी यह कहना कि ज़ौजियत (बीवी होना) शरअ़ में

ज़रिया-ए-विरासत ही नहीं सरीह़ कलिमा-ए-कुफ़्र है।'' (जि० 12, पे० 103)

ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत जिनके इन्कार से आदमी गुमराह हो जाता है: ● अल्लाह तआ़ला को जिस्म व जिस्मानियात से पाक जानना। फ़तावा रज़विया में है:

''जो कहे कि उसके (अल्लाह के) हाथ और आँख भी हैं तो जिस्म ही, मगर न मिस्ले अज्साम, बल्कि मुशाबहते अज्साम से पाक व मुनज़्ज़ाह हैं, वह गुमराह, बद दीन, कि अल्लाह तआ़ला का जिस्म व जिस्मानियात से मुत्लक़न पाक व मुनज़्ज़ाह होना ज़रूरियाते अक़ाइदे अहले सुन्नत व जमाअ़त से है।'' (जि० 29, पे० 66)

यानी जो शख़्स यह अ़क़ीदा रखे कि अल्लाह के हाथ, आँख वग़ैरह हैं, यानी वह भी जिस्म वाला है, मगर उसका जिस्म मख़्लूक़ के जिस्म की तरह़ नहीं है, ऐसा अक़ीदा रखने वाला गुमराह और अहले सुन्नत से ख़ारिज है। हमारा अक़ीदा यह है कि अल्लाह जिस्म से पाक है।

● इस पर ईमान रखना कि औलिया-ए-किराम को अम्बिया व रसूलों के सदक़े में कुछ ग़ैबी उलूम ह़ासिल होते हैं और यह कि अल्लाह तआ़ला ने अपने प्यारे ह़बीब ﷺ को गुयूबे ख़मसा (पाँच छुपे उलूम) में से कुछ इल्म बख़्शा। फ़तावा रज़विया में है:

''औलिया-ए-किराम को भी कुछ उलूमे ग़ैब मिलते हैं, मगर ब वसातत (ज़रिया) रूसुल अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम।

अल्लाह तआ़ला ने अपने मह़बूबों ख़ुसूसन सय्यिदुल मह़बूबीन ﷺ को गुयूबे ख़मसा (पाँच छुपे उलमू) से बहुत जुज़इय्यात (यानी पाँचों उलूम में से बहुत सी चीज़ों) का इल्म बख़्शा, जो यह कहे कि ख़म्स में से किसी फ़र्द का इल्म किसी को न दिया गया, हज़ारहा अह़ादीसे मुतवातिरतुल मआ़नी का मुन्किर और बद मज़हब ख़ासिर (घाटा उठाने वाला) है।

● यज़ीद को फ़ासिक़ व फ़ाजिर जानना और ● हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को बे क़ुसूर व मज़लूम समझना। फ़तावा रज़विया में है:

मगर इस यज़ीद के फ़िस्क़ व फ़ुजूर से इंकार करना और इमामे मज़लूम (हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) पर इल्ज़ाम रखना ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत के ख़िलाफ़ है और दलालत (गुमराही) व बद मज़हबी साफ़ है, बल्कि इन्साफ़न यह उस क़ल्ब से मुतसव्वर (मुमकिन) नहीं जिसमें मुह़ब्बते सय्यदे आ़लम ﷺ का शम्मा हो।'' (ह़ुज़ूर ﷺ की ज़रा भी मुह़ब्बत हो)

अम्बिया-ए-किराम अलैहिम्मुस्सलातु वस्सलाम की मौत सिर्फ़ आनी (एक पल के लिये) है। फ़तावा रज़विया में है:

''अगर ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम की वफ़ात मान भी ली जाए तो उनकी मौत बल्कि तमाम अम्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातु सलाम के लिये सिर्फ़ आनी है, एक आन को मौत त़ारी होती है। यह मसला क़तइय्या, यक़ीनिया, ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत से है, इसका मुन्किर न होगा मगर बद मज़हब गुमराह। तो फिर ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ज़िन्दा ही हैं उनका नुज़ूल मुम्तनअ़ (मुहाल) क्यों कर हो गया।'' ★★★

★ उस्ताद जामिया अशरफ़िया मुबारकपुर आज़मगढ़, (यूपी)

ह़ज, उमरा और हरमैन शरीफ़ैन की फ़ज़ीलत

वैसे तो ह़ज 9 हिजरी में फ़र्ज़ हुआ मगर उसकी शुरूआ़त हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी ही से हो गई थी, जैसा कि हम सब जानते हैं कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की थी कि ''ऐ अल्लाह! जिस तरह़ फ़रिश्तों का क़िब्ला अर्श (बैतुल मामूर) है ऐसे ही हम इन्सानों का भी क़िब्ला बना दे।'' तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों के ज़रिये से ख़ाना-ए-का'बा की तामीर करवाई। इसका ज़िक्र क़ुरआ़न पाक में यूँ हैः

तर्जुमाः बेशक पहला घर जो लोगों के लिए बनाया गया वह है जो मक्का में है ''बरकत वाला'' और तमाम जहान के लिए हिदायत है। (आले इमरानः 96)

यही वह मुक़द्दस घर है कि जिसकी तामीर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम व इस्माईल अलैहिमस्सलाम से कराई और फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिमस्सलाम से ऐलान कराया कि लोगों से कहो वह मेरे घर का ह़ज करने आऐं। हुक्म के मुताबिक़ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ''अबू क़ुबैस'' नामी पहाड़ी पर खड़े होकर ऐलान कियाः ''ऐ लोगो! अपने रब के घर का तवाफ़ करने आओ।'' अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस आवाज़ में इतनी तासीर रख दी कि क़यामत तक जितने लोगों के मुक़द्दर में ह़ाजी बनना लिखा था, सब ने ''लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक'' कहकर जवाब दिया, यहाँ तक कि जो माँ के पेट में थे उन्होंने माँ के पेट से और जो बाप की पीठ में थे उन्होंने बाप की पीठ से जवाब दिया।

यही वजह है कि दूर दराज़ से लोग ख़ाना-ए-का'बा की तरफ़ खिंचे हुए चले आते हैं। इस सिलसिले में एक वाक़या मुलाहज़ा करें।

हज़रत मुह़म्मद बिन यासीन कहते हैं कि मैं ख़ाना-ए-का'बा का तवाफ़ कर रहा था कि एक बुज़ुर्ग ने मुझसे पूछाः आपका दौलत ख़ाना (घर) कहाँ है? मैंने जवाब दियाः ख़ुरासान। उन्होंने पूछा ख़ुरासान से मक्का आने में कितना वक़्त लगता है? मैंने कहाः दो या तीन महीने। इस पर उन बुज़ुर्ग ने कहा अरे तब तो आप काबा के पड़ोसी हैं। मुझे देखिए मैं यहाँ लगातार सफ़र करके 5 सालों में पहुँचा हूँ, जब घर से निकला था तो जवान था और अब अधेड़ हो चुका हूँ। (मदारिक शरीफ़)

ह़ज व उमरा के फ़ज़ाइल अह़ादीस की रौशनी में: (1) सक़फ़ी नामी एक शख़्स बारगाहे मुस्तफ़ा ﷺ में ह़ाज़िर हुए और ह़ज की फ़ज़ीलत के बारे में पूछाः आक़ा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम ह़रम शरीफ़ का इरादा करके जैसे ही अपने घर से निकलोगे, अभी तुम्हारी सवारी ने क़दम भी न उठाया होगा कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिये एक नेकी लिख देगा और तुम्हारा एक गुनाह माफ़ कर देगा। तवाफ़ के बाद दो रकात नमाज़ पढ़ने का सवाब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल में से एक ग़ुलाम आज़ाद करने

के बराबर है। सफ़ा व मरवा की सई (चक्कर लगाने) का सवाब 70 गुलाम आज़ाद करने के बराबर है और जब तुम शाम को मैदाने अरफ़ात में ठहरते हो तो अल्लाह तआ़ला अपनी शाने रह़मत के साथ आसमाने दुनिया पर नुज़ूल फ़रमा होता है और फ़रिश्तों को मुख़ातब करते हुए फ़रमाता हैः मेरे बन्दे दूर दराज़ से मेरी जन्नत की उम्मीद में उलझे हुए बाल लेकर मेरी बारगाह में ह़ाज़िर हुए हैं। अब अगर उनके गुनाह भले ही रेत के ज़र्रों, बारिश की बूदों या समुद्र की झाग के बराबर हों, मैं उन्हें बख़्श दूँगा। ऐ मेरे बन्दो! जाओ तुम और जिसकी मग़फ़िरत के लिये तुम दुआ़ कर दो दोनों बख़्शे हुए होंगे। रमी-ए-जमरात (कंकरी मारने) पर हर कंकरी के बदले हलाक करने वाले एक गुनाहे कबीरा को माफ़ कर दिया जाता है। क़ुर्बानी करने का सवाब तो तुम्हारे रब के पास जमा रहता है। सर मुँडाने का सवाब यह है कि हर बाल के बदले एक नेकी मिलती है और एक गुनाह मिटा दिया जाता है, फिर जब तुम दुबारा तवाफ़ करते हो तो उस वक़्त तुम्हारे पास एक भी गुनाह नहीं होता है। तुम्हारे पास एक फ़रिश्ता आता है और अपने परों को तुम्हारे कन्धों के बीच रखकर कहता है कि अब आगे जो चाहो करो तुम्हारे पिछले सारे गुनाह माफ़ कर दिए गए। (तिबरानी)

(2) जिसने अल्लाह के लिए ह़ज किया और दौराने ह़ज कोई ह़राम या गुनाह का काम नहीं किया तो वह गुनाहों से ऐसे पाक हो जाता है जैसे आज ही अपनी माँ के पेट से पैदा हुआ हो। (बुख़ारी शरीफ़)

(3) हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः दूसरा उमरा करने से पहले उमरा तक के गुनाह माफ़ हो जाते हैं और ह़ज्जे मक़बूल का बदला जन्नत ही है। (मुस्लिम शरीफ़)

(4) जिसने का'बा शरीफ़ की तरफ़ ईमान व इख़्लास से देख भी लिया उसके अगले पिछले गुनाह बख़्श दिए जाते हैं और वह महशर के दिन अमन व अमान में रहेगा। (हिदायतुस्सालिक)

ह़ज के मसाइलः (1) हर मुसलमान, आक़िल, बालिग़, तन्दुरूस्त और साह़िबे इस्तेताअ़त पर ज़िन्दगी में एक बार ह़ज फ़र्ज़ है।

(2) जिस साल ह़ज फ़र्ज़ हो उसी साल अदा कर ले, लेट करने से गुनाहगार होगा और अगर फ़र्ज़ होने के बाद भी कई सालों तक टालता रहा तो ऐसा शख़्स फ़ासिक़ है। उसकी गवाही क़बूल नहीं की जायेगी, लेकिन जब भी अदा करेगा अदा हो जायेगा।

(3) दिखावे के लिये ह़ज करना या ह़राम माल से करना ह़राम है।

(4) जिस पर ह़ज फ़र्ज़ था वह ह़ज किये बिना ही मर गया तो अब उसके वारिसीन में से कोई उसके नाम से ह़ज्जे बदल करना चाहे तो कर सकता है।

(5) जिस पर ह़ज फ़र्ज था उसने वसीयत की कि मेरी तरफ़ से ह़ज कर देना तो मुर्दे के तिहाई माल से ह़ज कराया जायेगा। (बहारे शरीअ़त)

मदीना शरीफ़ के फ़ज़ाइलः मदीना मुनव्वरा की ह़ाज़िरी अरकाने ह़ज में तो दाख़िल नहीं, मगर वाजिब के क़रीब है। ह़दीसे पाक में है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमायाः "जिसने ह़ज किया और मेरी ज़ियारत को न आया उसने मुझ पर जुल्म किया।" (दार क़ुत्नी)

हुज़ूर ﷺ फ़रमाते हैं जिसने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उस पर मेरी शफ़ाअ़त वाजिब है।

ह़ज व उमरा करने वालों को अपने गुनाह माफ़ करवाने और क़ुबूलियत की सनद लेने मदीना

तय्यबा ज़रूर जाना चाहिए। सूफ़िया-ए-किराम फ़रमाते हैं कि ख़ाना-ए-का'बा के परनाले (जिसे मीज़ाबे रह़मत कहते हैं) का रूख़ मदीना तय्यबा की तरफ़ है, जिसका मतलब यह है कि ख़ाना-ए-का'बा अल्लाह तआ़ला के मेहमानों को हुज़ूर ﷺ का मेहमान बनने का इशारा कर रहा है और ज़बाने ह़ाल से कह रहा है कि मेरी तो ज़ियारत कर चुके अब मेरे का'बे की भी ज़ियारत कर लो। आला हज़रत फ़रमाते हैं:

ह़ाजियो आओ शहंशाह का रौज़ा देखो
का'बा तो देख चुके का'बे का का'बा देखो

उलमा-ए-किराम ने यह भी लिखा है कि मदीना तय्यबा में ह़ाज़िरी के वक़्त सिवाए बरगाहे मुस्तफ़ा ﷺ की ह़ाज़िरी के कोई और नीयत न हो, यहाँ तक कि मस्जिदे नबवी की भी न हो कि जिसमें पढ़ी गई एक नमाज़ का सवाब 50 हज़ार नमाज़ों के बराबर है। इसलिए कि यह सवाब तो ख़ुद बख़ुद झोली में आ ही जायेगा।

आक़ा अलैहिस्सलाम की बारगाह में ह़ाज़िरी इसलिए भी ज़रूरी है कि यहाँ गारन्टी से तौबा क़बूल होती है और हर तरह़ के गुनहगारों को अल्लाह की रह़मत ढाँप लेती है। जैसा कि अल्लाह पाक क़ुरआ़न में फ़रमाता है:

तर्जुमाः और अगर अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर अल्लाह तआ़ला से माफ़ी माँगें और रसूल भी उनके लिए मग़फ़िरत तलब करें तो ज़रूर अल्लाह को तौबा क़बूल करने वाला निहायत मेहरबान पायेंगे। (सूरह निसाः 64)

अह़ादीस की किताबों में एक भी रिवायत ऐसी नहीं मिलती कि कोई मोमिन बारगाहे मुस्तफ़ा ﷺ में अपने गुनाहों की मग़फ़िरत के लिये ह़ाज़िर हुआ हो और बिना मग़फ़िरत के वापस लौटा हो।

ह़दीसे पाक में है किः (क़यामत से पहले) ''ईमान सिमट कर मदीना में ऐसे आ जायेगा जैसे साँप (जब लोग उसे छेड़ते हैं तो) अपने बिल में सिमट जाता है।

इस ह़दीसे पाक का मतलब यह है कि जब पूरी दुनिया में कहीं भी ईमान बाक़ी नहीं रहेगा, तब भी उस शहरे रसूल ﷺ में ईमान वाले रहेंगे। यह वो ज़माना होगा जब काना दज्जाल निकलेगा। वह पूरी दुनिया में तो घूम फिर कर लोगों को काफ़िर बनायेगा, मगर जब मदीना तय्यबा में घुसना चाहेगा तो शहरे रसूल ﷺ के पहरेदार फ़रिश्ते उसका मुँह पकड़ कर दूसरी ओर खदेड़ देंगे।

यही वह शहर है जिसमें दफ़न होने की फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु दुआ़यें किया करते थे कि ''ऐ अल्लाह! मुझे अपनी राह में शहादत और अपने रसूल ﷺ के शहर में वफ़ात की सआ़दत नसीब फ़रमा।''

आप भी ह़ज कर सकते हैं: इन सारे फ़ज़ाइल को पढ़ने के बाद हर उस मुसलमान का दिल यह सआ़दत पाने के लिए मचल रहा होगा जो अपनी ग़ुर्बत की वजह से यह सआ़दत ह़ासिल नहीं कर सकता मैं समझती हूँ कि अगर हमारे इस्लामी भाई दाढ़ी मुंडवाने और इस्लामी बहनें ब्यूटी पार्लर के पैसे (जो सरासर फ़ुज़ूल ख़र्ची में सर्फ़ होते हैं) और दूसरी फ़ुज़ूल खर्चियों में बर्बाद होने वाले पैसों को इकठ्ठा करते रहें तो इंशाअल्लाह उन्हें ज़िन्दगी में एक बार ज़रूर मक्का मुकर्रमा और मदीना तय्यबा के फ़ैज़ान से माला-माल होने का मौक़ा मिल सकता है।

ऐ अल्लाह! आँखें मुझे दी हैं तो मदीना भी दिखा दे। (आमीन।) ★★★

★ **उस्तानीः जामियातुल मुह़सनात अह़मद नगर, कन्नौज।**

क़ुर्बानी के फ़ज़ाइल व मसाइल

क़ुर्बानी अल्लाह तआ़ला की बारगाह में पेश की जाने वाली एक ऐसी इबादत है जिसमें बे शुमार फ़ायदे हैं ईसार व फ़िदाकारी, सख़ावत, ग़रीबों और मिस्कीनों की ह़ाजत रवाई, रब्बे करीम की बारगाह में तक़र्रूब और इस तरह़ के बे शुमार फ़ायदे और मक़ासिद हैं जो क़ुर्बानी से ह़ासिल होते हैं।

इसी लिए क़ुरआ़ने करीम में कई जगहों पर क़ुर्बानी की तरग़ीब दी गई है। सूरह कौसर में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता हैः तो अपने रब के लिए नमाज़ अदा करो और क़ुर्बानी करो! नमाज़ पढ़ना नफ़्स की क़ुर्बानी है और क़ुर्बानी करना माल की क़ुर्बानी है, लिहाज़ा जब नफ़्स और माल दोनों की क़ुर्बानी बन्दा पेश करता है तो वह मोमिने कामिल बन जाता है।

क़ुर्बानी के फ़ज़ाइलः ह़दीस शरीफ़ में है कि सह़ाबा-ए-किराम ने हुज़ूरे अकरम ﷺ से पूछा कि ''या रसूलुल्लाह ﷺ ! यह क़ुर्बानियाँ क्या चीज़ हैं?'' फ़रमाया कि ''यह तुम्हारे बाप हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत है।'' अर्ज़ किया कि इसमें हमारे लिए क्या सवाब है? फ़रमाया कि हर बाल के बदले नेकी है। (सुनने इब्ने माजा)

पुल सिरात़ जो बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ है, उस पर गुज़रने के लिए क़ुर्बानी के जानवर हमारे लिये सवारी का काम देंगे। ह़दीस शरीफ़ में है कि ''तुम अपने जानवरों को मोटा करके क़ुर्बानी करो, क्योंकि यह जानवर पुल सिरात़ पर तुम्हारी सवारी के काम आयेंगे।''

क़ुर्बानी न करने पर ह़दीस शरीफ़ में बड़ी वईदें आई हैं। एक ह़दीस में है कि जो क़ुदरत के बा वजूद क़ुर्बानी न करे, वह हमारी ईदगाह के पास न आए। (इब्ने माजा)

क़ुर्बानी के दिनः ईदुल अज़्हा यानी दसवीं ज़िलह़िज्जा और उसके बाद के दो दिन क़ुर्बानी के हैं यानी पूरे तीन दिन। उसके बाद क़ुर्बानी सही नहीं होगी।

क़ुर्बानी किस पर वाजिब हैः हर आक़िल, बालिग़, मुस्लिम, मुक़ीम और मालिके निसाब पर क़ुर्बानी वाजिब है।

क़ुर्बानी के जानवरः तीन क़िस्म के जानवरों की क़ुर्बानी जाइज़ है।

(1) ऊँट जो पाँच साल से कम का न हो (2) भैंस जो दो साल से कम की न हो (3) बकरी/बकरा जो एक साल से कम के न हों। ख़्याल रहे कि मज़कूरा जानवरों की क़ुर्बानी उसी वक़्त जाइज़ है जब उनके अन्दर कोई ऐसा ऐ़ब न हो, जो उनकी क़ीमत पर असर डालता हो। मसलन लंगड़ा, कान कटा, पूँछ कटा, काना इस तरह़ के जानवरों की क़ुर्बानी जाइज़ नहीं है। बड़े जानवरों में सात हिस्से हो सकते हैं, शर्त यह है कि सारे ह़िस्सेदार मुसलमान हों, सब बराबर क़ीमत लगायें और सबकी नीयत क़ुर्बानी की हो।

गोश्त की तक़्सीमः बेहतर तो यह है कि गोश्त के तीन हिस्से किए जायें, एक हिस्सा फ़क़ीरों और मुहताजों को, दूसरा रिश्तादारों में और तीसरा हिस्सा अपने लिए रख ले और ज़रूरत हो तो पूरा गोश्त अपने लिए रख सकता है। क़ुर्बानी का गोश्त किसी ग़ैर मुस्लिम या बद-मज़हब को हरगिज़ न दें।

क़ुर्बानी करने वालों से मुताल्लिक़ कुछ अहकामः जिनके नाम से क़ुर्बानी होनी है उनके लिए सुन्नत यह है कि ज़िलहिज्जा की पहली तारीख़ से क़ुर्बानी के दिन तक बाल और नाखुन न कटवाऐं, क़ुर्बानी के दिन ख़ास एहतमाम करें, ग़ुस्ल करें और तकबीरे तशरीक़ की कसरत करें, ईद की नमाज़ से पहले कुछ न खायें पीयें, नमाज़े ईद के बाद क़ुर्बानी करके उसके गोश्त को खायें।

एक जाहिलाना रस्मः आम तौर पर लोग अपने नाम से क़ुर्बानी करने के बजाए बड़े पीर के नाम से या दूसरे बुज़ुर्गाने दीन के नाम से क़ुर्बानी करते हैं, यह ग़लत है। अपने नाम से क़ुर्बानी करनी वाजिब है। हाँ क़ुदरत हो तो दूसरा जानवर अपने पीर या किसी और बुज़ुर्ग के नाम से क़ुर्बान करें।

यूँही एक और ग़लत फ़हमी लोगों में राइज हो गई है कि क़ुर्बानी के गोश्त पर फ़ातिहा नहीं हो सकती। यह भी ग़लत है, सही यह है कि हर जाइज़ और हलाल खाने पर फ़ातिहा हो सकती है, बल्कि फ़ातिहा करने से गोश्त में बरकत होती है।

एक आम बात लोगों में यह भी राइज है कि वह ख़सी न किये हुए जानवर की क़ुर्बानी को जाइज़ नहीं समझते हैं, यह भी ग़लत है। ख़सी की क़ुर्बानी बेहतर है, लेकिन ग़ैर ख़सी की क़ुर्बानी भी जाइज़ है।

क़ुर्बानी का मक़्सदः जो कुछ हमारे पास है वह सब अल्लाह का दिया हुआ है, अल्लाह तआ़ला हमारी किसी चीज़ का मुहताज नहीं, लेकिन कभी कभी वह अपने बन्दों का इम्तिहान लेता है कि देखें जिस बन्दे को हमने सब कुछ दे रखा है, वह हमारे लिए कुछ ख़र्च करने का जज़्बा रखता है? इसलिए अल्लाह तआ़ला हमें क़ुर्बानी का हुक्म देता है, ताकि हम उसके दिए हुए माल को उसकी बारगाह में क़ुर्बान करके उसकी क़ुरबत और नज़दीकी हासिल करें।

क़ुर्बानी करने का मक़्सद मुसलमानों के अन्दर जुरअ़त व बहादुरी और ईसार व क़ुर्बानी का जज़्बा पैदा करना है। ताकि इस्लाम की सर बुलन्दी के लिए अपने जान व माल और औलाद की क़ुर्बानी देने की जब भी ज़रूरत पड़े फ़ौरन तैयार हो जायें।

हर इस्लामी त्यौहार की एक नुमायाँ ख़ुसूसियत ग़रीबों और मुहताज़ों की इमदाद है। बहुत सारे ग़रीब ऐसे भी हैं, जो साल-साल भर अच्छा खाना नहीं खा पाते हैं, मगर क़ुर्बानी के दिन उनको अच्छा खाना मिल जाता है। लिहाज़ा हमें क़ुर्बानी के इन मक़ासिद को सामने रखकर क़ुर्बानी करनी चाहिए, और अल्लाह की रज़ा और रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत की अदायगी को पेशे नज़र रखना चाहिए, ग़रीबों और मुहताजों की ख़बर गीरी और उनकी ख़ुशी हासिल करनी चाहिए, यही क़ुर्बानी का असली मक़सद है। ★★★

★ दारूल उलूम अलीमिया जम्दा शाही बस्ती, (यूपी)

नफ़्ली सदक़ात के फ़ज़ाइल व बरकात

इस्लाम ने हर इन्सान को अपनी और अपने ख़ानदान की ज़रूरियाते ज़िन्दगी को पूरी करने के लिये ह़लाल रोज़ी कमाने का हुक्म दिया और मालदारों को अपने ग़रीब और मुह़ताज रिश्तेदारों की किफ़ालत करने का जिम्मेदार बनया, ताकि इस्लामी मुआ़शरे में रहने वाला हर इन्सान ख़ुशह़ाली के साथ ज़िन्दगी बसर कर सके। लेकिन हर शख़्स के रिश्तेदार ख़ुशह़ाल नहीं होते इसलिए ऐसे ग़रीबों, यतीमों, बेवाओं, उम्र रसीदा और बे सहारा लोगों की देख भाल और परवरिश के लिय इस्लाम ने क़ौमे मुस्लिम के मालदारों पर लाज़िम किया कि वह अपनी ज़रूरतें पूरी करने के बाद बचे हुए माल व दौलत में से कुछ ह़िस्सा निकाल कर उन ग़रीबों और मिस्कीनों को दें ताकि उन्हें भी अपनी ज़रूरियात पूरी करने और मुआ़शरे में रहकर अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारने का मौक़ा मिल सके। इस बात को अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआ़ने मजीद में यूँ बयान फ़रमाया हैः ''और उनके मालों में ह़क़ था मंगता और बे नसीब का (अज़्ज़ारियातः 19) इसी ह़क़ को फ़िक़्ह की ज़बान में ''सदक़ा'' कहा जाता है।

अल्लाह पाक ने क़ुरआ़ने मजीद में कई जगहों पर सदक़ा व ख़ैरात करने की ताकीद फ़रमाई है और उसे मिसालों और कहावतों के ज़रिया बयान फ़रमाया है ताकि लोगों के अन्दर ख़ैरात करने का जज़्बा पैदा हो। अल्लाह तआ़ल इरशाद फ़रमाता हैः

(1) **तर्जुमाः** और जो लोग अपने माल अल्लाह की ख़ुशी चाहने के लिए और अपने दिलों को साबित रखने के लिये ख़र्च करते हैं, उनकी मिसाल उस बाग़ की तरह़ है जो किसी ऊँची ज़मीन पर हो, उस पर ज़ोरदार बारिश पड़ी तो वह बाग़ दुगना फल लाया, फिर अगर ज़ोरदार बारिश न पड़े तो हल्की सी फुवार ही काफ़ी है और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है। (अल-बक़राः 268)

इस आयते करीमा में उन लोगों की मिसाल बयान की गई है जो सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी पाने के लिये और अपने दिल को इस्तक़ामत देने लिये इ़ख़्लास के साथ सदक़ा करते हैं कि जिस तरह़ ऊँची जगह की बेहतरीन ज़मीन का बाग़ हर ह़ाल में ख़ूब फल देता है चाहे बारिश कम हो या ज़्यादा, ऐसे ही मुख़्लिस मोमिन का सदक़ा कम हो या ज़्यादा अल्लाह तआ़ला उसको बढ़ाता है।

सदक़ा करने के फ़ायदेः अल्लाह की राह में ख़ैरात करने के कई फ़ायदे हैं।

(1) **सदक़ा देने से नफ़्स की पाकीज़गी ह़ासिल होती हैः** अल्लाह पाक फ़रमाता हैः ''ऐ मह़बूब! उनके माल में से सदक़ा क़ुबूल करो जिससे तुम उन्हें सुथरा और पाकिज़ा कर दो। (तौबाः 1.3)

(2) सदक़ा माल को बढ़ाता हैः क़ुरआ़ने पाक में है। ''बेशक अल्लाह सूद को मिटाता है और सदक़ात को बढ़ाता है।'' (अल-बक़रा:276)

(3) सदक़ा से गुनाह मिटते हैंः ह़दीसे पाक में है। ''सदक़ा गुनाह को ऐसे मिटा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है।'' (तिर्मिज़ी शरीफ़)

(4) सदक़े का माल अल्लाह के पास जमा रहता हैः अल्लाह पाक का इरशाद हैः ''और जो कुछ भलाई (सदक़ा) तुम आगे भेजोगे उसे अल्लाह के पास मह़फ़ूज़ पाओगे। (अल-बक़राः 110)

(5) सदक़ा से अल्लाह की नाराज़गी दूर होती हैः हुज़ूर ﷺ फ़रमाते हैंः ''छुपाकर सदक़ा देना अल्लाह के ग़ज़ब को कम कर देता है।'' (तिर्मिज़ी शरीफ़)

(6) सदक़ा इन्सान को बुरी मौत से बचाता हैः ह़दीसे पाक में हैः ''पोशीदगी का सदक़ा बुरी मौत से बचाता है।'' (तिर्मिज़ी शरीफ़)

मगर सदक़ात व ख़ैरात करने से यह सब फ़ायदे उस वक़्त ह़ासिल होंगे जब इख़्लास के साथ सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी ह़ासिल करने के लिए सदक़ा किया जाए, वरना यही सदक़ा कभी कभी अज़ाब का सबब बन जाता है। जैसे कोई शख़्स सिर्फ दिखावे या अपनी शोहरत के लिए ख़ैरात करे तो ऐसी सदक़ा सवाब के बजाए अज़ाब का सबब बन जाता है। इस बारे में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से एक लम्बी ह़दीस मरवी है जिसका एक ह़िस्सा यह है कि क़यामत के दिन एक सख़ी आदमी को लाया जायेगा, उसे अल्लाह की नेमतों की पहचान कराई जायेगी, वह उन्हें पहचानेगा, फिर उससे पूछा जायेगा कि तुमने इस नेमत को कैसे इस्तेमाल किया? वह कहेगाः ''ऐ अल्लाह! तूने जो दौलत मुझे दी थी उसमें से तेरी राह में ख़र्च किया।'' अल्लाह फ़रमायेगाः ''तूने सदक़ा इसलिए दिया ताकि लोग तुझे सख़ी कहें, लिहाज़ा दुनिया में लोगों ने तुझे दाता कह लिया, अब आख़िरत में तेरे लिये कुछ भी नहीं है।'' फिर फ़रिश्तों को हुक्म दिया जायेगा और उसे घसीटते हुए जहन्नम में डाल दिया जायेगा।

सदक़ा के आदाबः यहाँ पर सदक़े के कुछ आदाब लिखे जा रहे हैं, जिनकी रिआ़यत के साथ सदक़ा देना सवाब और नज़र अन्दाज़ कभी-कभी अज़ाब का बईस हो जाता है।

(1) अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिए सदक़ा देना। अल्लाह पाक फ़रमाता हैः ''और तुम उसे (सदक़े को) अल्लाह की ख़ुशी ह़ासिल करने के लिए दो! (अल-बक़रहः 276)

(2) सदक़ा देने वाले पर एह़सान न जताना। एह़सान जताने से सदक़े का सवाब ख़त्म हो जाता है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः ''तुम एह़सान जताकर और तकलीफ़ पहुँचाकर अपने सदक़ात को बर्बाद न करो। (अल-बक़राः 265)

(3) अच्छी चीज़ अल्लाह की राह में देना। अल्लाह पाक फ़रमाता हैः ''ऐ ईमान वालो! तुम अपनी कमाई में से अच्छी चीज़ें अल्लाह की राह में ख़र्च करो। (अल-बक़राः 267)

(4) ख़ुशदिली से सदक़ा देना। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः ''माँगने वाले को न झिड़को।'' (अल-दुहाः 10)

सदक़ा छुपाकर दें या दिखाकर? इस बारे में अल्लाह का इरशाद हैः ''अगर ख़ैरात एलानिया दो तो वह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपाकर फ़क़ीरों को दो तो यह तुम्हारे लिए सबसे बेहतर है। (अल-बक़राः 271)

मुफ़स्सिरीने किराम फ़रमाते हैं कि सदक़ा चाहे फ़र्ज़ हो या वाजिब या नफ़्ल जब इख़्लास के साथ अल्लाह की रज़ा के बाक़ी पेज न० 53 पर देखें।

रास्तों के हुक़ूक़

इस्लाम अख़्लाक़ियात व आदाब का दीन है: इस्लाम एक मुकम्मल ज़ाब्ता-ए-ह़यात है, इस दीन ने ज़िन्दगी के हर शोबे में हमारी रहनुमाई फ़रमाई, मरीज़ की अयादत हो या बाहमी तआ़वुन व मुआ़मलात, बात चीत के आदाब हों या किसी से मेल जोल का तरीक़ा, घर में आने जाने के आदाब हों या रास्ते में चलने फिरने के तरीक़े, दीनी मुआ़मलात हों या दुनियावी, अलग़रज़ हर गोशा-ए-ज़िन्दगी में इस्लाम की रौशनी, क़ुरआ़न का नूर और सीरते नबवी ﷺ के चिराग़ रहनुमाई के लिये जगमगा रहे हैं। अच्छे अख़्लाक़ अम्बिया व सिद्दीक़ीन और अल्लाह के नेक बन्दों की सिफ़ात में से एक उम्दा सिफ़त है, इसके दुनिया व आख़िरत में बहुत अच्छे असरात मुरत्तब होते हैं और क़यामत के दिन मीज़ाने अ़मल में सबसे ज़्यादा वज़नी अ़मल, अच्छे अख़्लाक़ ही होंगे। हज़रत सय्यदना अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है, हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः ''क़यामत के दिन मोमिन के तराज़ू-ए-आमाल में अच्छे अख़्लाक़ से ज़्यादा वज़नदार कोई चीज़ नहीं होगी; क्योंकि अल्लाह तआ़ला बे-ह़या, बद-गो से नफ़रत फ़रमाता है।''

अख़्लक़ियात में से यह भी है कि रास्ते के आदाब व हुक़ूक़ की अदायेगी का ख़ास ख़्याल रखा जाए। हज़रत सय्यदना अबू सईद ख़ुद्री रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है, सरकारे दो आ़लम ﷺ ने फ़रमायाः ''रास्तों में बैठने से बचो'', लोगों ने अर्ज़ कीः इसके बिना चारा नहीं, रास्ते हमारे बैठने की जगह हैं, जहाँ हम इकट्ठा होकर आपस में बात चीत करते हैं। तब नबी-ए-करीम ﷺ ने फ़रमायाः ''जब तुम्हें बैठना ज़रूरी है तो फिर रास्ते का ह़क़ अदा किया करो।'' यानी ऐसा कोई काम न करो जिससे आने जाने वालों को तकलीफ़ या दुश्वारी हो और न ही कोई ऐसा अ़मल हो जो अख़्लाक़ियात से गिरा हो।

रास्ते के आदाब व अह़्कामः नज़रें नीची रखना, तकलीफ़ देने वाली चीज़ें दूर करना, सलाम का जवाब देना, अच्छी बात का हुक्म देना और बुरी बात से रोकना रास्ते के आदाब से है। राह चलते और रास्ते में बैठते वक़्त हमें अपनी निगाहों की ह़िफ़ाज़त करनी है, बिना ज़रूरत इधर उधर देखने से बचना है, क्योंकि अक्सर औक़ात यह अ़मल बद निगाही के साथ-साथ ह़ादसात का बाइस भी बन जाता है, लिहाज़ा आ़फ़ियत इसी में है कि निगाहें कुछ नीची रखी जायें। इस बात का हुक्म देते हुए अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः ''ऐ ह़बीब! मुसलमान मर्दों को हुक्म दीजिए की अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करें, यह उनके लिये बहुत सुथरा है, यक़ीनन अल्लाह तआ़ला को उनके कामों की ख़बर है और मुसलमान औरतों को भी हुक्म दीजिए कि वह अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करें।''

रास्ते में बिना ज़रूरत बैठने से कभी-कभी गुज़रने वालों को तकलीफ़ व मुश्किलात का सामना करना पड़ता है, इसलिए इससे बचने का हुक्म फ़रमाया गया है। रास्ते के हुकूक़ की वज़ाहत करते हुए। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः ''नज़र नीची रखना, किसी को तकलीफ़ देने से बचना, सलाम का जवाब देना, अच्छी बात का हुक्म देना और बुरी बात से रोकना।''

रास्ते के आदाब में से है कि अगर कोई तकलीफ़ देने वाली चीज़ हो तो उसे दूर कर दिया जाए। यह अ़मल हमारे लिये निजात का सबब बन सकता है। रसूलुल्लाह ﷺ इरशाद फ़रमाते हैंः ''एक आदमी मुसलमानों के रास्ते से काँटेदार टहनी दूर कर देने के सबब जन्नत में दाख़िल हो गया।''

किसी की सही रहनुमाई करना भी रास्ते के आदाब में से है। हज़रत सय्यदना अबूज़र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः ''भटके हुए को रास्ता बताना भी तुम्हारे लिये सदक़ा है।''

जब हम घर से निकल कर सड़क पर आते हैं, तो हम भी ट्रैफ़िक का हिस्सा बन जाते हैं, उस वक़्त हम पर भी ट्रेफ़िक़ के रूल्स (क़वानीन) की पाबन्दी करना, इत्मिनान, नज़्म व ज़ब्त और वक़ार के साथ चलना लाज़िम व ज़रूरी है। वक़ार व आहिस्तगी इख़्तियार करने का दर्स देते हुए हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः ''वक़ार व आहिस्तगी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है और जल्द बाज़ी शैतान की तरफ़ से है।'' लिहाज़ा रास्ते के इन आदाब का ख़्याल रखना हर एक पर लाज़िम है।

ड्राईवर के अख़्लाक़ियातः जब बन्दा सफ़र करता है, चाहे वह मुसाफ़िर हो या ड्राईवर, उस पर लाज़िम है कि दौराने सफ़र सबके साथ हुस्ने सुलूक का मुज़ाहरा करे। अपनी ज़ात से किसी को तकलीफ़ व नुक़सान न पहुँचने दे। ख़ुसूसन ड्राईवर हज़रात जो दौराने सफ़र सवारियों के निगहबान होते हैं, उन्हें हुस्ने अख़्लाक़ का भरपूर मुज़ाहरा करना निहायत ज़रूरी है। मुसाफ़िरों को परेशानी या तकलीफ़ न देना, उनके हुकूक़ का ख़्याल रखना, उनसे अच्छे अख़्लाक़ से पेश आना और तमाम नमाज़ें वक़्त पर अदा करना और करवाना बहुत ज़रूरी है। हक़ तलफ़ी की सूरत में इनसे भी मुआ़मलात की पूछताछ होगी। हमारे प्यारे आक़ा ﷺ ने फ़रमायाः ''तुममें से हर एक ज़िम्मेदार है और हर एक से उसके मातहतों के बारे में पूछा जायेगा।''

ड्राईवर हज़रात तेज़ रफ़्तार और ग़लत दिशा में गाड़ी चलाने से बचें, कि यह आम तौर पर हलाकत व नुक़सान को दावत देना है। गाड़ी चलाने में भी मियाना रवीय्या इख़्तियार करें, ड्राईवर हज़रात पर लाज़िम है कि मुल्क के क़ानून के मुताबिक़ गाड़ी चलाएँ। मुसाफ़िरों को सहूलत फ़राहम कर दें, क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी, तल्ख़-कलामी व बद-अख़्लाक़ी और बेजा सख़्ती के बजाए हुस्ने सुलूक, मुहब्बत व प्यार का रवय्या, बाहमी इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद और नर्मी व आसानी का मामला रखें। हज़रत सय्यदना अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है, नबी-ए-करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः ''जिसको नर्मी से हिस्सा मिला उसे भलाई से भरपूर हिस्सा मिला और जिसे नर्मी से महरूम किया गया वह भलाई से महरूम कर दिया गया है।'' लिहाज़ा ड्राईवर हज़रात को ख़ास तौर पर नर्म-दिली और अच्छे अख़्लाक़ से पेश आना बेहद ज़रूरी है।

रास्ते के आदाब को जानना हम सब की ज़िम्मेदारी है: हम में से हर एक की यह ज़िम्मेदारी होती है कि ट्रैफ़िक क़वानीन को अच्छी तरह जानें, ताकि रास्तों का तह़फ़्फ़ुज़ व अमन बरक़रार रहे और लोगों के जान व माल महफ़ूज़ रहें। ट्रेफ़िक पुलिस से भी अ़मली तौर पर भरपूर तआ़वुन का सुबूत देना है, अल्लाह पाक फ़रमाता है: ''भलाई और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो।'' ट्रैफ़िक क़वानीन की पासदारी करने वाला गोया अपने जान, माल, औलाद और पूरे समाज की ह़िफ़ाज़त करता है, जबकि इन क़वानीन को पामाल करने वाला शख़्स, रास्ते के अमन व अमान को ख़राब करने और समाज को नुक़सान पहुँचाने के दरपै रहता है। अक़लमन्द वही है जो ख़ुद अपना, अपने अहल-औ-अ़याल (घर वालों) और मुल्क व क़ौम का मुह़ाफ़िज़ हो, लिहाज़ा हम सबकी ज़िम्मेदारी है कि ट्रैफ़िक अ़लामत व इशारात से आगाही ह़ासिल करके उसके मुताबिक़ सफ़र करें; ताकि मुश्किलात व नुक़सानात का सामना न हो और दूसरों के लिये भी परेशानी का बाइस न बनें। ह़बीबे करीम ﷺ ने फ़रमाया: ''कामिल मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान सलामत रहें।'' लिहाज़ा हमें मुल्क व क़ौम को परेशानी व तकलीफ़ में डालने की बजाए सहूलत व आसानी पैदा करना चाहिए।

हम सब पर ज़रूरी है कि दौराने सफ़र ग़ुस्सा और जल्दबाज़ी से भी परहेज़ करें और सुकून व इत्मिनान के साथ चलें। हुज़ूरे अकरम ﷺ ने अरफ़ात से मुज़दल्फ़ा की तरफ़ जाते हुए फ़रमाया: ''ऐ लोगो! इत्मिनान व सुकून से चलो!'' लिहाज़ा जब सड़क पर रश (भीड़) हो, तो चलने में आहिस्तगी इख़्तियार करना और जल्दबाज़ी से बचना बहुत ज़रूरी है।

ऐ अल्लाह! हमें इस्लामी अख़्लाक़ियात अपनाने, रास्ते के आदाब व अह़काम सीखने और उन पर अ़मल की तौफ़ीक व हिम्मत अ़ता फ़रमा। हमें और हमारे ड्राईवर हज़रात को हुस्ने अख़्लाक़ का मुज़ाहरा करने, मुसाफ़िरों की परेशानी व तकलीफ़ को दूर करने, बूढ़ों, बीमारों और औरतों का ख़्याल रखने, नमाज़ों को वक़्त पर अदा करने और करवाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। (आमीन)

★★★

★ मुफ़्ती-ए-ह़नफ़िया वज़ारते अवक़ाफ़ अबू धाबी (यू.ए.ई)।

ख़ुश ख़बरी

ख़ानक़ाहे बरकातिया के मुतवस्सेलीन और मुह़िब्बीन के लिए ख़ुश-ख़बरी है कि अलह़म्दुल्लिलाह ख़ानक़ाह के ज़ेरे इन्तज़ाम चलने वाले इदारे अल-बरकात पब्लिक स्कूल, अलीगढ़ और मारहरा पब्लिक स्कूल, मारहरा शरीफ़ का रिज़ल्ट इस साल भी 100 फ़ीसद रहा और सभी तलबा अच्छे नम्बरों से कामयाब हुए। क़ारेईने किराम से गुज़ारिश है कि इन इदारों की कामयाबी के लिए अल्लाह की बारगाह में ख़ुसूसी दुआ फ़रमायें। (इदारा)

ख़ुश ख़बरी

उर्से क़ासमी बरकाती 2016 ई० की तारीख़ों का ऐलान

क़ारेईने किराम के लिए ख़ुश ख़बरी है कि इस साल उर्से क़ासमी बरकाती 11,12,13 नवम्बर 2016 ई० बरोज़ जुमा, सनीचर और इतवार को मुनाक़िद होगा। (इंशाअल्लाह) आप लोगों से गुज़ारिश है कि इस उर्से पाक में शरीक होकर बुज़ुर्गों के फ़ैज़ान से मालामाल हों।

तर्बियते औलाद के इस्लामी उसूल

औलाद अल्लाह तआ़ला की अज़ीम नेमत है। उनसे वालिदैन, समाज और ख़ानदान के तमाम लोगों की नेक उम्मीदें लगी होती हैं कि वह समाज का क़ाबिले फ़ख़्र और नामवर आदमी बने, जिससे समाज और क़ौम का नाम रौशन हो और दूसरों के लिये बेहतरीन नमूना बने। इसलिए इस्लाम ने तर्बियते औलाद के ऐसे वाज़ेह़ उसूल बयान किये हैं कि उनके ह़िसाब से अगर बच्चों की तर्बियत की जाए तो यही बच्चे दुनिया में वालिदैन के लिये अमन व सुकून का ज़रिया और मरने के बाद निजात का सबब बनेंगे।

तर्बियत की शुरूआ़तः बच्चों के ग़ैर मुह़ज़्ज़ब और ना फ़रमान होने की सबसे बड़ी वजह यह है कि बच्चा जब 10 या 12 साल का हो जाता है तब हम उसकी तर्बियत की तरफ़ ध्यान करते हैं। हालाँकि इस्लाम के ह़िसाब से और माहिरे नफ़सिय्यात की रिसर्च के मुताबिक़ बच्चों की तर्बियत की शुरूआ़त माँ के पेट से ही हो जाती है। यहाँ तक कि माहेरीन ने बयान किया है कि जब बच्चा माँ के पेट में 3 या 4 महीने का हो जाता है तो उसमें सुनने की ताक़त पैदा हो जाती है और सबसे पहले वह माँ के दिल के धड़कने की आवाज़ सुनता है। ऐसी ह़ालत में अगर शौहर अपनी बीवी से ग़ुस्से में और ऊँची आवाज़ में बात करता है, तो बच्चा मग़बूतुज़्ज़ेहन (कमज़ोर ज़ेहन का) पैदा होता है, इसलिए इस ह़ालत में शौहर अपनी बीवी से आहिस्ता और संजीदगी से बात करे।

यहाँ कुछ इस्लामी तरीक़े बयान किये जाते हैं, जिन पर अ़मल करके आप अपने बच्चों की अच्छी तर्बियत कर सकते हैं और उन्हें समाज की पुर असर शख़्सियत बना सकते हैं।

1. अल्लाह तआ़ला देखने और सुनने वाला हैः वालिदैन की सबसे पहली ज़िम्मेदारी है कि वह बच्चों को बताऐं कि बेटा! एक ज़ात ऐसी है, जो तमाम ऐबों से पाक है। तमाम ख़ूबियों का मालिक है, जिसने सिर्फ़ हमें तुम्हें ही नहीं बल्कि सारी काएनात को पैदा किया। वह आँख, कान से पाक है लेकिन छोटी सी छोटी चीज़ों को देखता है और धीमी सी धीमी आवाज़ों को सुनता है, यहाँ तक कि हम दिल से जो सोचते हैं उसे भी जानता है, उससे कोई चीज़ ढकी छुपी नहीं है। बेटे! जानते हो वह कौनसी ज़ात है? वह अल्लाह तआ़ला की ज़ाते पाक है। मरने के बाद हम सबको उसकी बारगाह में ह़ाज़िर होना है। अगर हमारे पास अच्छे आमाल होंगे तो वह अपने फ़ज़्ल व करम से हमें जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा, जहाँ आराम ही आराम है, तकलीफ़ का नाम व निशान तक नहीं और अगर हमारे आमाल बुरे होंगे तो वह अपने अदल-ओ-इंसाफ़ से जहन्नम में दाख़िल फ़रमायेगा, जहाँ तकलीफ़ ही तकलीफ़ होगी।

इसका सबसे बड़ा फ़ायदा यह होगा कि बच्चा लोगों के सामने तो दर किनार छुपकर भी गुनाह करने

से डरेगा, क्योंकि उसका सीना अल्लाह के डर और ख़ौफ़ से भरा होगा।

2. आ़शिक़े रसूल ﷺ बनाऐः ह़दीसे नबवी ﷺ के मुताबिक़ वालिदैन की ज़िम्मेदारी यह भी है कि वह अपने बच्चों के दिलों में इश्क़े रसूल ﷺ डालें, जैसा कि रह़मते आ़लम ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः

तुम अपनी औलाद को तीन चीज़ें सिखाओः (1) रसूले अकरम ﷺ की मुह़ब्बत, (2) क़ुरआ़न से लगाव और (3) मेरे अहले बैत से मुह़ब्बत। (तिबरानी)

इसका आसान तरीक़ा यह है कि अपने बच्चों को मीलाद के वाक़यात, वाक़या-ए-मेराज, चाँद के दो टुकड़े करना, सूरज को पलटा देना और दुनिया में तशरीफ़ लाते ही अपनी उम्मतियों को याद करना, इन जैसे वाक़यात व मुआ़ज्ज़ात को बतायें, इस तरह़ बच्चों के दिलों में रसूले पाक ﷺ की मुह़ब्बत घर कर जाएगी, साथ ही बच्चों को मज़ा भी आएगा।

इसका फ़ायदा यह होगा कि बाद में बच्चे अगर कोई फ़ुह़श (अशलील) और अख़्लाक़ से गिरी हुई कोई ह़रकत करेंगे तो आपको सिर्फ़ इतना कहना काफ़ी होगा कि ''बेटे! यह काम मत करो वरना हुज़ूर ﷺ नाराज़ हो जायेंगे।'' अब बच्चे को एह़सास होगा कि वह आक़ा नाराज़ हो जायेंगे, जिन के वाक़यात बचपन में हम सुना करते थे, इसलिए वह अपनी ह़रकत से बाज़ आ जायेगा।

3. लोगों का अदब व एह़तराम करना सिखायेंः वालिदैन को चाहिए कि वह घर, परिवार और समाज के तमाम लोगों का अदब करना सिखायें। उन्हें बतायें कि बच्चो! बुज़ुर्गों ने बयान किया है कि ''बा-अदब बा-नसीब बे-अदब बे-नसीब'', इसलिए अगर तुम कामयाब होना और सबकी नज़रों में प्यारा बनना चाहते हो तो अपने से हर बड़े शख़्स की इ़ज़्ज़त करो, उनका कहना मानों और उनसे बद-तमीज़ी से पेश न आओ।

इसके अलावा वालिदैन को चाहिए कि वह घर के तमाम लोगों के साथ मिल जुल कर रहें और बच्चों पर घर के हर फ़र्द की क़द्र व क़ीमत और अहमियत को वाज़ेह़ करें। रात में सोते वक़्त अल्लाह के वलियों और नेक बन्दों के वाक़यात व करामात बयान कर के उनकी मुह़ब्बत व अक़ीदत पैदा करें।

4. बच्चों के सामने झूट न बोलेंः झूट एक ऐसा ना पसन्दीदा अ़मल है, जिससे हर इंसान नफ़रत करता है। इसलिए वालिदैन को चाहिए कि वह हरगिज़ झूट न बोलें, ख़ास तौर से बच्चों के सामने तो बिल्कुल न बोलें, क्योंकि अगर बच्चों के सामने झूट बोलेंगे तो बच्चों में निफ़ाक़ जैसी बीमारी जन्म लेगी और वह वालिदैन से नफ़रत करने लगेंगे। ऐसी सूरत में बच्चा सोचेगा कि झूट बोलने में कोई हरज नहीं है वरना मेरे वालिदैन ज़रूर उससे बचते। इस तरह़ बच्चा भी कुछ दिनों में झूट का आदी हो जाता है।

5. बच्चों को ख़ुश रखेंः ह़दीसे पाक में है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः

''जन्नत में एक दरवाज़ा ''अल-फ़रह़'' नाम का है, उससे वही लोग दाख़िल होंगे, जो अपने बच्चों को ख़ुश रखते हैं।''

बच्चों को ख़ुश रखना हुज़ूर ﷺ की सुन्नते करीमा है। बच्चों को ख़ुश रखने के लिये उनके

अच्छे कामों पर उनकी तारीफ़ करके हौसला अफ़ज़ाई करें, इससे बच्चों के दिलों में वालिदैन की मुहब्बत मज़ीद बढ़ेगी।

6. बद-दुआ़ न दें: वालिदैन को अपने बच्चों के लिये बद-दुआ़ करने से बचना चाहिए, क्योंकि ह़दीस के मुताबिक़ बच्चों के ह़क़ में वालिदैन की दुआ़ रद नहीं की जाती। ह़ज़रत इमाम ग़ज़ाली अलैहिर्रह़मा फ़रमाते हैं:

"एक शख़्स अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह़मतुल्लाह अलैहि की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और उसने अपने किसी बेटे (के नाफ़रमान होने) की शिकायत की। आपने फ़रमायाः तुम ने उसके ख़िलाफ़ बद-दुआ़ तो नहीं की? उसने कहाः की है। फ़रमायाः तुमने उसे ख़राब (बरबाद) कर दिया।" (एह़याउल उलूमः जि० 2, पे० 503)

7. खेलने का मौक़ा दें: वालिदैन को चाहिए कि वह बच्चों को खेलने की छूट दें, बल्कि ख़ुद भी उनके साथ खेलें। लेकिन यह बात भी ज़ेहन में रहे कि वालिदैन अपने रोब व दबदबे के साथ रहें, दोस्त न बनें बल्कि दोस्ताना रवय्या रखें, ताकि बच्चे को मह़सूस हो कि मेरे माँ-बाप मुझसे इतनी मुह़ब्बत करते हैं कि अपने क़ीमती वक़्तों में से कुछ वक़्त निकाल कर मेरे साथ खेलते हैं।

बच्चों के साथ खेलना रह़मते आ़लम ﷺ की सुन्नत है, जैसा कि ह़दीस में है, ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बयान किया कि एक मर्तबा रसूले पाक ﷺ अ़ब्दुल्लाह, उबैदुल्लाह और अब्बास के बहुत से बच्चों को एक लाईन में खड़ा करके फ़रमायाः जो पहले मेरी तरफ़ दौड़ कर आयेगा, उसे इतना ईनाम मिलेगा। चुनाँचे सारे बच्चे दौड़ते हुए आए और ह़ुज़ूर ﷺ की पुश्ते मुबारक और सीना-ए-पाक पर आकर गिरे। आप ﷺ ने उन सबको बोसा दिया और अपने सीना-ए-मुबारक से चिमटा लिया। (मुस्नदे इमाम अह़मदः 3/35, ह़दीसः 1836)

मज़कूरा ह़दीस से जहाँ यह बात मालूम हुई कि बच्चों की जिस्मानी तर्बियत के लिये दौड़ के मुक़ाबले करवाना चाहिए वहीं यह भी मालूम हुआ कि मुक़ाबले में शरीक तमाम बच्चों को ईनाम देना चाहिए ताकि किसी की दिल-शिकनी न हो, जैसा कि ह़ुज़ूर ﷺ ने सारे बच्चों के साथ एक जैसा मामला फ़रमाया।

8. बात चीत करने का मौक़ा दें: बच्चे के अन्दर जब थोड़ी सूझ बूझ पैदा हो तो वालिदैन को चाहिए कि बच्चों को बतायें कि तुम्हें जब भी मेरी ज़रूरत हो, किसी चीज़ के बारे में कुछ पूछना हो तो बिना झिझके और बिना डरे मुझसे पूछ सकते हो। क्योंकि अगर बच्चों को इसकी आज़ादी नहीं दी गई तो वह वालिदैन से मशवरा लेने और बात करने से कतरायेंगे और जब वह कुछ बड़े होंगे तो अपने दोस्तों से मशवरा करेंगे और उनके दोस्त अच्छे बुरे दोनों होंगे, अब अगर बुरे दोस्तों ने ग़लत मशवरा दिया तो आपके बच्चे नादानी में उस पर अ़मल कर के अपनी ज़िन्दगी बरबाद कर लेंगे।

9. एक तरफ़ा बात सुनकर फ़ैसला न करें: कभी-कभी बच्चे घर में एक दूसरे से लड़ते हैं और फ़ैसले के लिये अम्मी या अब्बू के पास आते हैं। इस मौक़े पर वालिदैन में से हर एक को चाहिए कि दोनों की बात सुनकर फ़ैसला करें। ऐसा न करने की सूरत में

ह़सद, बुग़्ज़ और कीना जैसी ख़तरनाक बीमारियाँ बच्चों में जन्म ले लेती हैं।

इस मौक़े पर वालिदैन को इन्तिहाई अक़लमन्दी के साथ क़दम उठाना पड़ेगा, ताकि बच्चों में एह़सास पैदा हो कि अगर हम कोई ग़लती करेंगे या झगड़ा करेंगे तो अम्मी अब्बू बुलाकर पूछताछ करेंगे और ज़िल्लत व रूसवाई भी उठानी पढ़ेगी।

10. बच्चों को ख़ुद एतेमाद बनायें: वालिदैन के लिये ज़रूरी है कि वह अपने बच्चों में ख़ुद-एतेमादी पैदा करें, क्योंकि बे एतेमादी बच्चों को वालिदैन से दूर करने, बुरी आ़दतों को अपनाने और नफ़सिय्याती तंगी (Psychological Distress) का सबब बन जाता है।

बे-एतेमादी के असबाब: बच्चों में बे ऐतमादी पैदा होने के चन्द असबाब हैं: 1. छोटी-छोटी ग़लतियों पर बच्चों को ज़लील व रूसवा करना, 2. बच्चों के बीच ना-बराबरी करना। इससे बच्चों में ह़सद, कीना, ख़ौफ़ व दहशत, बे-शर्मी और तन्हाई पसन्दी जैसी बुरी आ़दतें पैदा हो जाती हैं, 3. यतीम होना, 4. घर में फ़क्र व फ़ाक़ा (ग़रीबी) का माह़ौल होना, 5. जिस्मानी कमज़ोरी होना, 6. बात-बात पर बिना ज़रूरत बच्चों को टोकते रहना, इससे बच्चों में शर्मिन्दगी और बुज़दिली जैसी ख़तरनाक बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं।

11. बुरी सोह़बत से बचायें: वालिदैन की ज़िम्मेदारियों में से एक अहम ज़िम्मेदारी यह भी है कि वह बच्चों को गंदे, आवारा और अनपढ़ लड़कों के साथ रहने और उनके साथ खेलने और उठने बैठने से रोकें। इसका तरीक़ा यह है कि वालिदैन अपने बच्चों के लिये वक़्त निकालें और कुछ वक़्त उनके साथ गुज़ारें और अच्छे और शरीफ़ बच्चों के साथ खेलने और उठने बैठने का हुक्म दें, ताकि बच्चों को कुछ सीखने और दिल बहलाने का मौक़ा हाथ आए।

रसूले रह़मत ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "हर शख़्स अपने दोस्त के दीन (तौर तरीक़े) पर होता है, लिहाज़ा हर शख़्स को ग़ौर व फ़िक्र करना चाहि कि वह किसको दोस्त बना रहा है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

इस ह़दीस के मुताबिक़ हर शख़्स को अच्छे और नेक साथी का चुनाव करना चाहिए, क्योंकि अगर उसका दोस्त नेक होगा तो वह भी नेक हो जायेगा और बुरा होगा तो ख़ुद भी बुरा हो जायेगा।

12. प्यार व मुह़ब्बत का इज़हार करें: बच्चों से प्यार व मुह़ब्बत करना, उनको चूमना और उनकी दिल-जोई के लिये उनके साथ खेलना हुज़ूर ﷺ की प्यारी सुन्नत है।

ह़दीसे पाक में है, हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि एक मर्तबा हज़रत अक़रा बिन ह़ाबिस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने देखा कि हुज़ूरे अकरम ﷺ हज़रत ह़सन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को चूम रहे हैं। उन्होंने अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह ﷺ मेरे 10 बच्चें हैं लेकिन मैंने तो उनमें से किसी को कभी नहीं चूमा। आपने फ़रमाया: जो लोगों पर रह़म नहीं करता, उस पर रह़म नहीं किया जाता। (बुख़ारी शरीफ़)

एक दूसरी रिवायत में है, "अगर अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे दिल से रह़म को निकाल लिया है, तो इसमें मेरा क्या क़ुसूर है।"

13. बच्चों के सामने झगड़ा न करें: किसी से

लड़ना झगड़ना यूँही बुरा है, लेकिन बच्चों के सामने माँ-बाप का झगड़ना ज़हरे क़ातिल से कम नहीं है, इसका नतीजा यह होता है कि बच्चे वालिदैन से नफ़रत करने लगते हैं और खुद उनके अन्दर लड़ने झगड़ने की आ़दत पैदा हो जाती है।

14. ग़लती पर फ़ौरन न डाँटें: अगर बच्चे कोई ग़लती करें तो वालिदैन बच्चों को फ़ौरन न डाँटें। बच्चों को मोहलत दें, फिर अगर ज़रूरत हो तो धीमी आवाज़ में डाँटे वरना छोड़ दें।

सूफ़िया-ए-किराम फ़रमाते हैं कि बच्चों को ग़ुस्से में कभी न डाँटें, क्योंकि इस ह़ालत में आवाज़ तेज़ होगी, जिससे बच्चे की नफ़सियात पर मन्फ़ी असरात मुरत्तब होंगे।

15. ह़लाल रोज़ी खिलायें: बाप पर बच्चों के हुक़ूक़ में से एक यह भी है कि बच्चों के लिये रिज़्क़े ह़लाल का इन्तज़ाम करें। अगर इसका एहतमाम न किया गया तो फ़रमाने रसूल ﷺ के मुताबिक़ मैदाने महशर में औलाद अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ करेगी "मौला! तू अगर आज मुझे अज़ाब देता है तो मेरा बाप भी इस अ़ज़ाब का ह़क़दार है, क्योंकि उसने मुझे ह़राम खिलाया था, जिसकी वजह से मैंने यह गुनाह किया है।"

16. बचपन से ही सख़्ती करें: वालिदैन पर ज़रूरी है बच्चों को उनकी ना-मुनासिब ह़रकतों पर सख़्ती से मना करें, न मानने पर मुनासिब सज़ा भी दें, लेकिन ख़्याल रहे कि 14,15 साल के बच्चों पर बेजा सख़्ती न करें और न उन्हें मारें, क्योंकि इस उम्र में बच्चों को मारने से बच्चे बाग़ी और शरीर हो जाते हैं। सोचते हैं कि अम्मी या अब्बू एक बार, दो बार या तीन बार आख़िर कब तक मारेंगे, इस तरह़ बच्चे ना फ़रमान और ढींट हो जाते हैं।

17. वालिदैन एक दूसरे का एहतराम करना सिखायें: माँ बच्चों को बताए कि बेटा जब तुम्हारे अब्बू घर आयें तो उन्हें सलाम किया करो और उनके अदब के लिये खड़े हो जाया करो, क्योंकि यह नेक बच्चों का तरीक़ा है, जैसा कि नबी-ए-करीम ﷺ जब अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के घर तशरीफ़ ले जाते तो वह आपकी ताज़ीम के लिये खड़ी हो जाती थीं।

इसी तरह़ वालिद बच्चों से कहे कि बेटा! अम्मी का कहना मानना, उनकी नाफ़रमानी कभी न करना, क्योंकि हमारे रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि "माँ के क़दमों तले जन्नत है।" इसलिए उनकी फ़रमाँबरदारी करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुमसे राज़ी हो जायेगा और तुम्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा।

इसमें दो राय नहीं कि औलाद पर उनके वालिदैन के कुछ हुक़ूक़ हैं, जिन्हें अदा करना उनकी ज़िम्मदारी है, लेकिन वालिदैन याद रखें कि अगर वह अपनी औलाद से अपने हुक़ूक़ पाने की तमन्ना रखते हैं तो उन पर ज़रूरी है कि पहले वह इस्लाम के बताए हुए उसूलों के मुताबिक़ अपने बच्चों की तरबियत करें। इसके बिना बच्चों से किसी भी तरह़ की उम्मीद रखना फ़ुज़ूल है। ★★★

★ **रौशन नगर, बड़ौदा, गुजरात।**
s.barkaati1274@gmail.com

इस्लाम और वतन की मुहब्बत

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हर इन्सान की घुट्टी में उलफ़त व मुहब्बत रखी है। लिहाज़ा एक अच्छे इन्सान के लिये ज़रूरी है कि वह प्यार व मुहब्बत का पैकर हो। जिसका दिल प्यार व मुहब्बत से ख़ाली हो उसमें इन्सानियत नहीं हो सकती और वतन से मुहब्बत तो एक ऐसा फ़ितरी जज़्बा है जो न सिर्फ़ इन्सान बल्कि तमाम जानदारों में पाया जाता है।

हुब्बे वतन का मफ़हूमः इन्सान जिस सर ज़मीन पर परवरिश पाता है, उसमें अपने रहने वाले लोगों से, उसके दरो दिवार से और वहाँ की फ़िज़ाओं से एक ख़ास क़िस्म की जज़्बाती वाबस्तगी हो जाती है, इसी वाबस्तगी और लगाव को ''हुब्बे वतन'' कहते हैं।

जिस जगह इन्सान अपनी आँखें खोलता है, ज़िन्दगी के दिन व रात गुज़ारता है, इल्म व हुनर सीखता है, निकाह़ के बाद एक नई ज़िन्दगी की शुरूआत करता है, उस जगह से कुछ ऐसी यादें वाबस्ता होती हैं जिन्हें भूलाना मुश्किल ही नहीं ना मुमकिन होता है और भला उस सरज़मीन को इन्सान कैसे भुला सकता है, जहाँ उसे दादा, दादी की यादें, माँ-बाप की शफ़क़तें, भाई बहन की मुहब्बत और दोस्त व अह़बाब का प्यार मिला हो।

वतन से मुहब्बत का सही अन्दाज़ा उसी वक़्त लगता है, जब किसी वजह से वतन छोड़ना पड़े। चुनाँचे जब कोई शख़्स मुल्क के किसी कोने में रोज़ी की तलाश में जाता है तो इतनी तकलीफ़ नहीं होती जितनी उस शख़्स को होती है जो मुल्क से बाहर रोज़ी रोटी ह़ासिल करने जाता है। इसकी सबसे बड़ी वजह यही है कि वतन की मुहब्बत इन्सान की फ़ितरत में होती है।

वतन से मुहब्बत के इस फ़ितरी जज़्बे का इस्लाम न सिर्फ़ एह़तराम करता है बल्कि वतन और वतन के लोगों के लिए ऐसा पुर अमन माह़ौल फ़राहम करता है जिसमें रह कर इन्सान अपने मुल्क की तरक़्क़ी के लिए, मुल्क के बाशिन्दों की फ़लाह़ व बहबूद और उनकी ख़ुशह़ाली के लिए कुछ कर सके।

हादी-ए-बरह़क़, पैग़म्बरे आ़ज़म ﷺ जो इन्सानों की रहनुमाई के लिये इस दुनिया में तशरीफ़ लाए थे ने ज़िन्दगी के हर शोबे में और हर हर क़दम पे हमारी रहनुमाई फ़रमाई। यूँही वतन से मुहब्बत कर के यह पैग़ाम दिया कि मुसलमान अपने मुल्क का वफ़ादार होता है, मुल्क का मुह़ाफ़िज़ होता है और मुल्क से मुहब्बत करने वाला होता है। चुनाँचे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने महबूब ﷺ की वतन से मुहब्बत का बयान क़ुरआ़ने करीम में यूँ किया हैः

तर्जुमाः बेशक जिसने तुम पर क़ुरआ़न फ़र्ज़ किया वह तुम्हें फेर ले जायेगा जहाँ तुम फिरना चाहते हो। (अल-क़ससः 85)

इस आयते करीमा की तफ़सीर करते हुए अल्लामा इब्ने कसीर फ़रमाते हैंः

ज़िह़ाक रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर ﷺ मक्का से निकले, अभी ज़ह़फ़ा में ही थे कि आपके दिल में मक्के का शौक पैदा हुआ, जिस पर यह आयत उतरी और आपसे वादा हुआ कि आप वापस मक्का पहुँचाये जायेंगे।

हुज़ूर ﷺ ने हर तरह़ की मुसीबत बर्दाश्त की मगर अपने वतन से दूर जाने के लिए कभी नहीं सोचा। मगर जब कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन का ज़ुल्म व सितम ह़द से बढ़ गया और वतने अज़ीज़ को छोड़ने की बारी आई तो चेहरे पे उदासी थी, दिल मग़मूम था और ज़बाने मुबारक पे जो कलेमात जारी थे उनके लफ़्ज़ लफ़्ज़ से वतन की उलफ़त व मुह़ब्बत और प्यार झलक रहा है। आपने मक्का-ए-मुकर्रमा को मुख़ातब करते हुए फ़रमायाः ''तू कितना प्यारा शहर है, तू मुझे किस क़दर मह़बूब है, अगर मेरी क़ौम मुझे न निकालती तो मैं तेरे सिवा किसी दूसरे मक़ाम पर सुकूनत इख़्तियार न करता।'' (तिर्मिज़ी)

नबी-ए-अकरम ﷺ को मक्का मुअ़ज़्ज़मा से दिली लगाव था, जब आप मदीना मुनव्वरा हिजरत कर गए और उसको अपना मसकन और ठिकाना बना लिया तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में दुआ़ कीः ''ऐ परवरदिगार! हमारे दिल में मदीना की मुह़ब्बत बैठा दे जैसे हम मक्का से मुह़ब्बत करते हैं, बल्कि उससे भी ज़्यादा मुह़ब्बत पैदा फ़रमा, मदीने की आबो हवा दुरूस्त फ़रमा और हमारे लिए मदीने के ''साअ़ और मुद'' (अनाज वग़ैरह नापने के दो बरतन) में बरकत अ़ता फ़रमा।'' (बुख़ारी शरीफ़)

इस ह़दीसे पाक से वतन की मुह़ब्बत का बख़ूबी पता चलता है। नीज़ इसकी इक़्तिसादी तरक़्क़ी और आबो हवा की दुरूस्तगी और सेह़त व आ़फ़ियत की बह़ाली की रग़बत भी ज़ाहिर होती है, जिससे मालूम हुआ कि एक मुसलमान के लिए वतन की मुह़ब्बत फ़ितरी तक़ाज़ा भी है और दीने इस्लाम का ह़िस्सा भी।

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी रह़मतुल्लाह अलैहि ह़ज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत करते हैः ''जब रसूलुल्लाह ﷺ किसी सफ़र से तशरीफ़ लाते तो मदीने की ऊँची मन्ज़िलें देखकर ख़ुश होते और अपनी सवारी को तेज़ी से दौड़ाते (उँटनी या अगर कोई दूसरा जानवर होता तो उसे ह़रकत देते।)'' (बुख़ारी शरीफ़)

इस ह़दीसे पाक की वज़ाहत करते हुए अल्लामा बदरूद्दीन ऐनी रह़मतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि इस ह़दीसे पाक में मदीना शरीफ़ की फ़ज़ीलत और वतन से मुह़ब्बत पर वाज़ेह़ दलील है।

पर्दे का हुक्म नाज़िल होने से पहले ह़ज़रत असील ग़ेफ़ारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ह़ज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के पास तशरीफ़ लाए तो आपने असील ग़ेफ़ारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से पूछा कि मक्के को कैसा पाया? तो उन्होंने मक्का मुअ़ज़्ज़मा की कुछ ख़ूबियाँ बयान कीं, इतने में हुज़ूर तशरीफ़ लाए और आपने भी मक्का के सिलसिले में पूछा तो असील ग़ेफ़ारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कुछ ही औसाफ़ बयान किए थे कि आप ﷺ ने दिल बरदाश्ता होकर फ़रमाया असील बस करो, हमें मक्का मुअ़ज़्ज़मा की ख़ूबियाँ बताकर ग़मग़ीन न करो।

हर इन्सान को अपनी जान और अपना वतन प्यारा होता है। अपना मुल्क तो इतना प्यारा होता है कि कोई भी अपना घर, अपना मुल्क छोड़ना पसन्द नहीं करता, चुनाँचे अल्लाह तबारक व तआ़ला ने क़ुरआ़ने करीम में अपनी जान से मुह़ब्बत के साथ-साथ वतन से मुह़ब्बत का बयान इन अलफ़ाज़ में किया हैः

तर्जुमाः और अगर उन पर फ़र्ज़ करते कि अपने आपको क़त्ल कर दो या अपने घर बार छोड़कर निकल जाओ तो उनमें थोड़े ही ऐसा करते। (कंज़ुल ईमान अल-निसाः 66) बाक़ी पेज न० 50 पर देखें।

ख़ानक़ाहे बरकातिया–एक तआ़रूफ

तीसरी क़िस्त

ख़ानक़ाहे बरकातिया के अक़ताब का मुख़्तसर तआ़रूफ़:

(1) इमामे सिलसिला-ए-बरकातिया हुज़ूर साहि़बुल बरकात सय्यद **शाह बरकतुल्लाह इश्क़ी मारहरवी** अलैहिर्रह़माः हज़रत सय्यद शाह बरकतुल्लाह इश्क़ी मारहरवी अलैहिर्रह़मा की पैदाइश 26 जुमादल आख़िर 1070 हि० में बिलग्राम शरीफ़ में हुई। आपके वालिद का नाम सय्यद मुह़म्मद उवैस था जो हज़रत सय्यद मीर अ़ब्दुल जलील अलैहिर्रह़मा के साह़बज़ादे थे। आपकी तरबियत वालिदे मुह़तरम ने फ़रमाई, शरीअ़त व तरीक़त की तालीम भी उन्हीं से ह़ासिल की, फिर मख़्दूमे काल्पी सय्यद शाह फ़ज़्लुल्लाह काल्पवी अलैहिर्रह़मा के पास ह़ाज़िर हुए और उनसे फ़ैज़ ह़ासिल किया, वापसी पर मख़्दूमे काल्पी ने आपको सिलसिला-ए-क़ादरिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई। हुज़ूर साहि़बुल बरकात वहाँ से मारहरा शरीफ़ आए और मस्नदे तरीक़त पर बैठकर इल्म व मारेफ़त के प्यासों को सैराब करने लगे।

सय्यद शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रह़मा को अ़रबी, फ़ारसी और हिन्दी नज़्म व नस्र में महारत थी और तीनों ज़बानों में उम्दा शायरी भी करते थे और ''इश्क़ी'' व ''पेमी'' तख़ल्लुस रखते थे। आपने कई किताबें भी तसनीफ़ फ़रमाईं जिनमें अवारिफ़ (हिन्दी), दीवाने इश्क़ी (फ़ारसी) रिसाला चहार अनवा, रिसाला सवाल व जवाब और पेम प्रकाश (दीवाने हिन्दी) बहुत मक़बूल हुईं। 10 मुह़र्रमुलह़राम 1142 हि० को 72 साल की उम्र में मारहरा शरीफ़ में आपका इन्तेक़ाल हुआ, नवाब मुह़म्मद ख़ाँ बंगश ने आपका मज़ार बनवाया जो आज तक रौज़ा-ए-शाह बरकतुल्लाह के नाम से मशहूर है।

(2) **हज़रत सय्यद शाह आले मुह़म्मद अलैहिर्रह़माः** आप हुज़ूर साहि़बुल बरकात के बड़े साह़बज़ादे हैं। 18 रमज़ानुल मुबारक 1111 हि० में बिलग्राम शरीफ़ में पैदा हुए। उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी की तालीम वालिद माजिद से ह़ासिल की और उन्हीं से बैअ़त व ख़िलाफ़त भी ह़ासिल की। रूह़ानियत में बुलन्द मक़ाम पर फ़ाईज़ थे, इबादत व रियाज़त का यह आ़लम था कि पूरे 18 साल तक मुजाहदा करते रहे और 3 साल तक लगातार एतक़ाफ़ में रहे। 16 रमज़ानुल मुबारक बरोज़ दो शम्बा 1164 हि० में मारहरा शरीफ़ में विसाल हुआ।

(3) **हज़रत सय्यद शाह ह़मज़ा ऐनी अलैहिर्रह़माः** 14 रबीउल आख़िर 1131 हि० को आपकी पैदाइश हुई। तवज्जोहे ख़ास और मुसलसल रियाज़त व मुजाहदा की बदौलत जल्द ही विलायत के मंसब पर फ़ाईज़ हो गए। दीनी उलूम वालिद माजिद शाह आले मुह़म्मद साह़ब और शमसुल उलमा मौलवी मुह़म्मद बाक़िर से ह़ासिल की, फ़न्ने तिब ह़कीम अ़ताउल्लाह साह़ब से सीखा। काशिफ़ुल अस्तार, फ़स्सुल कलेमात, मसनवी इत्तेफ़ाक़िया और क़सीदा

गौहर बार (उर्दू) आपकी तसनीफ़ी शाहकार हैं। 14 मुह़र्रमुलह़राम बरोज़ बुध 1198 हि० में विसाल हुआ। मज़ारे मुबारक दरगाहे बरकातिया में मौजूद है।

(4) शम्से मारहरा हज़रत सय्यद शाह आले अह़मद अच्छे मियाँ अलैहिर्रह़मा: आप 28 रमज़ानुल मुबारक 1160 हि० को पैदा हुए। उलूमे ज़ाहिरी की तकमील वालिद माजिद हज़रत सय्यद शाह ह़मज़ा ऐ़नी अलैहिर्रह़मा से की, ह़कीम नसरूल्लाह से त़िब का इल्म सीखा, अच्छे त़बीब और बेहतरीन मुआ़लिज होने के बा-वजूद आपने उसको पेशा नहीं बनाया। आप मज़हरे ग़ौसे आ़ज़म थे। बे-शुमार करामतें आपसे देखने को मिली। आपके मुरीदीन लाखों की तादाद में थे। इल्मे शरीअ़त व तरीक़त में कोई आपका मुक़ाबिल नहीं था। 34 जिल्दों में ''आईने अह़मदी'' की तालीफ़ आपका सबसे अहम कारनामा है। 17 रबीउल अव्वल की सुबह़ 1235 हि० में आपका विसाल हुआ।

(5) हज़रत सय्यद शाह आले बरकात सुथरे मियाँ अलैहिर्रह़मा: आप हज़रत सय्यद शाह ह़मज़ा ऐ़नी अलैहिर्रह़मा के छोटे साह़बज़ादे हैं। 10 रजबुल मुरज्जब 1163 हि० को पैदाइश हुई। इल्मे ज़ाहिर व बातिन अपने वालिद से ह़ासिल की और उन्हीं से इजाज़त व ख़िलाफ़त भी पाई, बड़े आ़बिद व ज़ाहिद थे, मस्जिद में नमाज़ पढ़ने का बहुत शौक़ था, इस वास्ते 1217 हि० में एक जामा मस्जिद तामीर कराई जो अब भी मौजूद है। मारहरा शरीफ़ में रहते हुए सख़्त बीमारी के सबब तीन दिन मस्जिद न जा सके जिसका उम्र भर दुख रहा। 26 रमज़ानुल मुबारक बरोज़ सनीचर 1251 हि० ब वक़्त ज़ुहर विसाल फ़रमाया।

(6) ख़ातमुल अकाबिर सय्यद शाह आले रसूल अह़मदी अलैहिर्रह़मा: आपकी विलादत माहे रजब सन् 1209 हि० में हुई। दीनी उलूम अपने वालिद माजिद हज़रत आले बरकात सुथरे साह़ब के अलावा अकाबिर उलमा-ए-किराम हज़रत शाह ऐ़नुलह़क़ अ़ब्दुल मजीद बदायूँनी, हज़रत मौलाना सलामतुल्लाह कश्फ़ी और हज़रत मौलाना अनवार साह़ब फिरंगी महल्ली वग़ैरह से सीखे, नीज़ हज़रत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिसे देहलवी रह़मतुल्लाह अलैहि से ह़दीस की सनद भी ह़ासिल की। आपका रूह़ानी मक़ाम बहुत बुलन्द था। मुजद्दिदे आ़ज़म इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रह़मा आपके मुरीद व ख़लीफ़ा हैं, आपको **''ख़ातमुल अकाबिर''** के लक़ब से याद किया जाता है। आपका विसाल 18 ज़िलह़िज्जा 1296 हि० को हुआ।

(7) सरकारे नूर सय्यद शाह अबुल हुसैन अह़मद नूरी मियाँ अलैहिर्रह़मा: आप अक़्ताबे मारहरा में से सातवें और आख़िरी क़ुतुब हैं। 19 शव्वाल 1255 हि० में मारहरा शरीफ़ में पैदा हुए। पैकरे ह़ुस्न व जमाल होने की वजह से चेहरे पर एक ख़ास चमक थी जिसकी वजह से ''नूरी'' कहलाए। ह़ुज़ूर ख़ातमुल अकाबिर सय्यद शाह आले रसूल अह़मदी अलैहिर्रह़मा से बैअ़त व ख़िलाफ़त है। आप सुलूक और रूह़ानियत के आला दर्जे पर फ़ाईज़ थे। शरीअ़त के पासदारों और तरीक़त के ताजदारों में आपका शुमार होता है। ''सिराजुल अ़वारिफ़'' आपकी मशहूर तसनीफ़ है। आप अपने दौर के बहुत बड़े आ़मिलीन में से थे। 11 रजब 1324 हि० को मारहरा शरीफ़ में विसाल हुआ।

दिगर मशाइख़े बरकात: इन अक़्ताब के अलावा वह ख़ानदाने बरकात में और भी बहुत से नामवर औलिया-ए-किराम और मशाइख़े इस्लाम पैदा

हुए जिनके दम क़दम से हिन्दुस्तान में इस्लाम व सुन्नियत का बोल बाला हुआ, उनके असमा-ए-गिरामी यह हैः

हज़रत सय्यद शाह **नजातुल्लाह** अलैहिर्रह़मा (वफ़ातः 1190 हि०), हज़रत सय्यद शाह **मुह़म्मद ह़क़्क़ानी** अलैहिर्रह़मा (वफ़ातः 1201 हि०), हज़रत सय्यद शाह **औलादे रसूल** अलैहिर्रह़मा (वफ़ातः 1268 हि०), हज़रत सय्यद शाह **गुलाम मुह़ियुद्दीन अमीर आ़लम** अलैहिर्रह़मा (वफ़ातः 1286 हि०), हज़रत सय्यद शाह **मुह़म्मद सादिक़** अलैहिर्रह़मा (वफ़ातः 1326 हि०), हज़रत सय्यद शाह **अबुल क़ासिम इस्माईल ह़सन** अलैहिर्रह़मा (वफ़ातः 1347 हि०), हज़रत सय्यद शाह **मेहदी ह़सन** अलैहिर्रह़मा (वफ़ातः 1361 हि०), हज़रत सय्यद शाह **औलादे रसूल मुह़म्मद मियाँ** अलैहिर्रह़मा (वफ़ातः 1375 हि०), हज़रत सय्यद शाह **आले मुस्तफ़ा सय्यद मियाँ** अलैहिर्रह़मा (वफ़ातः 1394 हि०), हज़रत सय्यद शाह **मुस्तफ़ा ह़ैदर ह़सन मियाँ** अलैहिर्रह़मा (वफ़ातः 1416 हि०), हज़रत सय्यद शाह **यहया मियाँ** अलैहिर्रह़मा (वफ़ातः 1433 हि०) और हज़रत सय्यद शाह **आले रसूल नज़्मी मियाँ** अलैहिर्रह़मा (वफ़ातः 1435 हि०) हज़रत सय्यद शाह **मुर्तज़ा हुसैन ज़ैदी** अलैहिर्रह़मा (वफ़ात 1437 हि०)

इस वक़्त ख़ानवादा-ए-बरकात के अमीं शैख़ुल मशाइख़ अमीने मिल्लत हुज़ूर सय्यद मुह़म्मद अमीन मियाँ क़ादरी बरकाती दामा ज़िल्लुहू (सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे बरकातिया बड़ी दरगाह) और उनके बिरादराने गिरामी शरफ़े मिल्लत हज़रत सय्यद मुह़म्मद अशरफ़ मारहरी (चीफ़ इन्कमटैक्स कमिश्नर, कोलकाता), फ़ज़्ले मिल्लत हज़रत सय्यद मुह़म्मद अफ़ज़ल क़ादरी (ADG लोक आयुक्त भोपाल) और रफ़ीक़े मिल्लत हज़रत सय्यद नजीब ह़ैदर नूरी (सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे बरकातिया छोटी दरगाह) दामा ज़िल्लुहुल आ़ली हैं।

यूँ तो ख़ानक़ाहे बरकातिया तसव्वुफ़ के चारों सिलसिलों का इतरे मजमुआ़ है, मगर इस ख़ानक़ाह के मशाइख़े किराम ने क़ादरी सिलसिले की तरवीज व इशाअ़त को अपना मक़सद ह़यात बनाया। चुनाँचे यहाँ से क़ादरी सिलसिले को ख़ूब फ़रोग़ ह़ासिल हुआ और आज अलह़म्दुलिल्लाह इस ख़ानक़ाह को बर्रे सग़ीर में क़ादरी सिलसिले की अज़ीम ख़ानक़ाह होने का शरफ़ ह़ासिल है। इस ख़ानक़ाह की सबसे बड़ी ख़ुसूसियत यह है कि यहाँ के मशाइख हर ज़माने में शरीअ़त व तरीक़त के जामेअ़ और इल्म व अ़मल के संगम रहे, इसलिए अहले दिल, अहले नज़र और अरबाबे इल्म व दानिश उनकी बुलन्द निस्बतों के साए में पनाह ढुँढते रहे। सिलसिला-ए-बरकातिया से वाबस्ता होने वाले मशाइख़े किराम की फहरिस्त में हज़रत अल्लामा शाह **अ़ब्दुल मजीद बदायूँनी**, हज़रत अल्लामा **नक़ी अ़ली ख़ान बरैलवी**, ताजुल फ़ुहूल हज़रत मौलाना **शाह अ़ब्दुल क़ादिर** बदायूँनी आला हज़रत **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** फ़ाज़िले बरेलवी, हज़रत सय्यद **शाह अ़ली हुसैन अशरफ़ी** किछौछवी, हज़रत मुफ़्ती-ए-आ़ज़म हिन्द अल्लामा **मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान** बरैलवी जैसे अकाबिर अहले सुन्नत के नाम शामिल हैं।

ख़ानक़ाहे बरकातिया की अज़मत व शौकत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि शाहाने मुग़लिया (मुग़ल बादशाहों) ने इस ख़ानक़ाह के लिए 24 गाँव वक़्फ़ किए थे और माहाना व सालाना नज़राना अलग था। मगर इसके बा वजूद यहाँ के मशाइख़ बादशाहों, नवाबों और दुनियादारों से हमेशा

दूर रहे। एक बार शहंशाहे हिन्दुस्तान सुल्तान औरंगज़ेब आ़लमगीर का मारहरा शरीफ़ की तरफ़ से गुज़र हुआ, यह ज़माना हज़रत सय्यद शाह ह़मज़ा ऐ़नी अलैहिर्रह़मा का था, सुल्तान ने आपकी ख़िदमत में क़ासिद भेजा कि मैं आपकी ज़ियारत और दुआ़ का तलबगार हूँ, अगर तकलीफ़ फ़रमाकर मेरी क़यामगाह तक तशरीफ़ लायें तो बड़ी मेहरबानी होगी। हज़रत ने जवाब में फ़रमायाः ख़्वाहिश तुम्हारी है और मैं मिलने आऊँ? और आपने बादशाह के पास जाने से साफ़ मना फ़रमा दिया।

सिलसिला-ए-बरकातियाः ख़ानक़ाहे आ़लिया क़ादरिया बरकातिया के मशाइख़े किराम को यूँ तो तरीक़त के चारों सिलसिलों क़ादरिया, चिश्तिया, नक़्शबंदिया और सुहरवर्दिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त ह़ासिल है, मगर यहाँ के मशाइख़-ए-किराम आ़म तौर से लोगों को सिलसिला-ए-आ़लिया क़ादरिया ही में बैअ़त करते हैं, हाँ अगर कोई शख़्स बाक़ी तीनों सलासिल में से किसी सिलसिले में बैअ़त होने की ख़्वाहिश ज़ाहिर करता है तो उसको उसी सिलसिले में बैअ़त करते हैं। हुज़ूर साह़िबुल बरकात अलैहिर्रह़मा को दो क़ादरी सिलसिलों की इजाज़त व ख़िलाफ़त ह़ासिल थी, एक ख़ानदानी सिलसिला जो अपने वालिद माजिद और दादा हुज़ूर से मिला था, उसे ''क़दीमा'' (पुराना) कहा जाता है और दूसरा सय्यद शाह फ़ज़्लुल्लाह काल्पवी अलैहिर्रह़मा से मिला था उसे ''जदीदा'' (नया) कहा जाता है। हम यहाँ दोनों सिलसिले नक़ल कर रहे हैं।

सिलसिला-ए-क़ादरिया बरकातिया क़दीमाः शाह बरकतुल्लाह, मीर सय्यद उवैस, शाह अ़ब्दुल जलील, मीर अ़ब्दुल वाह़िद बिलग्रामी, शाह ह़ुसैन, शाह सफ़ी, मख़्दूम सअ़द बुख़्न, शेख़ मुह़म्मद मीना लखनवी, सय्यद राजू मख़्दूम जहानियाँ, शेख़ नुरूद्दीन अ़ली, शेख़ मज़्जूब सालेह़, शेख़ कमालुद्दीन कूफ़ी, शेख़ सइदुद्दीन अबुल फ़तह़ बग़दादी, सय्यदना शेख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, शेख़ अह़मद अस्वद दीनवरी, शेख़ मुम्शाद दीनवरी, शेख़ अबुल अ़ब्बास निहावन्दी, शेख़ अ़ब्दुल्लाह ख़फ़ीफ़, शेख़ जुनैद बग़दादी, शेख़ सिरी सक़ती, शेख़ मारूफ़ कर्ख़ी, शेख़ दाऊद ताई, शेख़ ह़बीब अ़जमी, ख़्वाजा ह़सन बसरी, सय्यदना अ़ली मुर्तज़ा रिज़वानुल्लाही अलैहिम अजमईन, हज़रत मुह़म्मद मुस्तफ़ा ﷺ।

सिलसिला-ए-क़ादरिया बरकातिया जदीदाः शाह बरकतुल्लाह, शाह फ़ज़्लुल्लाह काल्पवी, मीर सय्यद अह़मद, मीर सय्यद मुह़म्मद, हज़रत जमालुल औलिया, हज़रत ज़ियाउद्दीन, शेख़ भिकारी, सय्यद इब्राहीम ईरजी, शेख़ बहाउद्दीन, सय्यद अह़मद जिलानी, सय्यद ह़सन क़ादरी, सय्यद मूसा क़ादरी, सय्यद अ़ली क़ादरी, सय्यद मुह़ियुद्दीन अबू नसर, सय्यद अबू सालेह़, सय्यद अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़, ग़ौसे आ़ज़म सय्यद शाह अ़ब्दुल क़ादिर जिलानी, शेख़ अबू सईद मख़्ज़ूमी, सय्यद अबुल ह़ुसैन अ़ली युसुफ़ुल कुर्शी, शेख़ अबुल फ़रह़ तर तूसी, शेख़ अ़ब्दुल वाह़िद, शेख़ अबू बकर शिब्ली, हज़रत जुनैद बग़दादी, शेख़ सिरी सक़ती, शेख़ मारूफ़ कर्ख़ी, इमाम अ़ली मूसा रज़ा, इमाम मूसा काज़िम, इमाम जाफ़र सादिक़, इमाम मुह़म्मद बाक़र, इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन, सय्यदना इमामे ह़ुसैन, सय्यदना अ़ली-ए-मुर्तज़ा रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन हज़रत मुह़म्मद मुस्तफ़ा ﷺ। (जारी...) ★★★

★ ज्वाइंट सेक्रेटरी, अलबरकात एजुकेशनल सोसायटी, अलीगढ़।

हज़रत अ़ली رضی اللہ عنہ (2)

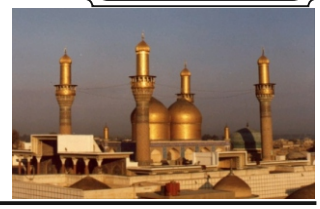

मुश्किलें हल कर शहे मुश्किल कुशा के वास्ते
कर बलाऐं रद शहीदे कर्बला के वास्ते

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की पैदाइश 13 रजब बरोज़ जुमा वाक़या-ए-फ़ील के 30 वीं साल ख़ाना-ए-का'बा के अन्दर हुई। वालिद माजिद का नाम अबू त़ालिब बिन हज़रत अ़ब्दुल मुत्त़लिब है और वालिदा का नाम हज़रत फ़ातिमा बिन्त असद है। आपका नसबी ताल्लुक़ अ़रब के मशहूर क़बीला **"कुरैश"** के मुअ़ज़्ज़ज़ ख़ानदान **"बनू हाशिम"** से है। आप नबी-ए-करीम ﷺ के सगे चचाज़ाद भाई हैं, उन्होंने ही आपकी तर्बियत फ़रमाई, बच्चों में सबसे पहले इस्लाम क़ुबूल किया और पूरी ज़िन्दगी रसूलुल्लाह की ख़िदमत गुज़ारी में काट दी। हुज़ूर ﷺ ने जब अपनी नबुव्वत का ऐलान फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि "ऐ बनी मुत्त़लिब! मैं तुम्हारे सामने दुनिया व आख़िरत की बेहतरीन नेमत पेश करता हूँ, तुममें से कौन मेरा साथ देगा और मेरा मुआ़विन व मददगार होगा?" इसके जवाब में सिर्फ़ एक आवाज़ आई "अगरचे मैं उम्र में छोटा हूँ और मेरी टाँगें कमज़ोर हैं, लेकिन मैं आपका मुआ़विन व मददगार और क़ुव्वते बाज़ू बनूँगा।" यह आवाज़ आप ही की थी। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का यह दावा सिर्फ़ ज़बानी नहीं था, बल्कि आपने इस पर अ़मल भी करके दिखाया। हिजरत की रात जब हुज़ूरे अकरम ﷺ मदीना तय्यबा को जा रहे थे तो मक्का वालों की अमानतें आपको देकर अपने बिस्तर पर सोने का हुक्म दिया। कई जंगों में रसूले पाक ﷺ ने आपको अ़लम्बरदार बनाया और इस्लामी झण्डा आपके हाथों में थमाया। जंगों में आपकी बहादुरी देखने लायक़ होती, आपकी तलवार जिस पर गिरती उसका सफ़ाया कर देती। ग़ज़्वा-ए-बद्र में हुज़ूर ﷺ ने आपको अपनी तलवार भी अ़ता फ़रमाई। ग़ज़्वा-ए-ख़ैबर में आपने शुजाअ़त और बहादुरी की ऐसी मिसाल क़ायम फ़रमाई, जिसे रहती दुनिया तक याद किया जायेगा।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जब हिजरत करके मदीना शरीफ़ आए तो हुज़ूर ﷺ ने आपको अपना दीनी भाई बनाया, अपनी सबसे चहीती बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का निकाह़ आपसे फ़रमाया, इस तरह़ आपको क़यामत तक पैदा होने वाले सारे सादाते किराम का बाप होने का शरफ़ ह़ासिल हुआ। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से आपके तीन शहज़ादे और दो शहज़ादियाँ पैदा हुई। शहज़ादों में हज़रत इमाम ह़सन, हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत इमाम मोह़सिन और शहज़ादियों में हज़रत ज़ैनब अल-कुबरा और हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम हैं।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हुज़ूरे अकरम ﷺ के चौथे ख़लीफ़ा हैं। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की शहादत के तीन दिन बाद मुहाजिरीन व अन्सार के बाहमी इत्तिफ़ाक़ से आप ख़लीफ़ा चुने गए। ज़िल हिज्जा 35 हि० को आप मस्नदे ख़िलाफ़त पर जलवा अफ़रोज़ हुए। आपने जिस ज़माने में ख़िलाफ़त की बाग डोर संभाली उस वक़्त मिल्लते इस्लामिया, बड़े इन्तेशार, फ़ितने और इख़्तिलाफ़ में थी, मगर आपने बड़ी होशियारी और सूझबूझ से ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी को अन्जाम दिया और सारे फ़ितनों का कामयाबी के साथ मुक़ाबला किया। आपने अपने ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में बहुत सी इस्लाहात कीं, हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के आख़िरी ज़माने से लेकर उनकी शहादत तक मिल्लते इस्लामिया में इस क़द्र अफ़रा तफ़री मची हुई थी कि निज़ामे ख़िलाफ़त, ख़िलाफ़ते राशिदा से हटने के कगार पे थी, मगर हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उसे हटने नहीं दिया। बैतुल माल की अमानतदारी का इस क़दर ख़्याल था कि कौड़ी-कौड़ी का हिसाब लेते थे, जिसकी वजह से कभी-कभी आपके क़रीबी लोग नाराज़ हो जाते थे। जो रक़म बैतुल माल में जमा होती थी उसे मुसलमानों में बराबर-बराबर बाँट देते थे। अ़दल व इन्साफ़ का यह आ़लम था कि अगर कोई आपके ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दायर करता तो आप फ़रीक़ की हैसियत से अ़दालत में हाज़िर होते थे। तवक़्क़ुल इस दर्जा था कि आप अपने साथ मुहाफ़िज़ (बॉडी गार्ड) नहीं रखते थे, इन्किसारी का यह हाल था कि पैवंद लगे कपड़े पहनते और ग़रीबों के साथ ज़मीन पर बैठकर खाना खा लेते थे। इबादत का यह अन्दाज़ था कि जब आप नमाज़ के लिए खड़े होते तो दुनिया व माफ़ीहा से बे ख़बर हो जाते, एक बार एक जंग में आपको तीर लग गया, तबीब तीर निकालने की कोशिश करता तो दर्द इतना होता कि उसे छूने नहीं देते, लेकिन उसी तीर को नमाज़ की हालत में निकाला गया तो आपको एहसास तक नहीं हुआ।

आप फ़ज़्ल व कमाल के आला दर्जे पर फ़ाइज़ थे। आपके फ़ज़्ल व कमाल और मनाक़िब के बयान में जितनी हदीसें मौजूद हैं उतनी किसी और सहाबी के बारे में नहीं हैं। आपके इल्मे का यह हाल था कि हुज़ूर ﷺ ने आपको अपने इल्म के शहर का दरवाज़ा क़रार दिया। दीनी उलूम के आप जामेअ़ थे, क़ुरआन पर इतनी गहरी निगाह थी कि फ़रमाया करते "ख़ुदा की क़सम जितनी आयतें नाज़िल हुई हैं उन सबका मुझे इल्म है। मैं यह भी जानता हूँ कि वह किसके बारे में नाज़िल हुईं, कहाँ नाज़िल हुईं और किसके हक़ में नाज़िल हुईं?" तरीक़त के सिलसिले आप ही से होते हुए हुज़ूर ﷺ तक पहुँचते हैं।

19 रमज़ानुल मुबारक 40 हि० में फ़जर के वक़्त नमाज़ की हालत में आप पर क़ातिलाना हमला किया गया जिसके नतीजे में 21 रमज़ानुल मुबारक को आपकी शहादत हुई। "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ" आपका मज़ारे अक़्दस नजफ़े अशरफ़ में है। ★★★

★ **डायरेक्टर अलबरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, अलीगढ़।**

बरकाते ख़ानदाने बरकात

इस कॉलम में इंशाअल्लाह तआ़ला ख़ानवादा-ए-आलिया बरकातिया मारहरा शरीफ़ के आसान और मुजर्रब तावीज़ात और वज़ीफ़े वगैरह शाए होते रहेंगे। हर सुन्नी मुसलमान को नेक मक़सद के लिए इन पर अ़मल करने की इजाज़त है। (इदारा)

तरीक़ा-ए-ख़त्मे क़ादरियाः इस ख़ानदाने आ़ली के मुजर्रब तरीन आ़माल से है। सभी दीनी और दुनियावी ज़रूरतों के लिए अल्लाह तआ़ला के हुक्म से मुफ़ीद। पहले दुरूदे क़ादरिया اَللّٰھُمَّ صَلِ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ مَعْدِنِ الْجُوْدِ وَالْکَرَمِ وَ آلِہٖ وَسَلِّمْ 111 बार और अगर यह न पढ़ सकें तो इसकी जगह यह पढ़ें। ''اَللّٰھُمَّ صَلِ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ آلِہٖ'' फिर यह कलिमा سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ 111 बार फिर सूरह इख़्लास शरीफ़, 111 बार, फिर सूरह الم نشرح 1011 बार और इस सूरत के शुरू करने के बक़्त सूरह यासीन शरीफ़ तीन बार, 1 या 2 या 3 आदमी पढ़ें, फिर सूरह الم نشرح के बाद सूरह फ़ातिहा 111 बार, फिर वही दुरूद शरीफ़ 111 बार और सूरह इख़्लास शरीफ़ 111 बार और یاحضرت شیخ عبدالقادر اَعْطِنِیْ شَیْئًا لِلّٰہِ 111 बार पढ़ कर ख़त्म करे, बाद ख़त्म अगर मुमकिन हो तो थोड़ी शीरनी पर वरना वैसे ही हुज़ूर ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की रूह़ पुर फ़ुतूह़ का फ़ातिहा पढें और अपनी ह़ाजत हज़रत रब्बुल इ़ज़्ज़त जल्ला जलालहू से तलब करें।

ताऊन, वबा और हर बला से बचने के लिएः (1) हर मुसलमान रोज़ाना सुबह़ व शाम और सोते वक़्त 1-1 बार आयतल कुर्सी शरीफ़ और 3-3 तीन-तीन बार तीनों क़ुल पढ़े। इसके लिए आधी रात से सूरज निकलने तक सुबह़ है और दोपहर ढले से सूरज डुबने तक शाम, इस बीच में पढ़ लेना सुबह़ या शाम का पढ़ना होगा। (2) इनके अलावा पाँचों वक़्त हर नमाज़े फ़र्ज़ के बाद 1-1 बार आयतल कुर्सी शरीफ़ पढ़ें। ज़ुहर व मग़रिब व इशा में सुन्नतों के बाद पढ़ें। (3) औरतों को जिन दिनों में नमाज़ का हुक्म नहीं उन में क़ुल न पढें, मगर आँठों वक़्त (यानी बाद नमाज़े पंचगाना और सुबह़ व शाम और सोते वक़्त) या कम से कम सुबह़ व शाम और सोते वक़्त आयतल कुर्सी 1-1 बार ज़रूर पढें, इस नीयत से कि अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ है, न इस नीयत से कि क़ुरआ़ने मजीद की तिलावत करते हैं। इसलिए कि इन दिनों में उन्हें क़ुरआ़न मजीद तिलावत की नीयत से पढ़ना मना है। (4) सोते वक़्त तीनों क़ुल इस तरकीब से पढ़े जायें कि लेट कर दोनों हथेलियाँ दुआ़ की तरह़ फैलाकर 1-1 बार तीनों क़ुल पढ़कर दोनों हथेलियों पर दम करके सर मुँह सीने, आगे पीछे जहाँ तक हाथ पहुँचे फैर लें। फिर दुबारा, यूँही फिर तीसरी बार इसी तरह़। जो बच्चे ख़ुद पढ़ने के लायक़ न हों उनके वालिदैन इसी तरह़ तीन बार पढ़कर अपने हाथों पर दम करके उनके तमाम बदन पर हर बार हाथ फ़ेर दें। (जारी...) ★★★

ख़ातमुल असलाफ़ हज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद सादिक़ अलैहिर्रह़मा

पैदाइश व तालीमः हज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद सादिक़ अलैहिर्रह़मा की पैदाइश 7 रमज़ानुल मुबारक 1248 हि० में हुई। आप हज़रत सय्यद शाह औलादे रसूल अलैहिर्रह़मा के सबसे बड़े साह़बज़ादे हैं। शरीअ़त की तालीम अपने वालिद माजिद से ह़ासिल की और तरीक़त की तालीम वालिद माजिद के अलावा अपने बड़े चचा हज़रत सय्यद शाह आले रसूल अह़मदी अलैहिर्रह़मा और छोटे चचा हज़रत सय्यद शाह ग़ुलाम मुह़ियुद्दीन अमीर आ़लम अलैहिर्रह़मा से भी ह़ासिल की और तीनों हज़रात ने आपको इजाज़त व ख़िलाफ़त से भी नवाज़ा। आपने इन्हीं हज़रात से और मौलाना फ़ज़्ले रसूल बदायूँनी अलैहिर्रह़मा से त़िब का इल्म भी सीखा और इस फ़न में कमाल ह़ासिल किया।

शादीः हज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद सादिक़ अलैहिर्रह़मा की शादी आपके छोटे चचा हज़रत सय्यद शाह ग़ुलाम मुह़ियुद्दीन अमीर आ़लम अलैहिर्रह़मा की साह़बज़ादी सय्यदा सकीना बेगम से हुई, जिनसे आपके दो साह़बज़ादे हज़रत सय्यद शाह अबुल क़ासिम मुह़म्मद इस्माईल ह़सन शाह जी मियाँ रह़मतुल्लाह अलैहि और हज़रत सय्यद शाह अबुल क़ाज़िम मुह़म्मद इदरीस ह़सन सुथरे मियाँ अलैहिर्रह़मा और पाँच साह़बज़ादियाँ हुईं।

औसाफ़ः हज़रत सय्यद मुह़म्मद सादिक़ अलैहिर्रह़मा बड़े मुत्तक़ी और परहेज़गार इंसान थे, नमाज़ रोज़े के तो बचपन से पाबन्द थे ही पूरी उम्र ख़ानदानी मामूलात को कभी नहीं छोड़ा। वक़्त की पाबन्दी का इस क़द्र ख़्याल था कि हर काम के लिये एक वक़्त मुक़र्रर फ़रमा लिया था और हर काम उसी वक़्त में अन्जाम देते थे। आप बड़े इल्म दोस्त थे यही वजह है कि आपने अपनी औलाद और अहले ख़ानदान को दीन की आला तालीम दिलाई और बड़े साह़बज़ादे हज़रत सय्यद शाह इस्माईल ह़सन अलैहिर्रह़मा के ह़ाफ़िज़े क़ुरआ़न होने की ख़ुशी में सीतापुर में आलीशान मस्जिद तामीर कराई। आप किताबों के भी बड़े शौक़ीन थे, चुनाँचे आपके पास ज़ाती कुतुब ख़ाना था, जिसमें ख़ानदान के बुज़ुर्गों की लिखी हुई किताबों के अलावा मुख़्तलिफ़ उलूम व फ़ुनून की सैकड़ों किताबें मौजूद थीं।

अख़्लाक़ व किरदारः हज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद सादिक़ अलैहिर्रह़मा सादा तबीअ़त, नर्म मिज़ाज और ख़ुश अख़्लाक़ इंसान थे। हर किसी से मुस्कुरा कर मिलना और लोगों की ह़ाजत रवाई करना आपका मह़बूब मशग़ला था। घर वालों, रिश्तेदारों, मुरीदीन व मुतवस्सिलीन और आम लोगों से एक तरह़ का बरताव करते थे। आम तौर पर मालदार और ताक़तवर लोग कमज़ोरों पर ज़ुल्म किया करते हैं, मगर

बे इन्तहा माल व दौलत और ताक़त व क़ुव्वत के मालिक होने के बावजूद आपने पूरी ज़िन्दगी न किसी को सताया, न किसी का हक़ दबाया और न ही किसी को तकलीफ़ पहुँचाई। आपके पोते और मुवर्रिखे ख़ानदाने बरकात हज़रत ताजुल उलमा अलैहिर्रह़मा फ़रमाते हैं कि ''मैंने सेक़ाहत (मुअ़तबर ज़रिए) से सुना है कि आपने सीतापुर में तक़रीबन 45 साल क़याम फ़रमाया, मगर एक शख़्स भी यहाँ नहीं है कि जो आपका शाकी (शिकायत करने वाला) हो, बल्कि हर शख़्स आपको अपना मुरब्बी (सरपरस्त) समझता था।''

ख़िदमातः हज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद सादिक़ अलैहिर्रह़मा ने अपने ज़माने मे अहले सुन्नत व जमाअ़त और ख़ुद अपने ख़ानदान में बहुत सी इस्लाह़ात (सुधार) फ़रमाई और बुरी रस्मों का ख़ात्मा करके सुनन् व मुस्तहब्बात को रिवाज दिया और इस कारे ख़ैर के लिये आपने माल व दौलत की बिल्कुल परवाह न की। मुसलमानों में दीनी तालीम का रूझान पैदान करने और उन्हें किताब व सुन्नत से क़रीब करने के लिये आपने सीतापुर में ''सुबहे़ सादिक़'' के नाम से एक मत़बा (प्रेस) क़ायम फ़रमाया, जिससे बहुत सी किताबें छपकर मन्ज़रे आ़म पर आईं। आपके ज़माने में जब कुँओं से पानी पीने और खेतों की सिंचाई करने का रिवाज था। ग़रीब और कमज़ोर लोग पानी की बूँद-बूँद को तरस्ते थे, उस वक़्त आपने ग़रीबों, मुह़ताजों, कमज़ोरों और राहगीरों के लिये अन-गिनत कुँए खुदवाए। आपको बाग़ात लगाने और इमारतें बनवाने का बड़ा शौक़ था। चुनाँचे आपने मारहरा शरीफ़ और सीतापुर में जायदादें ख़रीद कर कई मकानात बनवाए और बाग़ात लगवाए। ख़ानक़ाहे बरकातिया में मह़ल सरा और ह़वेली शरीफ़ सज्जादा नशीनी की नए सिरे से तामीर कराई, ख़ानक़ाह की मस्जिद और दरगाह शरीफ़ की भी मरम्मत कराई। इसके अलावा हज़रत सय्यद शाह इस्माईल ह़सन अलैहिर्रह़मा के ह़ाफ़िज़े क़ुरआ़न होने की ख़ुशी में सीतापुर में इतनी आ़लीशान मस्जिद बनवाई कि उस ज़माने में सीतापुर और उस इलाक़े में (उस जैसी) दूर-दूर तक कोई मस्जिद नज़र न आती थी।

विसालः हज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद सादिक़ अलैहिर्रह़मा का विसाल जुमेरात की रात 24 शव्वाल 1326 हि० को सीतापुर में हुआ और वहीं अपने बाग़ में दफ़न किए गए। अभी ह़ाल ही में ह़ुज़ूर अमीने मिल्लत हज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद अमीन मियाँ क़ादरी बरकाती दामा ज़िल्लुहू ने दरगाह शरीफ़ को नए सिरे से तामीर कराया है। ★★★

★ **ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़, एटा, (यूपी)**

मुबारकबाद

जनाब डॉ० जावेद अह़मद ख़ान बरकाती का MS (Orthopedics) में और मुह़तरमा शीबा रह़बर बरकाती का MD (Pediatrics) में एडमीशन होने पर पयामे बरकात की तरफ़ से मुबारकबाद और दुआ़यें। अल्लाह तआ़ला इन्हें मज़ीद तरक़्क़ीयों से नवाज़े और दीन व सुन्नियत की ख़ूब-ख़ूब ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन। (इदारा)

मन्क़बत दर शाने मारहरा

शर्फ़े मिल्लत हज़रत सय्यद मुहम्मद अशरफ़ मारहरवी

रूहे तरीक़त शाहे बरकत, इल्मे शरीअ़त आला हज़रत
लूटने वालो लूट लो आकर मारहरा में दोहरी जन्नत

पीर के हाथों ग़ौस-ए-आज़म, ग़ौस के हाथों सरवरे आ़लम
कितनी सीधी, कैसी सच्ची हम लोगों ने पाई जन्नत

मीमे मारहरा ने पाई मीमे मदीना से वो निस्बत
छोटा सा क़स्बा है लेकिन सारे जहाँ में पाई शोहरत

दुनियावी ह़ाकिम से न डरना, सादाते ज़ैदी की रिवायत
इसी लिए जूते की ठोकर पर यह सियासत, शोहरत व दौलत

दुनिया की सरकारें सारी आती जाती माया हैं
अपने तो सरकारे मदीना, सारे जहाँ पर जिनकी हुकूमत

उर्स का यह रूह़ानी आ़लम, मन्ज़र मन्ज़र, गुलशन गुलशन
कैसी जमकर बरस रही है, राह़त व रह़मत, उलफ़त व बरकत

ख़र्क़ा पोशी की शब का यह मन्ज़र जैसे नूर व निकहत
शाह अमीन का चेहरा देखो, बरस रही है कैसी तलअ़त

मसलके आला हज़रत पर तुम डटकर रहना, हट मत जाना
वक़्ते रह़लत ह़सन मियाँ ने हम सबको यह की थी वसीयत

शेर सुनाऊँ मैं तुमको और तुम मुझको सुबह़ानल्लाह
अशरफ़ को दारैन में वल्ला काफ़ी है बस इतनी उजरत

★★★

जनाब अतीक अहमद बरकाती से एक मुलाक़ात

जनाब अतीक़ अह़मद बरकाती साह़ब शहरे कानपुर के उन नुमायाँ बरकातियों में से हैं, जो ख़िदमते ख़ल्क़ और इस्लाम व सुन्नियत के फ़रोग़ में पेश पेश रहते हैं। आपका शुमार शहर के क़दीम बरकातियों में होता है। आप ख़ानक़ाहे बरकातिया के दो अज़ीम बुज़ुर्ग हुज़ूर ताजुल उलमा और हुज़ूर अह़सनुल उलमा से बराहे रास्त फ़ैज़याब हो चुके हैं। आपने एम.ए, एल.टी, एल.एल.बी की डिग्री ह़ासिल की, उसके बाद हलीम इण्टर कॉलेज, कानपुर में मुलाज़िम हुए। अब रिटायर्ड होकर ख़िदमते ख़ल्क़ में मसरूफ़ हैं। 1983 ई० में हुज़ूर अह़सनुल उलमा ने आपको "बज़्मे क़ासमी बरकाती" मशाइख़ कानपुर का नाज़िमे आला बनाया, तभी से इस ओहदे पर फ़ाइज़ हैं। इदारा पयामे बरकात की उनसे जो बातें हुई, उन्हें यहाँ छापा जा रहा है। (इदारा)

पयामे बरकातः आप अपना मुक़म्मल तआ़रूफ़ करायें!

अतीक़ अह़मद बरकातीः मेरा नाम अतीक़ अह़मद बरकाती, और वालिद साह़ब का नाम ह़ाजी रफ़ीक़ अह़मद मरहूम है। मेरे वालिदैन 1940 ई० में हुज़ूर ताजुल उलमा सय्यद शाह औलादे रसूल मुह़म्मद मियाँ रह़मतुल्लाहि अलैहि से शर्फ़े बैअ़त रखते थे। तमाम उम्र अपने मुर्शिद फिर अपने मुर्शिद के जा नशीन हुज़ूर अह़सनुल उलमा सय्यद शाह मुस्तफ़ा ह़ैदर ह़सन मियाँ अलैहिर्रह़मा की ख़िदमत व जाँ निसारी और बरकाती रंग में गुज़ारी। 1974 ई० में उनका विसाल हुआ और अपनी बरकाती ग़ुलामी की विरासत मुझे सौंप दी। दुनियावी तालीम एम.ए (उर्दू), एल.टी और एल.एल.बी की डिग्रियाँ ह़ासिल करने के बाद कानपुर में ह़लीम कॉलेज में तदरीस के फ़राइज़ अदा करके अब रिटायर्ड हूँ। इज़्दवाजी ज़िन्दगी, अपने मुर्शिद सरकार अह़सनुल उलमा अलैहिर्रह़मा की ख़ुसूसी दुआ़ओं और उनकी हिदायात पर अ़मल-पैरा रहने के सबब से, फिर उनके शहज़ादगाने वाला शान की ख़ुसूसी सर-परस्ती ह़ासिल रहने की वजह से अच्छी गुज़री। 5 बेटियाँ और एक बेटा है, बेटियाँ सब की सब M.A, B. Ed होकर सरकारी मुलाज़मत में अपनी अपनी ससुराल में ख़ुशह़ाल हैं। बेटा भी M. Com, MBA करके बैंक में मैनेजर है। अलह़म्दुल्लिलाह तआ़ला

इनके दर का जो गदा हो जाए सुल्तानी करे
ख़ुद से बे परवा हो दुनिया की निगहबानी कर

इस नारे के मिस्दाक़ फ़ारिगुल बाल होकर ख़िदमते बरकातियत की कोशिश करता हूँ। अल्लाह पाक इसी ख़िदमत के जारी रहते ईमान पर ख़ातमा फ़रमाए। (आमीन)

पयामे बरकातः ख़ानक़ाहे बरकातिया के किन बुज़ुर्ग से शर्फ़े बैअ़त रखते हैं?

अतीक़ अह़मद बरकातीः मुझे यक़ीन है कि मेरे वालिद ने मुझे सरकार ताजुल उलमा अलैहिर्रह़मा

से बचपन में ही बैअ़त करा दिया होगा। मगर होश व ह़वास में ख़ुद सुर्पुदगी का मज़ा कुछ और ही होता है, अपनी इसी तमन्ना को पूरी करने के लिए अपने वालिद साह़ब के इन्तक़ाल के बाद 1975 ई० में मारहरा शरीफ़ ह़ाज़िर होकर ह़ुज़ूर मुर्शिदे आ़ज़मे हिन्द हज़रत मौलाना ह़ाफ़िज़ व क़ारी मुफ़्ती सय्यद शाह मुस्तफ़ा ह़ैदर ह़सन मियाँ अलैहिर्रह़मा के मुबारक हाथों पर बैअ़त से मुशर्रफ़ हुआ और ह़याते ज़ाहिरी की 20 साल की मुद्दत तक अपने मुर्शिदे मुश्फ़िक़ व मेहरबान की ग़ुलामी का ह़क़ अदा करने की कोशिश करता रहा।

पयामे बरकातः आपको ख़ानक़ाहे बरकातिया के किन मशाइख़ के औसाफ़ ने मुतास्सिर किया?

अतीक़ अह़मद बरकातीः ह़ुज़ूर ताजुल उलमा अलैहिर्रह़मा को बचपन में देखना अच्छी तरह़ याद है, उनकी शख़्सियत में बुज़ुर्गी और रूह़ानी कशिश का असर अब भी मह़सूस करता हूँ। 1952 ई० में उनके विसाल की ख़बर पर कानपुर के बरकाती हज़रात का रन्जो ग़म में डूबा क़ाफ़िला जब मारहरा शरीफ़ के लिये रवाना हो रहा था, उस वक़्त की ग़मनाक यादें भी ज़ेहन में मह़फ़ूज़ हैं। ह़ुज़ूर सय्यदुल उलमा ह़ाफ़िज़ व क़ारी मुफ़्ती सय्यद शाह आले मुस्तफ़ा सय्यद मियाँ के ख़ुतबात की मानविय्यत, मेयार और उनके घन गरज को आज भी मह़सूस करता हूँ।

पयामे बरकातः आपने बैअ़त होने से पहले और बैअ़त होने के बाद की ज़िन्दगी में क्या फ़र्क़ मह़सूस किया?

अतीक़ अह़मदः मैं बैअ़त होने से पहले भी अपने बरकाती बाप की मज़बूत गिरफ़्त में पला बढ़ा था, इसलिए बरकाती रंग में ही ज़िन्दगी गुज़र रही थी, बाज़ाब्ता बैअ़त होने के बाद अपने मुर्शिदे करीम की तर्बियत और उनकी नसीह़तें सुन सुन कर उन पर ही अ़मल करने की कोशिश की वजह से अलह़म्दुल्लिलाह तआ़ला ईमान, अक़ीदे और अ़मल में पक्का मुसलमान हूँ।

पयामे बरकातः अपने मुर्शिद की कुछ नसीह़तें बयान कीजिए?

अतीक़ अह़मद बरकातीः अपने मुर्शिद की नसीह़तें बयान करना?... बहुत लम्बा मज़मून या पूरी किताब में भी उनका एह़ाता मुश्किल से हो सकेगा। मैं सिर्फ़ दो एक नसीह़तें बताता हूँ, ताकि आज के नौजवान अगर चाहें तो सबक़ ह़ासिल करके फ़ायदा उठा सकते हैं।

मेरे मुर्शिद ने एक बार मुझसे पूछा कि अतीक़ भाई आपकी उम्र कितनी है? मैंने अर्ज़ कियाः 38 साल। हिदायत फ़रमाई कि **40 साल उम्र होने के बाद मिठाई और चिकनाई खाना छोड़ दीजियेगा।** मैं मीठे का ऐसा रसिया था कि मुर्शिद की हिदायत को भूल गया। इस भूल का ख़ामयाज़ा आज भुगत रहा हूँ। शुगर का मर्ज़ हुआ, फिर दिल में तीन छल्ले डाले गए। इसी तरह़ एक और तालीम फ़रमाई कि **40 साल के बाद आदमी को पानी पीने की मिक़दार ख़ूब बढ़ा देनी चाहिए, इतनी मिक़दार में पानी पियो कि दिन में कम से कम दो बार आलाते बौल (मसाना) की ख़ूब धुलाई हो कि पेशाब ख़ूब हो जाये, इस तरह़ गुर्दों की ख़राबी और दीगर अमराज़ से बचा जा सकता है।** यह हैं सच्चे मुर्शिदाने मारहरा जो अपने मुरीदीन का हर तरह़ से ख़्याल रखते हैं। अल्लाह सबको ऐसे मुर्शिद का साया नसीब

फ़रमाए। (आमीन)

पयामे बरकातः हमारे क़ारेईन के लिये आपका कोई पैग़ाम?

अतीक़ अह़मद बरकातीः बरकाती मुर्शिदाने किराम यानी शहज़ादगाने मुर्शिदे आ़ज़मे हिन्द अलैहिर्रह़मा पिछले 20 साल से ज़ाइद अर्से से मुसलमानों की तालीम के अ़मली इक़दाम करने में अपने दिनो रात सर्फ़ कर रहे हैं, जिसके नतीजे दुनिया की आँखों के सामने ज़मीन पर बिखरे हुए हैं। हम सब उसी तालीमी मिशन का ह़िस्सा बनें और अपनी अपनी बस्तियों में सर्वे करके देखें कि मोमिनों में तालीम को बढ़ावा देने के लिए आप क्या मदद कर सकते हैं?। जिन ह़ज़रात की ह़ैसियत महीने में 500 रूपये ही इस मद में ख़र्च कर सकने की हो, वह भी किसी एक बच्चे को अपने ज़िम्मा लेकर तालीम याफ़्ता बना सकते हैं। मैंने हर साल में एक-एक और दो-दो बच्चों को लेकर B.C.A, B.Tech करने में मदद की और उनसे यह वादा लिया कि जब तुम इस लायक़ हो जाना तो तुम ख़ुद भी कम से कम एक बच्चे की इसी तरह़ मदद और रहनुमाई करना और उससे ख़ुद भी वादा कराना कि अगली नसलों के साथ यही तरीक़ा जारी रखे। एक चिराग़ से दूसरा चिराग़ जलेगा और पूरा मुआ़शरा रौशन हो जायेगा।

यह सिलसिला इंशाअल्लाह जारी रहेगा तो मेरा यक़ीन है कि मेरे 34 बच्चे जो मआ़शी तौर पर ख़ुद कफ़ील हो गए हैं और अब वह दूसरे बच्चों की रहनुमाई और मदद कर रहे हैं, यही सिलसिला जारी रहेगा। ख़ुदा करे आप भी इसी तरह़ की मुहिम चला रहे हों। अगर ऐसा करना शुरू न किया हो तो अब करें, इंशाअल्लाह कामयाबी आपके क़दम चूमेगी। ★★★

★ 105/114, चमनगंज, कानपुर, (यूपी)
ateequebarkaati@gmail.com

ख़ुलूसो ख़ुल्क़ का पैकर शफ़ीक़े मिल्लत थे

यक़ीनन आले पयम्बर शफ़ीक़े मिल्लत थे
ज़िया-ए-ह़क़ से मुनव्वर शफ़ीक़े मिल्लत थे

दमे विसाल भी तलक़ीने मसलके असलाफ़
नक़ीबे शरअ़ मुतह़्ह़र शफ़ीक़े मिल्लत थे

सलाम पहले ही कर लेना उनकी आदत थी
ख़ुलूसो ख़ुल्क़ का पैकर शफ़ीक़े मिल्लत थे

तिरासी साला और पाबन्दे ह़ाज़िरी मस्जिद
सलात व सौम के ख़ूगर शफ़ीक़े मिल्लत थे

दुआ़ से उनकी ह़ज़ारों की भर गई झोली
ख़ुदा के दीन के मज़ह़र शफ़ीक़े मिल्लत थे

चमक न चेहरे की फीकी पड़ी दमे आख़िर
अ़ली के ऐसे गुले तर शफ़ीक़े मिल्लत थे

वो जिनको देख के आए ख़ुदा की याद अकबर
उसी क़बीले के जौहर शफ़ीक़े मिल्लत थे

मौ० मुह़म्मद अकबर अ़ली बरकाती
उस्तादः जामिया अह़सनुल बरकात, मारहरा शरीफ़।

डॉ० मुहम्मद अफ़ज़ाल बरकाती

डायबिटीज़ (शुगर)

पहली क़िस्त

हम जो खाना खाते हैं उसे तीन हिस्सों में बाँटा जा सकता है। तवानाई के पैमाने यानी कैलोरी के हिसाब से रोटी या चावल जो खाने का बड़ा हिस्सा है, 60 प्रतिशत है। गोश्त, पनीर या दालें जो प्रोटीन है 20 फ़ीसद है। अब खाना जिस रोग़न या चिकनाई में तैयार किया जाता है। वह भी 20 प्रतिशत पाई जाती है।

रोटी या चावल में कार्बोहाइड्रेट यानी शुगर होती है। यह शुगर रोटी का पहला लुक़मा मुँह में रखते ही ख़ून में तेज़ी से शामिल हो जाती है। हम खाना खाते जाते हैं और शुगर ख़ून में बढ़ती चली जाती है। जब यह शुगर 200 मिली ग्राम पहुँच जाती है, तब गुर्दे के ज़रिये पेशाब के साथ बाहर निकलना चाहती है, मगर उससे पहले हमारे लबलबा यानी Pancreas से इन्सुलिन नामी एक हार्मोन निकलना शुरू हो जाता है, जिसके ख़ून में आते ही तेज़ी से बढ़ती हुई शुगर को ब्रेक लग जाता है। क्योंकि यह इन्सुलिन शुगर को जिगर की तरफ़ ले जाती है, जहाँ मुक़व्वी शुगर यानी ग्लाईकोजिन में बदल दी जाती है, जो कि जिगर में क़ैद करली जाती है। इस तरह़ खाना खाने के बाद ख़ून में मख़सूस मिक़दार में ही शुगर बनी रहती है, जब ज़्यादा वक़्त गुज़र चुकता है और ख़ून में शुगर का लेवल (Level) गिरने लगता है, तब लबलबा से दूसरा हार्मोन छूटने लगता है। इस हार्मोन को ग्लूकागन (Glycogen) कहते हैं। इसके ख़ून में आते ही इन्सुलिन कम होने लगता है। अब ग्लूकागन जिगर में क़ैद मुक़व्वी शुगर को जिगर से बाहर निकालता है और वापस उसे ग्लूकोज़ यानी शुगर में तब्दील कर देता है। फिर कई घण्टों के बाद जब जिगर के स्टोर से बाहर आई हुई ग्लूकोज़ भी घटने लगती है, तब हमें भूक लगती है। दुबारा खाना न मिले तब जिस्म में जो चरबी जमा होती है, वह शुगर में तब्दील होने लगती है। क्योंकि जिस्म के कुछ अंग जैसे दिमाग़ और उसकी नसें और आँखें सिर्फ ग्लूकोज़ ही पर ज़िन्दा रहते हैं। अगर खाना कई दिनों तक न मिले तो अब जिस्म के गोश्त यानी प्रोटीन का नम्बर आता है और प्रोटीन भी ग्लूकोज़ में तब्दील होने लगती है। इस तरह़ आम तौर पर एक आदमी बिना खाना खाये 28 दिनों तक ज़िन्दा रह सकता है।

ऊपर लिखी हुई इबारत का डायबिटीज़ को लेकर ख़ुलासा यह है कि खाने के बाद ख़ून में ग्लूकोज़ का बढ़ना और बढ़े हुए ग्लूकोज़ यानी शुगर को इन्सुलिन का उसे क़ाबू में रखना। मतलब यह है कि अगर इन्सुलिन ख़त्म हो जाए या कमज़ोर पड़ने लगे या इन्सुलिन के ख़िलाफ़ मुख़ालफ़त बरपा यानी Resistance होने लगे तब इन सूरतों में शुगर पर इन्सुलिन का क़ब्ज़ा हट जायेगा और शुगर आज़ाद होकर ख़ून में बढ़ने लगेगी। यहाँ तक कि गुर्दे के रास्ते से पैशाब के साथ बाहर निकल कर बरबाद होने लगेगी। साफ़ मतलब यह है कि जो रोटी या चावल हम तवानाई

ह़ासिल करने के लिये खा रहे थे वह पेशाब के साथ ग्लूकोज़ की शक्ल में बाहर हो गई और अगर यह सिलसिला आगे भी जारी रहा तो जिस्म के अन्दर इमरजेंसी का निफ़ाज़ हो जाता है। यानी जिस्म में जमा चर्बी और गोश्त का अब ख़ात्मा होना शुरू हो जायेगा और मरीज़ का वज़न दिन ब दिन घटता चला जायेगा। खाना खाने के बावजूद मरीज़ उससे फ़ायदा उठाने से महरूम होता चला जायेगा। इन सबके पीछे बुनियादी वजह इन्सुलिन की कमी या इसमें ख़राबी है।

याद रहे कि हमारे ख़ून की चरबी दो तरह़ की होती है। अच्छी चर्बी और बुरी चर्बी, अच्छी चर्बी वह है जो पतली हो, ख़ून की रगों में जमे नहीं। बुरी चर्बी वह है जो ख़ून की नालियों और रगों के अन्दर जमकर ख़ून पहुँचने के रास्ते तंग कर दे और किसी अंग जैसे दिमाग़, दिल, आँख और गुर्दों को मुसलसल ख़ून की कमी में मुब्तला रखे। तो डायबिटीज़ के चलते मरीज़ के ख़ून में बुरी चर्बी यानी कोलेस्ट्रॉल, LDL और ट्राइग्लिसराइड की ज़्यादती हो सकती है जो मर्ज़ को और ज़्यादा ख़तरनाक और दुश्वार बना देती है।

अब हम पर आसान है कि हम यहाँ ज़रा ठहरें, ह़ासिल मुतालआ़ मज़मून को एक जगह जमा करें और डायबिटीज़ की तारीफ़ लिखें: डायबिटीज़ मलाईटिस एक ऐसी तब्बी बीमारी का मजमुआ़ है जिसमें इन्सुलिन की मिक़दार में कमी हो जाने के वजह से या उसके काम में ख़राबी पैदा हो जाने की वजह से ख़ून में ग्लूकोज़ की मिक़दार बराबर बढ़ी रहती है।

इन्सुलिन की कमी की वजह से तीनों ग़िज़ाई ह़िस्से यानी शुगर, चर्बी और प्रोटीन के मामलात मुतासिर हो जाते हैं और यह मिलकर जिस्म के अन्दर के क़ुदरती माह़ौल में बिगाड़ पैदा करते हैं, यहाँ तक कि मौत वाक़ेअ़ हो सकती है। अगर यह अन्दरूनी क़ुदरती माह़ौल लम्बे अर्से तक बिगड़ा रहे तो कई ख़ास अंग मसलन गुर्दा, आँख और दिमाग़ और उसकी नसें ख़राब होने लगती हैं और इन्हें डायबिटीज़ के ख़राब असरात कहा जाता है। इस बीमारी के बारे में एक ग़लत बात यह मशहूर हो गई है और कहा जाने लगा है कि हल्की डायबिटीज़ से मरीज़ को ख़तरा कम रहता है और इलाज ज़रूरी नहीं है। बल्कि सह़ी तो यह है कि हल्की डायबिटीज़ में ही मरीज़ को दिल के दौरे पड़ने और फ़ालिज का अटैक पड़ने का ख़तरा बराबर मंडलाता रहता है।

डायबिटीज़ की क़िस्में: इसकी दो क़िस्मे हैं।

(1) टाईप वन डायबिटीज़: यह सख़्त बीमारी है जिसमें लबलबा के इन्सुलिन पैदा करने वाले खुलिये, उस पर Antigen (प्रतिजन) के ह़मले की वजह से बरबाद हो जाते हैं और इन्सुलिन बहुत कम रह जाती है। यह नौजवानों में मिलती है।

अलामतें यह हैं: पैशाब की ज़्यादती, प्यास की शिद्दत, ख़ून में ग्लूकोज़ की ज़्यादती, वज़न का घटना और ख़ाली पेट शुगर का 140 के ऊपर रहना।

(2) टाईप टू डायबिटीज़: यह इन्सुलिन के काम में नुक़्स या इन्सुलिन के ख़िलाफ़ मुदाफ़अ़त (यानी इन्सुलिन तो पूरी है, मगर पूरा काम नहीं कर पा रही है।) पैदा हो जाने की वजह से हो जाती है। डायबिटीज़ के 90 प्रतिशत मरीज़ टाईप टू के होते हैं। ऐसे मरीज़ 40 साल से ज़्यादा उम्र वाले होते हैं और साथ ही साथ मोटे भी होते हैं। इस मोटापे को मरकज़ी मोटापा कहते हैं, जिसमें हाथ और पैर पतले और पेट मोटा यानी तोन्द बाहर

निकली हुई। इसे टाईप टू मोटापा कहते हैं और यह बर्रे आ़ज़म एशिया के मर्द और औरतों की पहचान है।

इसकी अलामतें यह हैः मर्दों के अज़ू ख़ास के ऊपर शुरू होने वाली जिल्द पर सुर्ख़ी और सूजन जिसे Balanitis कहा जाता है, औरतों के उ़ज्चे ख़ास के अन्दर खुजली होना, चर्म रोग, हाई ब्लड प्रेशर और मोतिया बिन्द वग़ैरह।

पहचानः डायबिटीज़ के मरीज़ की पहचान इन शिकायतों के पाए जाने से होती है। प्यास लगना, बार बार मुँह सूखना, बार बार पेशाब आना, रात में पेशाब के लिए बार बार उठना, थकान सुस्ती कमज़ोरी वज़न में तेज़ी से कमी का होना, आँखों से धुंधला दिखाई पड़ना, औरत और मर्द के उ़ज्चे ख़ास में खुजली मतली और सर दर्द होना, बार बार मीठा खाने की ख़्वाहिश, खाने की ज़्यादती, मूड में बदलाव, चिड़ चिड़ापन एक जगह ध्यान लगाने में, ताक़त का कमज़ोर पड़ जाना, हौसला और दिलचस्पी में कमी हो जाना।

पहचान के लिए जाँचेंः (1). नाश्ता या खाने के कई घण्टा गुज़र जाने के बाद शुगर की जाँच यानी Random Blood Glucose का 200 मिली ग्राम या ज़्यादा होना, साथ में दूसरी अ़लामतों का होना। (2). सुबह़ ख़ाली पेट की शुगर 140 या ज़्यादा होना। कम से कम दोनों बार इतनी ही शुगर का पाया जाना। (3). 75 ग्राम ग्लूकोज़ कम से कम 300 मिली लीटर पानी में घोल कर पीने के 2 घण्टे बाद चेक करने पर 200 मिलीग्राम या उससे ज़्यादा होना। इस टेस्ट को OGTT कहते हैं। (जारी है) ★★★

★ **मेडिकल चेम्बर, पक्का बाग़ इटावा, यूपी।**
Mob. 09411480899

पेज न० 34 का बाक़ी क़ुरआ़ने करीम की इन आयाते मुबारका और अह़ादीसे नबविय्या की वज़ाह़त से मालूम हुआ कि अपने वतन से प्यार करना इन्सान की फ़ितरत में शामिल है। लिहाज़ा ऐसा कोई नहीं हो सकता जिसे अपने मुल्क से मुह़ब्बत न हो और अगर ऐसा कोई है तो उसके अन्दर इन्सानियत नहीं है। नीज़ एक आ़म इन्सान के लिए अपने मुल्क से, अपने मुल्क के लोगों से, उसकी हर हर चीज़ से मुह़ब्बत करना सिर्फ़ फ़ितरी बात है, मगर एक मुसलमान के लिये अपने वतन से मुह़ब्बत करना, अपने मुल्क के लोगों से मुह़ब्बत करना और मुल्क का माह़ौल पुर अमन रखना सिर्फ़ फ़ितरी चीज़ ही नहीं बल्कि उसके नबी-ए-पाक की सुन्नत भी है, जिसके लिए वह अपनी जान भी क़ुर्बान कर सकता है।

हुब्बे वतन का तक़ाज़ाः इस्लाम के हवाले से वतन की मुह़ब्बत और उसकी अहमियत जान लेने के बाद तक़ाज़ा-ए-हुब्बे वतन का जानना भी निहायत ज़रूरी है। हुब्बे वतन का तक़ाज़ा यह है कि इन्सान को अपने वतन के लोगों के दुख दर्द का सह़ी एह़सास हो, वह उनकी ख़ुशी और ग़म में बराबर शरीक हो, अपने इल्म व हुनर और दौलत व सरवत से मुल्क व मिल्लत की ख़िदमत करे, मुल्क व क़ौम के लिए हर वक़्त क़ुर्बानी देने के लिए हर वक़्त तैयार रहे। अपने वतन की तामीर व तरक़्क़ी में बढ़-चढ़कर ह़िस्सा ले। क्योंकि सच्चा मुह़िब्बे वतन वही है जिसमें दयानतदारी, फ़र्ज़ शनासी, हमदर्दी और क़ुर्बानी का जज़्बा मौजूद हो। ★★★

★ **अल-बरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, अलीगढ़।**

गोट फ़ार्मिंग

गोट फ़ार्मिंग बिज़नेस (व्यापार) की सबसे ख़ास बात यह है कि बकरी पालना तमाम नबियों की सुन्नत है। हमारे सरकार ﷺ ने इससे बड़ी मुहब्बत की और इसको बाइसे बरकत बताया है। इसलिए हम लोग अगर इसी सोच के साथ काम करने की कोशिश करें तो इंशाअल्लाह बरकत होनी ही है। गोट फ़ार्मिंग एक ऐसा बिजनेस है जिसे थोड़ी सी लाग़त और जानकारी के साथ शुरू कर सकते हैं। बकरी पालन के लिए कोई ख़ास इन्तज़ाम की ज़रूरत नहीं होती और इसमें दूसरे बिज़नेस की तरह़ जोखिम भी कम उठाना पड़ता है। एक बात को गोट फ़ार्मिंग शुरू करने से पहले ध्यान में रखना बहुत ज़रूरी होता है कि अगर आप Large Scale (बड़े पैमाने पर) काम करना चाहते हैं तो बिज़नेस पलान के साथ प्रैक्टिकल नॉलेज भी बेहद ज़रूरी है। जैसे कि हम सभी जानते हैं कि बकरी के गोश्त की पूरे इंडिया में मांग बढ़ती जा रही है। एक सर्वे के ह़िसाब से गोट फ़ार्मिंग का बिजनेस लगभग 9% की रफ़्तार से बढ़ रहा है। एक आंकड़े के मुताबिक़ चीन गोट फ़ार्मिंग में नम्बर 1 है और इंडिया नम्बर 2 पर है।

बकरी पालन के फ़ायदेः बकरी का आकार छोटा होता है इसलिए उनको छोटी जगह पर पाला जा सकता है, क्योंकि यह ज़्यादा शोर नहीं करतीं न ज़्यादा दौड़ती हैं। इसलिए इन्हें एक जगह पर आसानी से पाला जा सकता है। यह पालतू होती हैं, इसलिए आसानी से पल जाती हैं इनका रख रखाव आसान होता है, इसलिए कम इन्वेस्टमेंट (लागत) में हो जाता है। बकरी हर साल 1 से 5 बच्चे देती है। यह एक साल या 14 महीनों में बच्चा देने के लायक हो जाती है। इनका गर्भ धन लगभग (150 + 3 दिन) का होता है। यह लगभग 8 से 10 साल तक बच्चे देती हैं। इनकी औसत उम्र 12 से 15 साल है। यह लगभग 2 साल तक दूध देती हैं। इनका दूध आस्थमा (साँस की बीमारी) में फ़ायदेमंद होता है। इस व्यवसाय (तिजारत) के लिए बैंकों से भी आसानी से लोन मिल जाता है।

चंद बेहद ज़रूरी तजुर्बे की बातेंः बकरियों के खुरों के अक्सर गीले रहने से बीमारी होती है अथवा इन्हें हमेशा सूखी जगह में रखें। इनका टीका करण समय पर होना बेहद ज़रूरी होता है। जिनमें P.P.R का टीका ज़रूर लगवाए, और टीका जो ज़रूरी है वो है ET, FMD चिकन पोक्स (चेचक)।

बकरी व्यवसाय शुरू करने से पहले यह ज़रूरी है कि आप वो नस्लें चुनें जो जल्द बड़ी हो जाती है। जैसेः बरबरी, सिरोही, मारवाड़ी और ब्लैक बगाल।

इनके पेट में कीड़े होते हैं, इसलिए इनको हर 3 से 4 महीने में एक बार डी वॉर्मिंग करा लेना चाहिए। इनके रहने का शेड बाक़ी पेज न० 57 पर देखें।

मौ० मुहम्मद अफ़रोज़ क़ादरी

सबक़ आमोज़ कहानियाँ

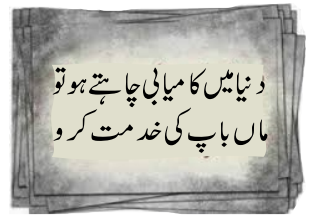

माँ की ख़िदमत

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अलैहि अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब वली थे। आप अपनी माँ की ख़िदमत को सबसे बड़ी इबादत और उनकी ख़ुशी को दुनिया की सबसे बड़ी नेअ़मत जानते थे।

एक रात वालिदा ने उनसे पानी माँगा। हज़रत बायज़ीद प्याला लेकर पानी लेने गए, सुराही को देखा तो वह खाली पड़ी थी, किसी और बरतन में भी पानी नहीं था। फिर क्या हुआ कि आप पानी की तलाश में दरिया की तरफ़ चल दिये।

उस रात सख़्त सर्दी पड़ रही थी, जब आप दरिया से पानी लेकर वापस हुए तो वालिदा सो चुकी थीं। हज़रत बायज़ीद प्याला लेकर वालिदा के पायेंती (पैर की तरफ़) की तरफ़ खड़े हो गए। सर्दी की वजह से आपको बड़ी तकलीफ़ महसूस हो रही थी, मगर आपने वालिदा की ख़िदमत पर अपने आराम को क़ुर्बान कर दिया और पानी का प्याला लिये चुप-चाप खड़े रहे कि न मालूम कब वालिदा को प्यास सताए, वह पानी की तलब में उठें और मैं गायब रहूँ।

कुछ देर बाद आपकी वालिदा की आँख खुली तो उन्होंने देखा कि आप पानी का प्याला लिये खड़े हैं। वालिदा ने उठकर पानी पिया और कहने लगीं:

बेटे! तुमने इतनी तकलीफ़ क्यों उठाई, पानी का प्याला मेरे बिस्तर के क़रीब रख देते, मैं उठकर ख़ुद पी लेती।

हज़रत बायज़ीद ने जवाब दिया: "आपने मुझसे पानी माँगा था। मुझे इस बात का डर था कि जब आपकी आँख खुलेगी तो कहीं मैं आपके सामने हाज़िर न हूँ। वालिदा यह सुनकर बहुत ख़ुश हुईं और उन्हें दुआयें देने लगीं।

प्यारे बच्चो! माँ की ख़िदमत ने हज़रत बायज़ीद को विलायत व करामत में आला मक़ाम अ़ता कर दिया था। देखा! हुज़ूर रहमते आ़लम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व आलैही वसल्लम ने माँ के ताल्लुक़ से कितनी बड़ी बात इरशाद फ़रमाई। आपने इस बात को ब-तकरार तीन बार फ़रमाया:

"मेरी वसीयत है कि हर शख़्स अपनी माँ की ख़िदमत व इताअ़त बजा लाए।" (सुनने इब्ने माजा: 11/48, ह़दीस: 1840)

बे गर्ज़ नेकी

एक नेक औरत कहीं गाड़ी में बैठकर जा रही थी कि उसे सड़क पर छोटी उम्र का एक लड़का दिखाई दिया, जो नंगे पाँव चला जा रहा था और बहुत थका हुआ मालूम होता था। यह देखकर नेक औरत ने ड्राइवर से कहा: "ग़रीब लड़के को गाड़ी में बिठा लो, उसका किराया मैं अदा कर दूंगी।"

बीस साल बाद उसी सड़क पर एक कप्तान गाड़ी पर सवार चला जा रहा था, उसकी नज़र इत्तिफ़ाक़न एक बूढ़ी औरत पर जा पड़ी जो थकी हुई चाल से पैदल चल रही थी। यह देखकर कप्तान ने ड्राइवर को हुक्म दिया कि गाड़ी रोक कर उस बूढ़ी औरत को भी साथ बिठालो, उसका किराया मैं अदा कर दूँगा।

जब मन्ज़िल पर सारी सवारियाँ गाड़ी से उतरने लगीं तो बूढ़ी औरत ने कप्तान का शुक्रिया अदा करके कहा कि ''इस वक़्त मेरे पास किराया अदा करने के लिये पैसे नहीं हैं।''

कप्तान ने कहाः तुम बिल्कुल फ़िक्र न करो। मैंने किराया दे दिया है, क्योंकि मुझे बूढ़ी औरतों को पैदल चलते देखकर हमेशा तरस आ जाता है, इसकी वजह है यह कि कोई बीस साल हुए जब मैं ग़रीब लड़का था। मुझे इसी जगह कहीं आस-पास सड़क पर नंगे पाँव पैदल चलते देखकर एक रहम दिल औरत ने गाड़ी में बिठा लिया था। बूढ़ी औरत ने ठंडी साँस भरते हुए कहाः कप्तान साहब! वह औरत यही कम नसीब बुढ़िया है। मगर अब इसकी हालत इतनी बिगड़ गई है कि वह अपना किराया भी नहीं दे सकती।

कप्तान ने कहाः नेक बख़्त अम्मा! अब आप इसका कोई ग़म न करें। मैंने बहुत सा रूपया कमा लिया है और ज़िन्दगी के बाक़ी दिन आराम से काटने के लिये वतन (मुल्क) आ रहा हूँ। तुम जब तक ज़िन्दा रहोगी मैं बड़ी ख़ुशी से तुम्हारी ख़िदमत करूँगा।

यह सुनकर बूढ़ी औरत शुक्रिया अदा करती हुई रो पड़ी और कप्तान को दुआएँ देने लगी और फिर कप्तान तमाम उम्र उसकी मदद करता रहा।

प्यारे बच्चो! देखो हमारे आक़ा-ए-करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व आलैही वसल्लम का फ़रमान कितना सच्चा हैः

''हर नेकी का बदला दस गुना ज़्यादा करके मिलता है।'' (सही बुख़ारीः 7/89, हदीसः 1840)

पेज न० 24 का बाक़ी। लिये दिया जाये और उसमें दिखावे का दख़ल न हो तो चाहे ज़ाहिर करके दिया जाए या छुपाकर दोनों बेहतर हैं, लेकिन सदक़ा-ए-फ़र्ज़ (ज़कात, फ़ित्र) को ज़ाहिर करके देना अफ़ज़ल है और सदक़ा-ए-नफ़ल को छुपाकर। और अगर नफ़ली सदक़ा देने वाला दूसरों को ख़ैरात की तरग़ीब दिलाने की नीयत से एलानिया दे तो यह भी अफ़ज़ल है।

इन्सान के पास जो कुछ माल व दौलत है वह सब अल्लाह पाक का दिया हुआ है, उसका अपना कुछ भी नहीं है, लेकिन उसके बा वजूद अल्लाह पाक अपनी राह में ख़र्च किए गए माल को ''क़र्ज़े हसन'' से ताबीर फ़रमाया है और कई गुना सवाब का वादा भी किया है। इरशादे पाक हैः ''है कोई जो अल्लाह को क़र्ज़े हसन दे तो अल्लाह उसके लिए बहुत गुना बढ़ा दे। (अल-बक़राः 245) इसके बा वजूद अगर हम अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च न करें, तो हमारे लिए इससे बड़ी बद नसीबी और क्या होगी है? लिहाज़ा हमें चाहिए कि अल्लाह की राह में ज़्यादा से ज़्यादा माल ख़र्च करें। क्योंकि हम जो माल उसकी राह में ख़र्च करेंगे हक़ीक़त में वही हमारी बचत होगी बाक़ी सारा माल दुनिया ही में रह जायेगा। ★★★

★ उस्तादः जामिया अहसनुल बरकात, मारहरा शरीफ़।

मुर्शिदाने मारहरा के तब्लीग़ी असफ़ार

मुर्शिदाने मारहरा (हुज़ूर अमीने मिल्लत और हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत दामत बरकातुहुम) अपनी दीनी, मिल्ली, तदरीसी, ख़ानक़ाही, रिफ़ाही, त़ालीमी, घरेलू और दूसरी मसरूफ़ियात के बावजूद भी दीन की तब्लीग़ और अल्लाह के बन्दों की हिदायत व रहनुमाई के लिये दूर दराज़ का सफ़र करते हैं और दीनी मजलिसों और मज़हबी प्रोग्रामों में शरीक होते हैं। हर दौरे में बे शुमार लोग आपके नसीह़त आमेज़ कलेमात से फ़ायदा उठाते हैं और बहुत से लोग आपके मुबारक हाथों पर तौबा कर के सिलसिला-ए-बरकातिया में दाख़िल भी होते हैं। इन मुर्शिदाने किराम के कुछ अहम दौरों की रिर्पोट यहाँ पेश की जा रही है। **(इदारा)**

डॉ० मुह़म्मद मुशाहिद हुसैन रज़वी ★

हुज़ूर अमीने मिल्लत सय्यद शाह मुह़म्मद अमीन मियाँ क़ादरी बरकाती के दौरे

16 जनवरी 2016 ई० बरोज़ सोमवार रात 10:45 बजे हुज़ूर अमीने मिल्लत दामा ज़िल्लुहू, हज़रत अमान मियाँ व हज़रत उस्मान मियाँ ह़ाजी अनीस ग़ाज़यानी, ह़ाजी आमिर ग़ाज़यानी और राक़िमुल हुरूफ़ डॉक्टर ''अन्सार जमाअ़त खाना'' ज़ियाफ़त की जगह पहुँचे, जहाँ भारी तादाद में मालगावों व इंदौर के लोगों ने हज़रत का पुरजोश इस्तक़बाल किया।

17/1/2016 ई० को सुबह़ 11 बजे ''मस्जिद मुफ़्ती-ए-आज़म'' शमा कॉम्पलेक्स आगरा रोड में हुज़ूर अमीने मिल्लत ने हुमैरा और बिलाल नूरानी का निकाह़ पढ़ाया। इससे पहले हज़रत ने मुख़्तसर सा इस्लाही ख़िताब फ़रमाते हुए बेजा और फ़ुज़ूल रस्म व रिवाज से दूर रहने की तलक़ीन फ़रमाई। निकाह़ के बाद हुज़ूर अमीने मिल्लत, हज़रत अमान मियाँ व हज़रत उस्मान मियाँ ने ह़ाजी आमिर ग़ाज़यानी बरकाती के साथ हुज़ूर ताजुल उलमा अलैहिर्रह़मा के हाथों खोले गये क़दीम दीनी दरसगाह **जामिया ह़नफ़िया सुन्निया** में तशरीफ़ फ़रमा हुए, जहाँ असातज़ा-ए-किराम, ज़िम्मादारान और बड़ी तादाद में अह़बाबे अहले सुन्नत ने इस्तक़बाल किया। हुज़ूर अमीने मिल्लत साह़ब ने आधे घण्टे से ज़्यादा बसीरत अफ़रोज़ इल्मी और इन्किलाबी ख़िताब फ़रमाया और लोगों को मसलके आला हज़रत क़ायम पर रहने की नसीह़त फ़रमाई। यहाँ इंग्लैण्ड से तशरीफ़ लाये मौलाना नियाज़ अह़मद मुस्तफ़वी और अफ़्रीक़ा से तशरीफ़ लाये मौलाना अ़ब्दुल ह़ई नसीमुल क़ादरी से भी मुलाक़ात भी हुई। निकाह़ के प्रोग्राम में ''मक़ालाते मुफ़क्किरे इस्लाम'' और ''यादगारे रज़ा,'' का रस्मे इजरा भी फ़रमाया। बाद निकाह़ हुज़ूर अमान मियाँ क़िब्ला ने राक़िम के साथ रज़ा एकेडमी मालेगाँव के आलीशान दफ़्तर का मुआ़यना किया, इल्मी मुज़ाकरे हुए। हज़रत अमान मियाँ ने इन्क़लाब आफ़रीं पैग़ाम दिए और ख़िदमात को सराहा।

नूरी मिशन मालेगाँव के वफ़द से भी मुलाक़ात हुई। ग़ुलाम मुस्तफ़ा रज़वी और दीगर अह़बाब की ख़िदमात को हज़रत अमान मियाँ ने सराहा। आला हज़रत फ़ाउण्डेशन के नौजवानों को भी अमान मियाँ क़िब्ला ने दीन व सुन्नियत की ख़िदमत पर मुबारकबाद दी।

रज़ा एकेडमी के शकील सुब्ह़ानी से इल्मी मुज़ाकरे हुए। यहाँ से राक़िम (मुशाहिद रज़वी) के मकान पर भी अमान मियाँ क़िब्ला तशरीफ़ ले गए, जहाँ मुफ़्ती मुह़म्मद रज़ा मरकज़ी, मुह़म्मद आमिरूल बरकात, अह़मद शफ़ीक़ आर्टिस्ट, वसीम रज़वी और जनाब अ़ब्दुर्रशीद बरकाती ने इस्तक़बाल किया।

बाद नमाज़े ज़ोहर ज़ियाफ़त के बाद मालेगाँव से रवानगी हुई। मालेगाँव के इस मुख़्तसर से दौरे में हज़रत अमीने मिल्लत व शहज़ादगान ने अहले सुन्नत की मुख़्तलिफ़ तन्ज़ीमों और इदारों के ज़िम्मेदारान से मुलाक़ात की और शहज़ादगाने बरकात ने शहरे मालेगाँव की सुन्नितय पर इत्मिनान का इज़हार किया। मालेगाँव में सुन्नी दावते इस्लामी के वफ़द ने सय्यद मुह़म्मद अमीनुल क़ादरी के हमराह हज़रत की क़दम बोसी की, उसके बाद रज़ा लाइब्रेरी के पास पहुँचकर गाड़ी में से मुआ़इना किया। ह़ाजी अनीस बरकाती व फ़ैमली का मालेगाँव वालों ने तहे दिल से शुक्रिया अदा किया। हज़रत वहाँ से शहज़ादगान के साथ अलीगढ़ तशरीफ़ ले गए। ★★★

★ mushahidrazvi79@gmail.com

क़ारी मुह़म्मद कौसर बरकाती★

हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत सय्यद शाह नजीब हैदर नूरी बरकाती के दौरे

(1) 27 फ़रवरी 2016 ई० को बड़ौदा (गुजरात) का दौराः

27 फ़रवरी बरोज़ सनीचर बाद नमाज़े इशा बड़ौदा में आ़शिक़ाने आला हज़रत की कोशिशों के नतीजे में तालीमाते आला हज़रत को आ़म करने और मसलके आला हज़रत के तह़फ़्फ़ुज़ के लिए **"आला हज़रत कॉन्फ्रेंस"** मुनाक़िद हुई, जिसमें हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत दामा ज़िल्लुहू के साथ मुक़र्ररे ख़ुसूसी की ह़ैसियत से हज़रत मुफ़्ती मुह़म्मद ह़नीफ़ बरकाती साह़ब ख़लीफ़ा हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत ने शिरकत फ़रमाई।

हज़रत मुफ़्ती साह़ब का ख़िताब इस्लाह़ी और निहायत कार आमद रहा। उन्होंने दौराने ख़िताब आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ज़िन्दगी के उन पहलुओं को उजागर किया जो मुसलमानों के लिए क़ाबिले तक़लीद हैं। दौराने जलसा तक़रीरों और नातों का लम्बा सिलसिला चला, आख़िर में हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत दामा ज़िल्लुहूल आ़ली ने "दौरे ह़ाज़िर में मसलके आला हज़रत की ज़रूरत व अहमियत" पर निहायत मुदल्लल ख़िताब फ़रमाया और ह़ाज़िरीन को मसलके आला हज़रत यानी मसलके अहले सुन्नत व

जमाअ़त पर मज़बूती के साथ क़ायम रहने की ताकीद फ़रमाई। इस सिलसिले में आपने बद-मज़हबों के मकर व फ़रेब से होशियार रहने की तलक़ीन फ़रमाई। ख़िताब के बाद भारी तादाद में लोग आपके मुक़द्दस हाथों सिलसिला-ए-आ़लिया क़ादरिया बरकातिया में दाख़िल हुए, यह जलसा आपकी दुआ़ पर इख़्तिताम को पहुँचा।

(2) 28 फ़रवरी 2016 ई० को अह़मदाबाद (गुजरात) का दौराः

28 फ़रवरी बरोज़ इतवार **"जश्ने मुर्शिदे आज़मे हिन्द"** में हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत दामा ज़िल्लुहुल आ़ली की शिरकत हुई। अह़मदाबाद में ह़ज़रत के पहुँचने का लोगों को इल्म क्या हुआ, मुह़िब्बाने सरकार रफ़ीक़े मिल्लत की भीड़ लग गई। एक हुजूम था जिसमें मुँह की निकली आवाज़ कानों को सुनाई नहीं दे रही थी, चाहने वालों की भीड़ में ह़ज़रत क़यामगाह पर तशरीफ़ लाए जहाँ पर काफ़ी देर तक लोग दाख़िले सिलसिला होते रहे। लोग सफ़ दर सफ़ आते, अपनी परेशानियाँ बताते, ह़ज़रत उनका ह़ल पेश करते, तावीज़ें देते और पानी पर दम फ़रमाते। यह सिलसिला काफ़ी देर तक चलता रहा।

बाद नमाज़े इशा **"जश्ने मुर्शिदे आज़मे हिन्द"** मुनाक़िद हुआ, जिसमें ह़ज़रत मुफ़्ती ह़नीफ़ साह़ब बरकाती कानपुरी का शानदार ख़िताब हुआ। आख़िर में सरकार रफ़ीक़े मिल्लत ने ख़िताब फ़रमाया। दौराने ख़िताब आपने फ़रमाया कि "यह जश्न जिनकी तरफ़ मन्सूब है यानी ह़ाफ़िज़ व क़ारी मौलाना मुफ़्ती मुर्शिद व मुरब्बी ह़ज़रत मुस्त़फ़ा ह़ैदर ह़सन मियाँ मुर्शिदे आज़मे हिन्द रह़मतुल्लाहि अलैहि अपने असलाफ़े किराम और मुर्शिदाने तरीक़त के सच्चे वारिस होने की ह़ैसियत से बे शुमार कमालात और ख़ूबियों के ह़ामिल थे। आपकी सबसे बड़ी ख़ूबी यह थी कि इतनी बड़ी ख़ानक़ाह के सज्जादा नशीं होने के बावजूद आला ह़ज़रत रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से बे इन्तिहा मुह़ब्बत फ़रमाते थे। आपकी कोई भी ख़ास या आ़म मह़फ़िल उनके ज़िक्र से ख़ाली नहीं हुआ करती थी। इसलिए मैं आ़शिक़ाने मुर्शिदे आज़म को यही ताकीद करता हूँ कि वह मसलके आला ह़ज़रत पर क़ायम रहें कि मसलके आला ह़ज़रत ही राहे निजात है।" ख़िताब के बाद आपके दुआ़इया कलेमात पर जश्न का इख़्तेताम हुआ और एक भारी जमीअ़त दाख़िले सिलसिला हुई।

(3) 29 फ़रवरी 2016 ई० सूरत (गुजरात) का दौराः

29 फ़रवरी बरोज़ पीर **"इस्लाहे मुआ़शरा कॉन्फ्रेंस"** में शिरकत के लिए हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत दामा ज़िल्लहुल आ़ली बज़रिया ट्रेन अह़मदाबाद से सूरत तशरीफ़ ले गए। सूरत रेलवे स्टेशन पर ह़ज़रत का पुरज़ोर इस्तक़बाल हुआ। अहले अक़ीदत अपनी मुह़ब्बतों के साए में आपको क़यामगाह तक ले गए। वक़्त की तंगी के सबब आपने क़यामगाह ही पर नमाज़े असर अदा फ़रमाई। फिर मिलने वालों का न टूटने वाला सिलसिला शुरू हुआ। आप तमाम मुह़िब्बीन से निहायत ख़ुश दिली से मिलते जाते और उनको दुआ़ओं से नवाज़ते जाते। सूरत में भी लोगों की भारी तादाद दाख़िले सिलसिला हुई। अक़ीदत व एह़तराम और मुह़ब्बत व शफ़क़्क़त के ताल मेल और नूरानी छाओं में इशा का वक़्त हुआ। बाद नमाज़े इशा कॉन्फ्रेंस शुरू हुई।

मुफ़्ती मुहम्मद हनीफ़ बरकाती का इस्लाहे मुआशरा के हवाले से ज़बरदस्त ख़िताब हुआ। मुआशरे के क़ाबिले इस्लाह़ पहलुओं को उन्होंने एक एक करके बयान किया, फिर हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद अशरफ़ रतनपुर का भी उम्दा ख़िताब हुआ। आपने भी मुआशरे के अन्दर पाई जाने वाली बुराईयों को बयान फ़रमाया और हर शख़्स को अपने तौर पर मुहासबा करने और ख़ुद को और अपने मुताल्लेक़ीन को बुराईयों से बाज़ रहने और रखने की ताकीद फ़रमाई।

आख़िर में हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत दामा ज़िल्लहु का निहायत कार आमद ख़िताब हुआ, आपने मुसलमानों के बिगड़ते हुए मुआशरे का बहुत बारीक बीनी से जाइज़ा लिया और उस पर अपनी बरहमी (नाराज़गी) का इज़हार फ़रमाया। आपने फ़रमाया कि ''आज मुसलमानों का आलम यह है कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान की तकलीफ़ और दर्द पर ख़ुश होता है, मालदार लोग ग़रीबों की गुरबत को दूर करने के बजाए उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं, वह कई-कई हज़ार की चादरें मज़ार पर तो डाल आते हैं, मगर ख़ुद उनके घर में उनके मुहल्ले में एक ग़रीब मुसलमान की बेटी बग़ैर दुपट्टे के रह रही होती है, मगर उसका ख़्याल नहीं करते। गुरबत की वजह से उसके हाथ पीले होने से रह जाते हैं मगर किसी को इसकी परवाह नहीं होती। मेरे भाईयो! आप पहले अपने आस-पास के माहौल का जाइज़ा लो। जो लोग आपको ज़रूरत मन्द नज़र आयें, उनकी मदद करो। किसी की गुरबत का मज़ाक़ न उड़ाओ। मज़ारों पर चादर चढ़ाने के बजाए उन पर फूल पेश करो और जो पैसे बचें उनसे ग़रीबों की मदद करो। ''ख़िताब के बाद काफ़ी लोग दाख़िले सिलसिला हुए। यह प्रोग्राम सलात व सलाम के बाद आपकी दुआ पर ख़त्म हुआ। ★★★

★ उस्ताद मदरसा क़ासिमुल बरकात मारहरा शरीफ़

पेज न० 51 का बाक़ी। लगभग 6 फ़ीट ऊँचा होना चाहिए, ठण्ड के समय शेड के ऊपर पुवाल ढालने से बकरियाँ ठण्ड से बच जाती हैं। इन्हें ऊँचाई पसन्द है इसलिए ज़मीन से 1 से 2 फ़ीट ऊँचा स्थान बनाऐं।

इनके लिये पानी हमेशा साफ़, स्वच्छ रखें और 24 घण्टे उपलब्ध रखें। बकरों को खाने में हरी घास पसन्द है, इसके अलावा आप इन्हें दे सकते हैं: बबूल के पत्ते, पीपल के पत्ते, रिया के पत्ते। इनके जल्दी बढ़ने के लिए आप इन्हें दे सकते हैं यह मिक्सर:

मक्का -50 kg, खली -10 kg, चोकर -30 kg, गुड़ -7 kg और नमक -1 kg।

बकरी पालन अगर थोड़ी सावधानी से किया जाए तो यह एक ऐसा बिजनेस है कि जिसमें कम लागत में ज़्यादा मुनाफ़ा होता है और सरकार की तरफ़ से बहुत बड़ा के स्कीम दी जाती है।

अपने ख़ुद के तर्जुबे से मैं यह कह सकता हूँ कि बकरी पालना एक बेहद सुकून वाला बिजनेस है। हर एतबार से, चाहे दीनी एतबार से हो या दुनियावी एतबार से हो। ★★★

★ बरकाती गोट फ़ार्म तिव्वारी गाँव शरावस्ती, (यूपी)

बरकाती ख़बरें

शफ़ीक़े मिल्लत हज़रत सय्यद शाह मुर्तज़ा हुसैन ज़ैदी अलैहिर्रह़मा का विसालः

हज़रत सय्यद शाह आले अ़बा ज़ैदी मारहरवी अलैहिर्रह़मा के छोटे साह़बज़ादे, हुज़ूर सय्यदुल उलमा और हुज़ूर अह़सनुल उलमा अलैहिर्रह़मा के भाई हज़रत शफ़ीक़े मिल्लत सय्यद शाह मुर्तज़ा हुसैन ज़ैदी अलैहिर्रह़मा का मेराज की रात 27 रजब 1437 हि० को 2:25 मिनट पर इन्तेक़ाल हो गया।

27 रजब की रात 1:30 मिनट पर आपको कुछ तकलीफ़ मह़सूस हुई कि और हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत साह़ब को तलब फ़रमाकर तकलीफ़ का इज़हार किया। आपने फ़ौरन फ़ैमली डॉक्टर जनाब निहाल अह़मद साह़ब को बुलाया, उन्होंने जिस्म का मुआ़यना करने के बाद कहा कि घबराने की कोई बात नहीं है, दौराने ख़ून, दिल की धड़कन और ग्लूकोज़ वग़ैरह सब नॉरमल है। लेकिन 2:25 मिनट पर आपने हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत को बुलाया और फ़रमाया कि मुझे बिठाओ! आपको बिठाया गया, अपने हाथ से दवा खाई और पानी पिया, पूछा गया कोई तकलीफ़ तो नहीं है, कहा नहीं, मगर फ़ौरन ही एक हिचकी आई और आप अल्लाह को प्यारे हो गए। इन्तेक़ाल की ख़बर ख़ानदान वालों, रिश्तेदारों और मुरीदीन व मुतावस्सेलीन तक पहुँची, सब ग़म से निढ़ाल हो गए, सुबह़ ही से घर पर ज़ियारत करने वालों की भीड़ लग गई। हुज़ूर अमीने मिल्लत साह़ब अलीगढ़ से हुज़ूर शर्फ़े मिल्लत साह़ब कोलकाता से, हुज़ूर फ़ज़ले मिल्लत साह़ब भोपाल से तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अमीने मिल्लत की और हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत ने ग़ुस्ल दिया और कफ़न पहनाया, असर की नमाज़ के बाद गुलशने बरकात में जनाज़ा लाया गया। हुज़ूर अमीने मिल्लत ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई, हुज़ूर शर्फ़े मिल्लत ने ऐलान किया कि सबसे पहले हम चारों भाई जनाज़े को कन्धा देंगे फिर दूसरे अह़बाब। आपका जनाज़ा पहले बड़ी दरगाह लाया गया, फिर दरगाहे बरकातिया में दफ़्न किया गया। जनाज़े में अफ़रादे ख़ानदान, रिश्तेदारों और मुरीदीन व मुतावस्सेलीन के अलावा सादाते बिलग्राम में से हज़रत सय्यद बादशाह मियाँ और अनस मियाँ, बरेली शरीफ़ से हज़रत सुब्ह़ानी मियाँ और अन्जुम मियाँ, जनेटा शरीफ़ से हज़रत डॉ० सय्यद शाहिद मियाँ क़ादरी नौशाही, मैनपुरी से हज़रत अ़ब्दुर्रह़मान उर्फ़ बबलू मियाँ, दायरा-ए-शाह अजमल इलाहाबाद से डॉ० सय्यद सिराजुद्दीन अजमली, दारूल क़लम दिल्ली से अल्लामा यासीन अख़्तर मिस्बाह़ी, डॉ० सज्जाद आ़लम मिस्बाह़ी, मुफ़्ती मुह़म्मद सलीम बरेलवी, मुफ़्ती मुह़म्मद ह़नीफ़ कानपुरी वग़ैरह उलमा व मशाइख़ काफ़ी तादाद में मौजूद थे।

रिपोर्टः मौ० मुह़म्मद अकबर अ़ली बरकाती।

ABIRTI के तलबा की अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के ईनामी मुक़ाबलें में शानदार कार-कर्दगी।

अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के वक़ारूल मुल्क हॉल में 1,2,3 मार्च को **"बज़्मे वक़ार"** 2016 के नाम से एक अदबी व सक़ाफ़्ती प्रोग्राम मुनाक़िद हुआ, जिसमें अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी और अलीगढ़ शहर के मुख़्तलिफ़ इदारों के तलबा के बीच क़िरात, नात, तक़रीर, मुबाहसा, मज़मून निगारी वग़ैरह में मुक़ाबला कराया गया। इस मुक़ाबले में अल-बरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (ABIRTI) के तलबा ने भी हिस्सा लिया और अपनी सलाहियतों का शानदार मुज़ाहरा करते हुए कई मुक़ाबलों में पहला, दूसरा और तीसरा ईनाम जीता।

1 मार्च को मुबाहसा (DEBATE) और बरजस्ता तक़रीर (EXTEMPORE) के मुक़ाबले में तलबा ने हिस्सा लिया। मुबाहसे में मौलाना रज़ाउलहक़ अमजदी ने दूसरा और मौलाना तय्यब रज़ा मिस्बाही ने तीसरा ईनाम हासिल किया और बरजस्ता तक़रीर में मौलाना रियाज़ुद्दीन अमजदी ने पहला, जबकि मौलाना रज़ाउलहक़ अमजदी ने दूसरा ईनाम हासिल किया।

2 मार्च को मज़मून निगारी, क़िरात, नात वग़ैरह का मुक़ाबला हुआ। नात में मौलाना मुहम्मद मोहसिन मिस्बाही ने दूसरा, मौलाना मुहम्मद शहबाज़ मरकज़ी ने तीसरा और मौलाना मुहम्मद अ़ली फ़ैज़ी ने तरग़ीबी ईनाम हासिल किये। क़िरात में मौलाना दिलशाद अहमद मिस्बाही को दूसरा, जबकि मौलाना मुहम्मद अ़ली को तीसरा ईनाम मिला। इस तरह ABIRTI के तलबा ने मजमूई तौर पर 9 ईनामात हासिल किये।

ABIRTI के डायरेक्टर हज़रत सय्यद मुहम्मद अमान मियाँ क़ादरी साहब ने तलबा की इस नुमायाँ कामयाबी पर उन्हें मुबारकबाद दी और दुआओं से नवाज़ा। ★★★

29 मार्च 2016 ई० को AMU के आफ़ताब हॉल में **"महफ़िले रंगे चमन"** के नाम से एक प्रोग्राम हुआ जिसमें उलमा ने मुख़्तलिफ़ मुक़ाबलों में हिस्सा लिया और ईनामात हासिल किए। मौलाना रज़ाउलहक़ अमजदी ने DEBATE में पहला, मौलाना मुहम्मद अ़ली ने क़िरात में दूसरा, मौलाना ज़ैनुल आबिदीन मिस्बाही ने मज़मून निगारी में दूसरा ईनाम जीता, जबकि मौलाना ग़ुलाम रेहान रज़ा ने मज़मून निगारी में तरग़ीबी ईनाम हासिल किया। ★★★

31 मार्च 2016 ई० को AMU के मुहम्मद हबीब हॉल में एक प्रोग्राम मुनाक़िद हुआ। इस प्रोग्राम में मौलाना रज़ाउलहक़ अमजदी ने EXTEMPORE में दूसरा और मौलाना रियाज़ुद्दीन ने ट्रनकोर्ट में दूसरा ईनाम हासिल किया। ★★★

11 अप्रैल बरोज़ जुमा सर शाह सुलेमान हॉल में एक प्रोग्राम हुआ जिसमें मौलाना रज़ाउलहक़, मौलाना मुहम्मद शहबाज़ मरकज़ी और मौलाना मुहम्मद अ़ली फ़ैज़ी ने हिस्सा लिया। मौलाना रज़ाउलहक़ साहब को DEBATE में पहला, मौलाना शहबाज़ अहमद को नात में दूसरा और मौलाना मुहम्मद अ़ली को तरग़ीबी ईनाम मिला। ★★★

15 अप्रैल को रास मसऊद हॉल में एक प्रोग्राम हुआ, जिसमें मौलाना मुहम्मद अ़ली ने क़िरात में

पहला और मौलाना मुहम्मद दिलशाद अहमद ने तीसरा ईनाम हासिल किया और नात में मौलाना मुहम्मद अली को दूसरा ईनाम मिला।

इस तरह हमारे उलमा ने अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी से 20 से ज़्यादा ईनामात जीते।

रिपोटः हाफ़िज़ मुहम्मद राशिद बरकाती। लाईब्रेरियन, ABIRTI, अलीगढ़।

ABIRTI के पहले बैच के उलमा की फ़राग़त और प्लेसमेंटः

अल-बरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्युट, अलीगढ़ में ज़ेरे तालीम उलमा-ए-किराम का पहला बैच (2014—2016) इस साल मई में फ़ारिग़ हो गया और अलहम्दुल्लिाह फ़राग़त से तीन महीने पहले ही सारे उलमा-ए-किराम की उनके शायाने शान नौकरियाँ भी लग गईं।

अल-बरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्युट जमाअ़ते अहले सुन्नत का वह मुन्फ़रिद इदारा है जिसे मदारिसे अहले सुन्नत के फ़ारिग़ुत्तहसील उलमा-ए-किराम को दौर हाज़िर के ज़रूरी उलूम सिखाने और उनकी शख़्सियत साज़ी करके मुकम्मल दाई (मुबल्लिग़) बनाने की गर्ज़ से क़ायम किया गया है। यह इदारा शेख़ुल मशाइख़ हुज़ूर अमीने मिल्लत प्रोफ़ेसर सय्यद शाह मुहम्मद अमीन मियाँ क़ादरी बरकाती दामत बरकातहुमुल क़ुदसिय्या की सरपरस्ती और उनके बड़े शहज़ादे अमाने अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा सय्यद मुहम्मद अमान मियाँ क़ादरी दामा ज़िल्लुहू की सदारत में अपने मक़सद की जानिब रवाँ-दवाँ है। आज से दो साल पहले (2014 ई०) में इस इदारे में तालीम का आग़ाज़ हुआ। रजब 2014 को पहले बैच के लिए दाख़िला टेस्ट हुआ, जिसमें हिन्दुस्तान के अहले सुन्नत के मारूफ़ इदारों से 150 फ़ज़ीलत पास उलमा-ए-किराम ने शिरकत की, उनमें से 18 उलमा इस कोर्स के लिए चुने गए। यह टेस्ट तहरीरी और इंटरव्यू की शक्ल में हुआ था। शव्वाल से पढ़ाई का आग़ाज़ हुआ। अलहम्दुल्लिलाह हमारे उलमा ने दो साला कोर्स को बड़ी ज़िम्मेदारी से मुकम्मल किया और रात दिन एक करके पढ़ाई की जिसके नतीजे में उन्होंने अ़रबी, उर्दू और अंग्रेज़ी ज़बानें ब ख़ूबी बोलना, लिखना और पढ़ना सीख लिया, इसके अलावा क़िरात, समाजी उलूम, सहाफ़त, फ़िक़्हुस्सीरह, फ़िक़्हुल अक़्ल्लियात, तसव्वुफ़, इस्लामी सक़ाफ़त, तारीख़, जुगराफ़िया, तर्जुमा निगारी, तक़ाबुल-ए-अदयान मैनेजमेन्ट, कम्प्यूटर, साइन्स वग़ैरह उलूम भी पढ़ा साथ ही साथ उन्हें इमामत, तदरीस, तक़रीर, दावत व तबलीग़, वरज़िश और खेल कूद के उसूल भी सिखाए गए और उनकी अ़मली मश्क़ कराई गई। उलमा की शख़्सियत साज़ी के लिए दीनी और असरी इदारों के उलमा व दानिशवरान से लैक्चरर्ज कराए गए और मुख़्तलिफ़ अदबी व सक़ाफ़ती प्रोग्रामों में ले जाया गया। इस तरह पूरी मेहनत के साथ उन्होंने कोर्स मुकम्मल किया। उलमा की फ़राग़त से कुछ दिनों पहले हज़रत सय्यद मुहम्मद अमान मियाँ साहब क़िब्ला डायरेक्टर ABIRTI का इरादा हुआ कि इन उलमा की नौकरियाँ भी लगवानी चाहिए, चुनाँचे हज़रत ने इस जानिब कोशिश की और अलहम्दुल्लिलाह अल्लाह के फ़ज़्ल व करम और नबी व आले नबी की बरकतों से इन

हज़रात की शायाने शान नौकरियाँ भी लग गईं। नौकरियों की तफ़सील कुछ इस तरह है। साउथ अफ़्रीक़ा 3, जज़ीरा एन्डमान 1, दिल्ली 1, राजस्थान 1, भोपाल 2, छत्तीसगढ़ 1, गुजरात 1, हर्दा (एम.पी) 1, कलियर शरीफ़ 1, मुबारकपुर 1, सुल्तानपुर 1, मारहरा शरीफ़ 1, और 2 उलमा-ए-किराम अपनी तालीम आगे जारी रखाना चाह रहे थे एक साहब BUMS और दसूरे M.A, इसलिए उन्होंने फ़िलहाल नौकरी करने से मना कर दिया।

क़ारेईने किराम दुआ फ़रमायें कि यह उलमा-ए-किराम जहाँ भी रहें इस्लाम व सुन्नियत के फ़रोग़ के लिए काम करते रहें और इनके ज़रिये दीन व मिल्लत का ख़ूब-ख़ूब काम हो।

रिपोर्टः मौलाना नोमान अहमद अज़हरी। उस्ताद, ABIRTI, अलीगढ़।

तीन रोज़ा उर्से नूरी का आँखों देखा हाल।

ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़ का तीन रोज़ा उर्से नूरी 18 ता 20 अप्रैल 2016 ई० को बड़ी अक़ीदत से मनाया गया, जिसमें सिलसिला-ए-बरकातिया के मुरीदीन व ख़ुलफ़ा के अलावा ख़ानक़ाह शरीफ़ से मुहब्बत करने वाले लोग हज़ारों की तादाद में शरीक हुए और बुज़ुर्गों के फ़ुयूज़ व बरकात से मालामाल हुए। नीचे हम मुख़्तसरन प्रोग्राम की रिपोर्ट लिख रहे हैं।

पहली महफ़िलः 10 रजब 1437 हि० मुताबिक़ 18 अप्रैल 2016 ई० बरोज़ दो शम्बा को सुबह सवेरे साहिबे सज्जादा हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत, हज़रत सय्यद मुहम्मद अमान मियाँ क़ादरी और दीगर अफ़राद ख़ानदान ख़ानक़ाह शरीफ़ में दाख़िल हुए, जहाँ पहले से ही ज़ायरीन बैठे हुए थे। हज़रत के पहुँचते ही महफ़िल का आग़ाज़ क़ुरआन पाक की तिलावत से हुआ, उसके बाद हम्द व नात का सिलसिला चला, आख़िर में इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ बरेलवी अलैहिर्रहमा का लिखा हुआ क़सीदा नूरिया पढ़ा गया, उसके बाद सलात व सलाम हुआ और हुज़ूर रफ़ीके मिल्लत की दुआ पर महफ़िल ख़त्म हुई।

दूसरी महफ़िलः उसी दिन सुबह के आठ बजे ख़ानक़ाह शरीफ़ में दूसरी महफ़िल सजाई गई जिसका आग़ाज़ क़ारी मुहम्मद फ़ैज़ान बरकाती की तिलावत से हुआ, उसके बाद हम्द व नात व मन्क़बत पढ़ी गई, आख़िर में हुज़ूर रफ़ीक़ मिल्लत साहब की मुख़्तसर तक़रीर हुई जिसमें उन्होंने मज़ारात पर हाज़िरी के आदाब बताए, फिर सलाम हुआ और हज़रत की दुआ पर महफ़िल ख़त्म हुई।

तीसरी महफ़िलः 10 रजब को इशा की नमाज़ के बाद गुलशने बरकात के लम्बे चौड़े मैदान में ख़ानक़ाहे बरकातिया की क़दीमी रिवायती मुशायरा हुआ, जिसमें हिन्दुस्तान के मशहूर व मारूफ़ शायरों ने हिस्सा लिया और अपना-अपना कलाम पेश किया। मुशायरा की सदारत हुज़ूर अशरफ़े मिल्लत दामा ज़िल्लहू के ज़िम्मा थी, मगर आपने यह मन्सब जनाब जमील अफ़ग़ानी साहब को सोंपते हुए फ़रमाया कि हमारे बुज़ुर्ग यहाँ के मुशायरे की सदारत उनके उस्तादे मुहतरम को सोंपते थे, लिहाज़ा मैं इस रिवायत को जारी रखते हुए जनाब जमील साहब के हवाले करता हूँ। मुशायरे के नाज़िम क़ारी मुहम्मद क़ासिम हबीबी कानपुरी साहब थे। मुशायरे का आग़ाज़ तिलावते

कलामुल्लाह से हुआ, फिर नात पढ़ी गई, इसके बाद शोअरा ने एक-एक करके नात व मन्क़बत पेश कीं। मुशायरा सलात व सलाम के बाद हुज़ूर अमीने मिल्लत की दुआ पर ख़त्म हुआ।

चौथी महफ़िलः 11 रजब बरोज़ मंगल सुबह 9 बजे गुलशने बरकात में तिलावते कलामुल्लाह से चौथा प्रोग्राम शुरू हुआ। तिलावत के बाद नात व मन्क़बत का सिलसिला चलता रहा, फिर उलमा-ए-किराम के बयानात हुए, उसके बाद हुज़ूर अमीने मिल्लत के नासिहाना कलेमात और दुआ पर प्रोग्राम ख़त्म हुआ।

उसी दिन बाद नमाज़े असर बड़ी दरगाह से सन्दल शरीफ़ का जुलूस निकला जो बड़ी दरगाह से निकल कर क़स्बा में गश्त करता हुआ छोटी दरगाह तक पहुँचा। इस जुलूस की क़यादत हज़रत सय्यद मुहम्मद अमान मियाँ क़ादरी फ़रमा रहे थे।

बाद नमाज़ मग़रिब ABIRTI के फ़ारिग़ीन ने फ़ातिहा का प्रोग्राम रखा, जिसमें हुज़ूर अमीने मिल्लत, हुज़ूर शर्फ़े मिललत, हुज़ूर रफ़ीक़ मिल्लत, हज़रत सय्यद अमान मियाँ साहब, हज़रत उस्मान मियाँ साहब, डॉ० अहमद मुजतबा सिद्दीक़ी साहब, डॉ० फ़हीम उस्मान सिद्दीक़ी साहब समेत काफ़ी तादाद में लोग शरीक हुए। हुज़ूर शर्फ़े मिल्लत ने उलमा को ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि मैं आप लोगों को दो नसीहतें करता हूँ, अगर इन पर अमल कर लेंगे तो इंशाअल्लाह ज़िन्दगी में कभी नाकाम नहीं होंगे। **एक यह कि आपने जो कुछ सीखा है उसमें हर दिन इज़ाफ़ा करते रहें, दूसरी यह है कि अपने अख़्लाक़ का दायरा बढ़ाते रहीए, इंशाअल्लाह दुनिया आपके आगे समेट कर चली आयेगी।** इस मौक़े पर हुज़ूर अमीने मिल्लत और रफ़ीक़े मिल्लत ने भी उलमा को नसीहतें फ़रमाई और हुज़ूर अमीने मिल्लत ने फ़ातिहा पढ़कर बुज़ुर्गों को इसाले सवाब किया और सबके लिये दुआ फ़रमाई।

पाँचवी महफ़िलः ख़ानक़ाहे बरकातिया की ख़रक़ा पोशी की रात वाली महफ़िल बड़ी बा-बरकत होती है। इसमें साहिबे सज्जादा अपने बुज़ुर्गों के तबर्रुकात को पहनकर मिम्बर पर तशरीफ़ लाते हैं और लोगों से मुसाफ़ा व दुआ करते हैं। रिवायत के मुताबिक़ 11 रजब को बाद नमाज़ इशा महफ़िल मुनाक़िद हुई, जिसका आग़ाज़ तिलावत कलामुल्लाह से हुआ, फिर नात व मन्क़बत पढ़ी गई और उलमा-ए-किराम के बयानात हुए। इसी रात ख़ानक़ाहे बरकातिया की सरपरस्ती में चलने वाले इदारों से फ़ारिग़ होने वाले उलमा की दस्तार बन्दी होनी थी, इसलिए भीड़ बहुत ज़्यादा थी। मशाइख़े मारहरा के मुक़द्दस हाथों 46 फ़ारिग़ीन हुफ़्फ़ाज़ व क़ुर्रा व उलमा की दस्तार बन्दी हुई। इस साल जामिया क़ासिमुल बरकात, जामिया अहसनुल बरकात और अलबरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट से तरतीब वार 8 हुफ़्फ़ाज़, 23 क़ुर्रा और 17 उलमा-ए-किराम फ़ारिग़ हुए। इस महफ़िल में हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत ने जनाब वक़ार अहमद अज़ीज़ी साहब को ख़िलाफ़त से भी नवाज़ा। यह महफ़िल सलात व सलाम और हुज़ूर अमीने मिल्लत की दुआ पर ख़त्म हुई।

छटी और आख़िरी महफ़िलः 12 रजब बरोज़ बुध को उर्से नूरी की आख़िरी मजलिस सुबह 9 बजे मुनाक़िद हुई, पहले तिलावत हुई फिर नात व मन्क़बत

का सिलसिला चलता रहा, उसके बाद उलमा-ए-किराम के बयानात हुए, दोपहर १ बजे कुल शरीफ़ हुई जिसमें हुज़ूर अमीने मिल्लत ने ऐसी दुआ़ फ़रमाई कि मह़फ़िल में समा बंध गया। आपने पूरी दुनिया में अमन व शान्ति के लिये दुआ़ फ़रमाई और लोगों का शुक्रिया अदा किया, फिर ख़ानक़ाहे बरकातिया के तबर्रूकात की ज़ियारत कराई गई। प्रोग्राम के बाद लोगों में लंगर तक़सीम हुआ, लोग खाना खाकर अपने-अपने घरों को रवाना हो गए।

रिपोर्टः मौ० मुह़म्मद अकबर अ़ली बरकाती।

अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी में मह़फ़िले ग़रीब नवाज़।

1 मई 2016 बरोज़ इतवार बाद नमाज़े मग़रिब अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के एक क़दीमी हॉल वक़ारूल मुल्क हॉल की मस्जिद में **"बज़्मे ग़रीब नवाज़"** के नाम से एक प्रोग्राम हुआ, जिसमें मारहरा शरीफ़ के उन तमाम तलबा को दावते ख़ास दी गई जो ह़ाल में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के मुख़्तलिफ़ शोबों में ज़ेरे तालीम हैं। यह तमाम तलबा अलग-अलग हॉलों में रहते हैं। मह़फ़िले पाक की इब्तिदा जनाब मौलाना क़ारी फ़रीद साह़ब ने तिलावते कलाम पाक से की, उसके बाद जनाब मौलाना मुह़म्मद राशिद और मौलाना मुह़म्मद फ़ैज़ान साह़बान ने नात व मन्क़बत पढ़ी। इस बज़्म के ख़ुसूसी ख़तीब हज़रत मौलाना नूर आ़लम मिस्बाह़ी साह़ब ने बहुत ईमान अफ़रोज़ तक़रीर फ़रमाई। हज़रत ने सीरते रसूल और सीरते ग़रीब नवाज़ की रौशनी में अक़ाईद अहले सुन्नत व जमाअ़त पर दलाइल के साथ गुफ़्तगू फ़रमाई।

ख़िताबत के बाद सवाल व जवाब का दौर शुरू हुआ और तलबा ने अपने मसाइल का ह़ल जाना।

फ़ातिह़ा ख़्वानी के बाद मह़फ़िले पाक का इख़्तिताम हुआ। अलबरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट की जानिब से तमाम हाज़िरीन को मैग्ज़ीन **"पयामे बरकात"** बतौर तोह़फ़ा पेश की गई। मह़फ़िल में शरीक होने वाले चन्द तलबा यह हैं।

1. मुह़म्मद अनीस (PHD), 2. अ़ब्दुल नबी (M.A), 3. मुह़म्मद इक़्तदार (B. Tech), 4. मुह़म्मद इमादुद्दीन (Diploma in Radiology), 5. मुह़म्मद अरशद (Diploma in Engineering) 6. मुह़म्मद काशिफ़ (B.A)

रिपोर्टः शान मुह़म्मद बरकाती।
V.M Hall, AMU, अलीगढ़।

तमाम आलमे इस्लाम को "पयामे बरकात" की तरफ़ से
ईदुल अज़्हा मुबारक हो

क़ारईने किराम तवज्जोह फ़रमायें

क़ारईने किराम से गुज़ारिश है कि मैगज़ीन से मुताल्लिक़ किसी भी क़िस्म की शिकायत, सलाह़ या मालूमात के लिए सिर्फ नीचे दिए गए वक़्त में हमें फ़ोन करें।

सम्पर्क करने का समयः
सुबह़ः 9 बजे से 12 बजे तक।
शामः 3 बजे से 5 बजे तक।
इतवारः 10 बजे से 2 बजे तक।
मोबाइल और वाट्सप नम्बरः 07607207280

नोटः पयामे बरकात के पुराने शुमारे और ख़ानक़ाहे बरकातिया के मशाइख़ के ह़ालात नेट पर पढ़ने के लिए हमारा ब्लॉग देखें।

payamebarkaat.blogspot.in

मुश्किल अलफ़ाज़ की तशरीह

इस शुमारे के जिन मज़ामीन में मुश्किल अलफ़ाज़ आए हैं उनके मआ़नी और तशरीहात को यहाँ लिखा जा रहा है।

सिपास नामाः तह़रीरी इज़्हारे शुक्र।

मुसर्रत अंगेज़ः ख़ुशी बढ़ाने वाला।

आरास्ताः मुज़य्यन होना, सजा संवरा होना।

असलाफ़ः सल्फ़ की जमा, अगले वक़्तों के लोग, बुज़ुर्गाने दीन।

मजलिसे शूराः सलाह व मशवरे की मजलिस

ज़ख़ीमः मोटा, बहुत बड़ा।

किश्ते ज़ारः हरे भरे खेत, मुराद जामिया अशरफ़िया।

वह़ीः ख़ुदाई पैग़ाम, ख़ुदा के वह पैग़ाम जो नबियों पर उतरते थे।

मुह़ीतः होना, घेर लेना।

अलिम बिज़्ज़ातः अपने आप जानने वाला मुराद अल्लाह पाक।

गुयूबे ख़म्साः पाँच छुपी बातें।

शम्माः थोड़ी सी चीज़।

ह़ाजत रवाईः ज़रूरत पूरी कर देना।

बदगोः बुरा कहने वाला, गाली गलोज देने वाला।

दिल बर्दाश्ताः दिल हट जाना, ग़मगीन होना।

मुअ़ज़्ज़ः इज़्ज़तदार।

अ़लम्बरदारः झण्डा उठाकर चलने वाला

इस्लाह़ातः दुरूस्तियाँ, तब्दीलियाँ।

सैराबः पानी से भरा हुआ, लबरेज़।

तीनों क़ुलः सूरह़ इख़्लास, सूरह़ फ़लक़, और सूरह नास।

मुवर्रिख़ः तारीख़ लिखने वाला

मुअ़ज़्ज़िनः अज़ान देने वाला, बांगी।

मुआ़लिजः इलाज करने वाला, ह़कीम, डॉक्टर।

तलअ़तः नूर, रौशनी।

रह़लतः इन्तक़ाल, कूच, रवानगी।

उजरतः काम का बदला, मज़दूरी।

निगहबानीः ह़िफ़ाज़त, निगरानी।

गम़्नाकः मायूस करने वाला।

नक़ीबः प्रचारक, तर्जुमान।

ख़ुल्क़ः आ़दत, ख़ुश मिज़ाजी।

ख़ूगरः आदी।

शेडः छप्पर, साएबान।

मेयारः कसौटी, अन्दाज़ा।

साअ़ और मुदः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में अनाज नापने के दो बरतन।

मुबारकबाद

मौलाना रज़ाउलह़क़ बरकाती साह़ब का जामिया मिल्लिया इस्लामिया, (दिल्ली) के M.A शोबा-ए-उर्दू में दाख़िला होने पर मुबारकबाद और दुआ़एँ। अल्लाह तआ़ला इनके इल्म में मज़ीद इज़ाफ़ा फ़रमाए। अमीन। (इदारा)

नोटः मौलाना रज़ाउलह़क़ साह़ब ABIRTI के पहले बैच (2014–2016) के फ़ारिग़ हैं।